

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180885

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—44—69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. *H82/S62 Ba* Accession No. *H264*

Author *डा. कृष्णपीयूष*

Title *बा २ वृत्ति शास्त्र . 1967.*

This book should be returned on or before the date
last marked below. */*



हिन्दी शेक्सपियर

षारहवों शत

शेक्सपियर

अनुवादक: 37० रांगेय राघव

आत्माराम एन्ड संस

प्रकाशक तथा पुरतक-विक्रेता

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

गजपाल प्रिण्टर्स मंम, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६



मू ल य	:	दो रुपये
~~प्रथम संस्करण~~	:	~~नवम्बर, १९५७~~
प्रथम संस्करण	:	नवम्बर, १९५७
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मुद्रक	:	हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली



शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-अॉन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे ज्ञायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, अॉथेलो, मैकबेथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एंडू अब्राउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

‘बारहवीं रात’ एक सुखांत नाटक है। इसका लेखन काल अंतस्साक्ष्य और बहिस्साक्ष्य की परीक्षा के उपरांत १६०१ ई० माना जाता है। इस नाटक में दो कथाएँ हैं—एक प्रेम की कथा, दूसरी है हास्य कथा। प्रथम का स्रोत इन ग्रंथों से माना जाता है—एपोलोनियस और सिल्ला; गिल’ इन्गन्नति; तथा इन्गन्नि। बेंडेलो के उपन्यासों के संग्रह में इसका प्रारंभिक रूप माना जाता है। बेंडेलो की इतालवी भाषा की रचना से यह कुछ परिवर्तन के साथ बैलेफोरेस्ट द्वारा फ्रेञ्च में उतर आई। किंतु इसकी हास्यकथा शेक्सपियर की अपनी ही है। वह मौलिक है। इन हास्यपात्रों का सृजन कवि की अपनी प्रतिभा का परिणाम है।

‘बारहवीं रात’ का दूसरा नाम और है—‘जैसी तुम्हारी इच्छा हो’। उन दिनों के हल्की चीजों के देखने के शौकीन दर्शकों के लिये यह नाम काफ़ी दिलचस्प था। बड़े दिन यानी क्रिसमस के बारह दिन बाद, अर्थात् ६ जनवरी को इंग्लैंड में एक उत्सव हुआ करता था, जो क्रिसमस के बाद काफ़ी महत्त्व रखता था। उस दिन कई खेल भी होते थे। सब मित्र और परिवार के लोग इकट्ठे होते थे और केक काटा जाता था। उसे बाँटने पर जिस पुरुष और स्त्री के केक के टुकड़ों में मटर और सेम पाये जाते थे उन्हें उस दिन राजा और रानी मान लिया जाता था। इस नाटक में भी तीन पति और तीन पत्नियाँ बनती हैं। शायद इसीलिये इसका नाम बारहवीं रात रखा गया है। दूसरा नाम ‘जैसा तुम चाहो’ से बहुत मिलता है या इसका अर्थ है कि न यह पूरी तरह सुखांत नाटक है, न रोमांस ही है, न दुःखांत ही है, न

है मास्क । वही मान लो—जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

१६०७ ई० में 'जैसी तुम्हारी इच्छा हो' नाम से मास्टन की भी एक कॉमेडी छपी थी ।

नाटक का स्थान इलिरिया है, जो एक काल्पनिक स्थान है । वैसे ही जैसे शेक्सपियर के एक अन्य नाटक—'द विटर्जेटेल' का स्थान 'बोहीमिया' है ।

चरित्र-चित्रण के दृष्टिकोण से इसमें वायोला, मालवोलियो और सर टोबी—तीन पात्र ऐसे हैं जिनकी याद रह जाती है । विदूषक का पार्ट कोई विशेष नहीं है । किंतु संपूर्ण दृष्टि से, व्यक्तिगत रूप से मुझे यह नाटक, गहरा नहीं लगा, क्योंकि वायोला का अंतर्द्वन्द्व जो इस कथा का प्राण है, मुखर नहीं हो सका है ।

कट्टर विशुद्धतावाद (Puritanism) का आंदोलन उन दिनों शेक्सपियर के आक्रमण का विषय बना है । मालवोलियो एक विशुद्धतावादी पात्र है, जिसमें ढोंग और अहंकार को दिखाया गया है । विशुद्धतावादी आंदोलन नाटक-घरों और आनंद के साधनों पर सीधा प्रहार कर रहा था । शेक्सपियर के युग का अंत इन्हीं कट्टरपंथी ईसाइयों के विकास में हुआ था, जिन्होंने नाटक को काफ़ी क्षति पहुँचाई थी । किंतु इस नाटक के अतिरिक्त शेक्सपियर में अन्यत्र इन लोगों पर ऐसे प्रहार नहीं मिलते । वैसे शेक्सपियर में इनके प्रति कोई बुरी कट्टर भावना नहीं है, वह केवल दिल्लगी करता है, सहिष्णुता से काम लेता है । किंतु वैसे यह भी निश्चय से नहीं कहा जा सकता । शेक्सपियर तो जैसा पात्र होता है, उसके अनुरूप ही उससे बात कराता है और इसीलिये उसकी कला इतनी गहरी उतर गई है क्योंकि वह तो मानव-स्वभाव का पारखी है । सर ऐन्ड्रू भी अनेक बातें

कहता है, पर वह सब उसी का चरित्र है, शेक्सपियर का अपना कोई मत वहाँ नहीं है।

शेक्सपियर में जो असाधारण घटनाएँ मिलती हैं, जो उसकी नाटकीयता का प्राण हैं, वह यहाँ भी हैं। यहाँ भी वायोला और सैबैस्टियन—बहन और भाई एकदम इतने मिलते हैं कि एक ही सूरत, ऊँचाई, चौड़ाई, आवाज, यहाँ तक कि कपड़े भी एक-से ! परंतु स्त्री के प्रति प्रेमभाव बड़ा विचित्र लगता है। वैसे है बड़े संघर्ष का क्षण, किंतु फिर भी उसी प्रेम का अंत जब ओलीविया की भूल में बदल जाता है, तब हँसी आती है, और ओलीविया का चरित्र गांभीर्य्य लुप्त हो जाता है। ऐसे ड्यूक का भी हाल होता है। एक स्त्री के पुरुष बन जाने से जो भूलें होती हैं, वह सब मज़ाक इस नाटक में प्रगट होते हैं।

किंतु कहीं-कहीं महान नाटककार ने ऐसे अमर वाक्य लिखे हैं कि पूरा नाटक उठ जाता है, और इसीलिये इसे इतना श्रेष्ठ नाटक माना जाता है। स्त्री के प्रति उसकी कलम बहुत सहृदयता दिखाती है, परंतु स्त्री के कुछ रूप उसे पसंद नहीं भी हैं। उनकी वह आलोचना भी करता है। संपूर्ण नाटक में कोई भी पात्र या पात्री बहुत ऊँचाई को नहीं पाती। ओलीविया का प्रेम तो चपलता है, परन्तु मित्र प्रेमी एन्टोनियो और सरला वायोला ही इसमें अपनी छाप छोड़ते हैं।

मैंने नाटक के अनुवाद में वाक्चातुर्य्य के प्रयोगों का प्रभाव देने के लिये कहीं-कहीं हिंदी के ही मुहावरों का प्रयोग किया है, वर्ना गति में खटक पड़ती थी। आशा है पाठकों को मेरा परिश्रम लाभकर होगा।

—रंगेय राघव



पात्र-परिचय

ग्रॉरसिनो	: इलिरिया का ड्यूक
संबैस्टियन	: वायोला का भाई
एन्टोनियो	: समुद्र के जहाज का कप्तान, संबैस्टियन का मित्र
एक कप्तान	: वायोला का मित्र
वैलैन्टाइन क्वरियो	} ड्यूक के कुलीन अनुचर
सर टोबी बेलच	: ओलीविया का चाचा
सर ऐण्ड्रू ऐंग्यूचीक	:
मालवोलियो	: ओलीविया का सेवक
क्विबियन फेस्टे, विदूषक	} ओलीविया के सेवक
ओलीविया	: एक धनी काउण्टेस
वायोला	: संबैस्टियन की बहिन
मेरिया	: ओलीविया की अनुचरी

[अन्य : लार्ड, जहाजी, अफसर, संगीतज्ञ और सेवक]

पहला अंक

दृश्य १

[ड्यूक के महल का कमरा]

[ड्यूक, क्यूरियो, अन्य लार्ड और संगीतज्ञों का प्रवेश]

ड्यूक : यदि संगीत ही प्रेम का पोषण करने वाला तत्त्व है, तो मुझे उसकी ऐसी अति प्रदान करो, इतना अधिक दो, कि मुझे उसका अजीर्ण हो जाये, उसकी भूख अपनी अतितृप्ति से सदा के लिये बुझ जाये। फिर वही तान ! उसकी लय ने मेरे रोम-रोम को फिर भ्रुकृत कर दिया। मेरे कानों में वह माधुरी लहरा कर गूँज गई जैसे ढेर-ढेर फूलों पर विभोर गंध भूम गई हो ! रोक दो। संगीत बदल गया है। अब इसमें वह मिठास नहीं, जो पहले थी। अरे ओ प्रेम के प्राण ! संगीत ! तू भी कितना जीवंत है, कितना सत्वर सदैव नवीन है ! ओ सर्वव्यापी ! और वैसे कुछ भी नहीं ? देखने में कोई वस्तु कैसी भी बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, तेरी तुलना में तो कुछ भी नहीं बैठता ! तू अन्यों से कितना ऊपर है ! प्रेम से स्फुटित कल्पना ही एक ऐसी आसक्ति है, ऐसी व्याप्त प्राप्ति है, जो तुझसे तुलनीय हो सकती है।

क्यूरियो : श्रीमान् ! क्या आप शिकार पर जायेंगे ?

ड्यूक : ऐं ! क्या कहा क्यूरियो ?

क्यूरियो : श्रीमान् ! शिकार।'

१. शिकार के लिये शेक्सपियर hart शब्द लिखता है यहाँ। ड्यूक उत्तर देता है तो एक ही उच्चारण के कारण (शिकार) hart को हृदय (heart)

ड्यूक : क्यों क्यूरियो ! क्या कहते हो ! मेरा हृदय सचमुच कुलीन है। आह ! जब मेरी आँखों ने पहली बार ओलीविया को देखा, मुझे लगा वह अपने चारों ओर की वायु तक को पवित्र कर रही थी। मैं तो उसी क्षण शिकार हो गया। और मेरी इच्छाएँ लोलुप शिकारी कुत्तों की तरह तभी से मेरे हृदय का पीछा करने लगीं।

[बैलेंटाइन का प्रवेश]

क्यों ? क्या उसका कोई संवाद आया है ?

बैलेंटाइन : श्रीमान् ! क्रोध न करें। मैं उनके पास तक नहीं पहुँच सका। उनकी नौकरानी ने मुझे संदेश दिया है कि सात वर्ष भी उनकी वेदना को दूर नहीं कर सकेंगे। वे अपना मुख ढँके रहेंगी जैसे कि गिरजे की ब्रह्मचारिणी ढँके रहती है। नित्य वे आँसुओं से मुँह धोएँगी, श्रीमान् ! अपने भाई की मौत ने उन्हें ऐसा भयानक दुख पहुँचाया है, और वे उस वेदना को भूलना ही नहीं चाहतीं, यह उनका दृढ़ निश्चय-सा हो गया है।

ड्यूक : आह ! जिस स्त्री के विशाल हृदय में अपने भाई के लिये इतना प्रेम है, तो उस व्यक्ति को न जाने कितना प्रेम मिलेगा, जो काम के बाण से अन्य सबके उस हृदय में मारे जाने पर स्थान बनायेगा ! जब मस्तिष्क और हृदय जैसे सिंहासनों पर पूर्ण प्रेम ही सम्राट् की भाँति आसीन हो जायेगा। तुम चलो ! पथ दिखाओ ! फूलों की सुन्दर क्यारियों की ओर ! कुंजों की सुषमा और सुगंधि में प्रेम के भाव और भी समृद्ध हो जाते हैं।

[प्रस्थान]

के रूप में पहले प्रगट करता है। हिन्दी में ऐसे शब्द नहीं जो हृदय और शिकार के लिये एक ही हों। अतः हम यहाँ दो अर्थों का सौंदर्य नहीं दे सकते।

दृश्य २

[समुद्र तीर]

[बायोला, कप्तान और जहाज़ियों का प्रवेश]

बायोला : मित्रो ! यह कौन-सा देश है ?

कप्तान : श्रीमती ! यह इलिरिया है ।

बायोला : इलिरिया में मुझे क्या करना है ? मेरा भाई तो एलीशियम' में है । मैं अकेली रह गई हूँ । ऐसा भी तो लेकिन हो सकता है कि वे डूबे नहीं हैं ! क्यों जहाज़ियो ! बोलते क्यों नहीं ?

कप्तान : यही क्या कम है कि तुम किसी प्रकार जीवित रह गई हो ? डूबी नहीं हो !

बायोला : हाय ! मेरे भाई ! पर ऐसा भाई का भी हाल हो तो सकता है ! नहीं हो सकता ?

कप्तान : तुम ठीक कहती हो श्रीमती ! इस सौभाग्य में आशा का संतोष क्या थोड़ा है ? मैं तुम्हें निश्चयपूर्वक बता दूँ कि तुमने अपने भाई को स्वरक्षा करते हुए देखा था । वह वीर था और प्राणपण से चेष्टा करता रहा था । जब हमारा जहाज़ टूट गया और तुम्हें और इन थोड़े-से लोगों को बचाया जा रहा था, उस जर्जर छोटी नाव को भयानक लहरों पर खेया जा रहा था, तुम्हारा वीर भाई खतरे में तनिक भी न घबरा कर, बढ़ा और उसने पानी पर बहता मस्तूल पकड़ लिया, पर उसके बाद मुझे वह नहीं दिखा । लहरें उसे बहा ले गईं जैसे डोलफ़िन की पीठ पर ओरियन बह गया था ।^१ बस मैं इतना ही देख सका ।

बायोला : इस सुखवह संदेश के लिये यह सोना लो (बेती है) । मेरा बच

१. स्वर्ग । २. ओरियन : प्राचीन काल का एक संगीतज्ञ । डोलफ़िन उसका रक्षक । एक पुरानी कथा का संदर्भ ।

जाना ही मेरे भाई के बच जाने की आशा दिला रहा है। क्या तुम इस देश को जानते हो ?

कप्तान : श्रीमती ! खूब जानता हूँ। मैं जहाँ पैदा हुआ, जहाँ पला, वह जगह यहाँ से तीन घंटे के सफ़र के फासले पर है।

वायोला : उस जगह किसका शासन है ?

कप्तान : एक ड्यूक हैं। उनका हृदय वैसा ही अच्छा है जैसा उनका नाम।

वायोला : क्या नाम है उनका ?

कप्तान : ऑरसिनो !

वायोला : ऑरसिनो ! यह नाम तो मैंने अपने पिता के मुँह से सुना है। तब तो वे क्वारे थे।

कप्तान : क्वारे तो वे अब भी हैं। या कहिये, हाल तक तो थे। मुझे यहाँ से गये एक महीना ही तो हुआ है। पर तब यह सुनाई पड़ता था, तुम तो जानती ही हो कि जो बड़े आदमी करते हैं, छोटे लोग उसकी कानाफूँसी किया करते हैं, कि वे सुंदरी ओलीविया के प्रेम में पड़ गये थे।

वायोला : वह कौन है ?

कप्तान : एक उदार और पवित्र कुमारी है, एक काउण्ट की पुत्री। पिता को मरे साल भर हुआ। कन्या को उसके भाई के आश्रय में छोड़ गये थे। वह भी कुछ समय बाद चल बसा। कहते हैं, भाई की मौत के दुख से वह कुमारी ऐसी पीड़ित हो गई है कि उसने साथ रहना तो क्या, मनुष्यों को देखना भी छोड़ दिया है।

वायोला : काश मैं उनकी सेविका बन पाती और तब तक संसार को मुख न दिखाती, जब तक मेरी परिस्थिति सुधर न जाये। मेरी क्या हालत हो गई है !

कप्तान : ऐसा होना कठिन है, क्योंकि वह कोई अर्जी न लेगी, और ड्यूक तक की तो वह सुनती नहीं आजकल !

बायोला : कप्तान ! तुम्हारा व्यवहार इतना अच्छा है कि मैं तुम पर विश्वास करूँगी । हालाँकि मैं जानती हूँ कि ऊपरी भोलेपन के नीचे भयानक कुटिलता भी छिपी रहती है, पर तुम्हें देखकर तो यही लगता है कि तुम जितने ऊपर से देखने में अच्छे और सच्चे हो, वैसे ही भीतर भी अवश्य होंगे । मैं प्रार्थना करती हूँ, मेरी सहायता करो ! तुम इस सत्य को छिपा जाओ कि मैं एक लड़की हूँ । मुझे ऐसे वस्त्र पहनाकर मेरा वेश बदल डालो, जैसे मैं चाहती हूँ ताकि मेरी मनोकामना पूर्ण हो सके ! मैं तुम्हें इसका बड़ा पुरस्कार दूँगी । मैं कुलीन आँसुओं की सेवा में लगूँगी और तुम परिचय करा देना, पुरुषरूप में नौकर रखवा देना मुझे । तुम्हारा इसमें कोई नुकसान नहीं होगा, क्योंकि मैं तो उन्हें खूब गाना सुनाकर खुश कर दूँगी, और वे मुझे अपनी नौकरी में रखने लायक ही पायेंगे । आगे क्या होगा, यह तो भविष्य के हाथ में है, बस तुम मेरे रहस्य की रक्षा करना और बाकी सब मेरी बुद्धि में छोड़ दो ।

कप्तान : तो फिर ड्यूक के यहाँ तुम नपुंसक बनकर नौकरी करना । मैं तुम्हारे साथ गूंगा बन कर रहूँगा । यदि मैं तुम्हारे रहस्य को प्रगट कर दूँ तो अंधा हो जाऊँ ।

बायोला : धन्यवाद ! सौ-सौ धन्यवाद ! चलो मुझे ले चलो ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[ओलीबिया के घर का कमरा]

[सर टोबी बेल्लच और मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : भाई की मौत का ऐसा मातम मना कर मेरी भतीजी क्या मुसीबत खड़ी करना चाहती है। इतना दुख तो जिंदगी को ले बैठेगा !

मेरिया : सच कहती हूँ सर टोबी ! आप जल्दी लौट आया करिये रात को ! आपकी भतीजी, मेरी मालकिन, आपके देर से लौटने का बड़ा रंज करती हैं।

सर टो० : अरे जिसे हमेशा से टोका जाता रहा है, उसे ही टोकना है, तो फिर उसे भी मन भर लेने दो !

मेरिया : वह तो ठीक है, लेकिन आपको हृद के भीतर तो रहना चाहिये !

सर टो० : भीतर रहना चाहिये। किसके ! मैं तो बस इन कपड़ों के भीतर रहता हूँ जो पहनता हूँ। और शराब पीने के वक्त यह ठीक रहते हैं। मेरे जूते और कपड़े, मैं समझता हूँ, बिल्कुल ठीक हैं। अगर नहीं हैं, तो मैं इन्हें फीतों से टाँग दूँगा।

मेरिया : यह बेशुमार शराब पीना तो आपको बरबाद ही कर देगा। श्रीमती इसके बारे में कल कहती थी। आप उनके लिये एक मूर्ख सामंत को भी तो लाये थे, उनकी शादी के लिये ?

सर टो० : कौन ? सर ऐन्ड्रू ऐंग्यूचीक !

मेरिया : जी हाँ वही !

सर टो० : वह शायद जितना लम्बा है, उतना सारी इलिरिया में न होगा।

मेरिया : तो उसका इस मामले से क्या ताल्लुक हुआ ?

सर टो० : क्यों ? तीन हजार ड्यूकैट' की उसकी सालाना आमदनी है।

मेरिया : हो सकता है, पर साल भर और रहेगी यह आमदनी। जैसा वह बेवकूफ और खर्चीला है, उससे तो यही लगता है।

सर टो० : धिक्कार है जो उसके लिये ऐसा कहती हो ! वह ऐसा उम्दा बाजा बजाता है। तीन-चार भाषाओं में पारंगत है और प्रकृति-दत्त सारे गुण उसमें विद्यमान हैं।

मेरिया : प्रकृति के ही दिये हैं। उसके अलावा तो वह बेवकूफ और भग-डालू है। अगर उसमें भगड़े के वक्त कायरता का गुण न होता तो लोग कहते हैं कि उसे इनाम में एक कब्र जल्दी ही मिल जाती।

सर टो० : मुझे पहले यह बताओ कि वे लोग कौन हैं जो उसके बारे में ऐसा कहते हैं, वे लुच्चे हैं, बेकार बदनाम करते हैं।

मेरिया : वह तो और भी कहते हैं कि आप और वह दोनों हर रात खूब शराब उड़ाते हैं।

सर टो० : वह तो हम इसलिये पीते हैं कि मेरी भतीजी की कल्याण-कामना करते हैं।^१ और जब मेरे गले में छेद है, मैं पियूंगा और इलिरिया में ही पियूंगा। जो मेरी भतीजी के स्वास्थ्य के लिये नहीं पियेगा, वह कमीना और नीच है। इतना पीना चाहिये कि सिर घूम जाये। अभी क्या समझती है तू ! ले देख ! वे स्वयं आ भी पहुँचे। सर एन्ड्रू एग्यूचीक।

[सर एन्ड्रू एग्यूचीक का प्रवेश]

सर ए० : सर टोबी बैल्च ! कहिये ! मिजाज तो अच्छे हैं सर टोबी बैल्च !

सर टो० : महरबानी है। सर एन्ड्रू !

१. सिक्के। २. यूरोप में शराब का वीर शुरू करने के पहले किसी की तंबुस्ती की बढ़ोतरी की कामना की जाती है।

सर ऐ० : और स्त्री ! अच्छी है ?

मेरिया : श्रीमान् की कृपा है ।

सर टो० : सर ऐन्ड्रू ! लो ओ दो ! सलामी ! सलामी !

सर ऐ० : क्या मतलब ?

सर टो० : यह मेरी भतीजी की खास नौकरानी है !

सर ऐ० : श्रीमती सलामी ! नमस्कार ! आपसे तो परिचय हुआ
अहोभाग्य समझूं ।

मेरिया : श्रीमान् ! मेरा नाम मेरी है ।

सर ऐ० : कुमारी मेरी सलामी !

सर टो० : नहीं-नहीं, सर ऐन्ड्रू ! आप गलती कर रहे हैं । सलामी
माने है इसकी सलामी, इसको स्नेहपूर्ण व्यवहार का पात्र
बनाना । प्रेम करना !

सर ऐ० : पर ऐसा मैं आपके रहते कैसे कर सकता हूँ ! क्या सलामी
का अर्थ ऐसा होता है ?

मेरिया : नमस्कार ! महाशयो नमस्कार !

सर टो० : अगर आप इसे ऐसे चले जाने देंगे तो सर ऐन्ड्रू ! मैं सम-
झता हूँ आपको अपनी तलवार खींचना ही छोड़ देना चाहिये ।

सर ऐ० : और देवी ! तुम ऐसे जा रही हो कि मैं अब तलवार ही
नहीं खींच सकूंगा । क्या तुम समझती हो तुम्हारा मूर्खों से पाला
पड़ा है !

मेरिया : आपसे मेरा पाला ही कहाँ पड़ा है श्रीमान् !

सर ऐ० : वह तो शीघ्र पड़ जायेगा । लो पकड़ो मेरा हाथ ।

मेरिया : अब ! सर ऐन्ड्रू ! मैं जो चाहे सोच सकती हूँ । लेकिन...
लेकिन श्रीमान् ! अच्छा हो यह हाथ शराबखाने में जाकर

१. वह कहता है सलामी दो, पर वह उसका नाम सलामी समझता है ।

आपको खूब शराब पिलाये ।

सर ऐ० : ऐसा क्यों कहती हो प्रिये ! तुम्हारी उपमा किससे है ?

मेरिया : इस (हाथ) पर तो खुश्की आ गई है श्रीमान् !

सर ऐ० : क्यों ? हाँ ठीक है ! मैं क्या ऐसा गधा हूँ कि हाथ भी सूखा न रख सकूँ ! लेकिन मज़ाक क्या है ?

मेरिया : बड़ा खुश्क मज़ाक है !

सर ऐ० : और तुममें वह बहुत है ?

मेरिया : क्या पूछना ! उँगलियों की पोरों पर लिये हूँ । लो, मैं आपका हाथ छोड़ती हूँ । सब आपको दे चली ।

[मेरिया का प्रस्थान]

सर टो० : अरे सर ऐन्ड्रू ! आपको ज़रा शराब की ज़रूरत है ! मैंने कभी आपको ऐसा हारते नहीं देखा ।

सर ऐ० : कभी नहीं, ज़िदगी में नहीं, जब तक शराब मुझे बेहोश न कर दे । मुझे लगता है, कभी-कभी मुझमें उतनी भी अक्ल नहीं रहती, जितनी एक मामूली आदमी में होती है । लेकिन मैं गाय का गोشت बहुत खाता हूँ और मुझे ऐसा लगता है जैसे उससे मेरी अक्ल ठस हो जाती है ।

सर टो० : इसमें भी क्या शक होगा ?

सर ऐ० : अगर यह बात है तो मैं इसे छोड़ ही दूंगा । सर टोबी में कल घर लौटूंगा ।

सर टो० : पौरकौई ? मेरे दोस्त !

सर ऐ० : क्या मतलब ! हाँ या ना ? काश मैंने तलवार चलाने, नाचने और भालुओं की लड़ाई देखने में जितना समय लगाया,

१. मूल में सर टोबी क्यों (why) न कह कर फ्रेंच भाषा का शब्द पौरकौई (pourquoi) कहता है ।

उतना ही भाषाएँ सीखने में लगाया होता ! काश मैंने कलात्मक विषय पढ़े होते, विशेष कर विदेशी भाषाएँ !

सर टो० : तो कम से कम आपके सिर के बाल कहीं ज़्यादा घुँघराले होते ।

सर ऐ० : अच्छा ! उससे बालों को फ़ायदा होता है ?

सर टो० : इसमें क्या शक है ! आप नहीं जानते कि कुदरतन आपके सिर के बाल घुँघराले नहीं हैं ?

सर ऐ० : लेकिन आपका क्या खयाल है ? यह मुझे फबते तो हैं ?

सर टो० : वाह क्या पूछना ! ऐसे लटकते हैं जैसे ताने पर ऊन, सपाट !

सर ऐ० : वाह ! पर मैं कल लौट जाऊँगा सर टोबी ! आपकी भतीजी तो दर्शन ही नहीं देतीं । फिर मिलें भी तो मेरा पलड़ा तो बहुत हल्का हो चुका है । काउण्ट भी तो उनके लिये कोशिश कर रहा है ।

सर टो० : काउण्ट से उसे क्या लेना-देना । अपनी हैसियत से ऊँचे से वह शादी न करेगी, उसने कई बार प्रतिज्ञा की है । मैंने कहुते सुना है, न उम्र का बड़ा फ़र्क, न अक्ल का, न धन का । भले आदमी, सुनते हो ! वह नहीं चाहती । निराश क्यों होते हो अभी से ?

सर ऐ० : अच्छा एक महीने और ठहरता हूँ । मैं भी दुनिया में बड़ी अजीब अक्ल लेकर आया हूँ । कभी-कभी तो मैं नाच-गानों में, नाटकों में ही डूबा रह जाता हूँ ।

सर टो० : तुम्हें नाच भी खूब आता है ?

सर ऐ० : कोई हमउम्र हो, मेरी आक्रांत का हो, तो सारी इलिरिया में चुनौती दे ले । बद के आ जाये । मैं नहीं डरता । पर मुझसे बड़ा

हो, उम्नदार हो, उससे मैं अपनी तुलना नहीं कर सकता ।

सर टो० : जानदार नाच में क्या कमाल करोगे बताओ ?

सर ऐ० : वाह ! मैं ऊँची उछाल लगा जाऊँ !^१

सर टो० : तब तो फिर मैं भी गोश्त-सा काट दूंगा ।

सर ऐ० : और पलट घूमने में मुझ जैसा ताकतवर इस इलिरिया में और कौन होगा ?

सर टो० : पर यह सारे गुण अभी तक क्यों छिपा रखे थे ? इन पर पर्दा क्यों डाल रखा था ? क्या यह भी श्रीमती माल की तस्वीरें हैं कि धूल लगते ही बिगड़ जायेगी ।^२ जोशीले ढंग से नाचते हुए गिरजे क्यों नहीं जाते और लौटते वक्त नया नाच क्यों नहीं दिखाते ? मैं होता तो मेरी तो चाल ही नाच बन जाती ? क्या कहता हूँ ? क्या दुनिया ऐसी है जिसमें अपने गुण छिपाये जायें ? अरे आपके तो पैरों की सुन्दर बनावट देख कर ही समझ गया था कि यह तो उस ग्रहदशा में बनाये गये थे, जब किसी नाचने वाले का सिरजन होता है ।

सर ऐ० : और जब इन पर मैं चमकीले मोजे पहन लेता हूँ, तब देखिये ! क्या बात हो जाती है ! तो क्या कोई माँस्क किया जाये ?^३

सर टो० : और इससे अच्छी क्या बात होगी ? क्या टॉरस^४ राशि में हमारा जन्म नहीं हुआ ?

सर ऐ० : अच्छा हाँ । जिसका दिल और पसलियों से संबंध है !

सर टो० : नहीं जी ! पैरों और जाँघों से । ज़रा वह नाच तो

१. दूसरा शब्दार्थ है केपट-साँस जिसका उबले हुए बकरे के गोश्त से तात्लुक है ।

२. किसी स्त्री का संबंध जो अपने चित्र ढँक कर रखती थी ।

३. माँस्क : नाटक । इसमें चेहरे पर नकाब रहता था ।

४. एक राशि जिसका गर्दन, गले और स्वर से संबंध । दोनों ही उसके

दिखाना । (सर ऐन्डू नाचता है ।) हा ! और ऊँचे ! हा ! हा !
वाह ! वाह ! शाबाश ! कमाल कर दिया !

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[ड्यूक के महल का कमरा]

[वलैन्टाइन और पुरुष वेश में वायोला का प्रवेश]

[सिज़ैरियो वायोला का वर्तमान नाम है ।]

वलैन्टाइन : सिज़ैरियो ! यदि ड्यूक तुम पर ऐसे ही प्रसन्न रहे जैसे
अब हैं तो निश्चय ही तुम उन्नति करोगे ।

वायोला : या तो तुम समझते हो कि लापरवाह हूँ, या ये कि उनका
मिजाज ठीक नहीं है, वर्ना उनकी महरबानी के एक-से बने रहने
पर तुम्हें शक न होता । क्या उनका मन एक-सा नहीं रहता,
दृढ़ चित्त नहीं हैं वे ?

वलैन्टाइन : नहीं, मुझ पर पूरा यकीन रखो, सो बात नहीं है ।

वायोला : तो फिर क्या डर है । लो काउण्ट इधर ही आ रहे हैं ।

[ड्यूक, क्यूरीओ और सेवकों का प्रवेश]

ड्यूक : सिज़ैरियो कहाँ हैं ?

वायोला : हाज़िर हूँ श्रीमान् !

ड्यूक : एकांत ।

[सब हटते हैं ।]

वारे में कुछ नहीं जानते, यही शेक्सपियर का भाव है । इस दृश्य में विदेशी
नृत्यों के नाम हैं पर हमने उनके विभेद नहीं लिखे क्योंकि उससे नाटक की गति
में रस-भंग होता । शेक्सपियर भाषा के दो अर्थों के मजाक बहुत रखता है,
और इसीलिये वह अनुवाद के समय निकृष्ट साबित होता है ।

सिज़ैरियो ! मैं तुमसे सब कह चुका हूँ । तुम्हारे सामने अपना दिल खोल चुका हूँ । तुम्हें अपने भीतर तक के भावों से अवगत करा चुका हूँ । अच्छे लड़के ! अब तुम मेरी देवी के पास जाओ । उसके द्वार पर डट जाओ और कहो कि तुम वहाँ जमे रहोगे तब-तक, जबतक कि उसके सामने नहीं पहुँचा दिये जाते ।

वायोला : किन्तु श्रीमान् ! यदि जैसा कहा जाता है कि वे अत्यंत दुखी हैं, यह सत्य है, तो वे एक अपरिचित से मिलने को कभी तैयार न होंगी ।

ड्यूक : तुम विरोध में आवाज़ ऊँची करना । अपनी प्रार्थना दुहराने से न रुकना, अरे बल्कि विनम्रता की सीमा का भी उल्लंघन कर जाना, लेकिन बिना काम पूरा किये किसी भी तरह न लौटना ।

वायोला : अच्छा मान लीजिये मुझे भीतर प्रवेश करने की आज्ञा मिल गई और दर्शन भी मिल गये तो मैं फिर कलूँ भी क्या ?

ड्यूक : ओह ! यदि वह तुम्हें यह सौभाग्य प्रदान करे, तो मेरे उत्कट और गंभीर प्रेम को उसके सामने खोल देना, मेरे सारे भावों और आशाओं को उसके सामने उँडेल देना, उसके हृदय को अचानक ही घेर कर जीत लेना । मेरे प्रिय सिज़ैरियो ! मेरे प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के उपयुक्त एक तुम ही दूत हो, क्योंकि यह कार्य्य तुम्हें ठीक फबता है, और तुम जैसे तरुण के मुख से वह यह संवाद कहीं अधिक चाव से सुनेगी, बजाय इसके कि किसी बूढ़े मुँह से या अधिक आयु वाले से सुने ।

वायोला : श्रीमान् ! कहीं भूल तो नहीं कर रहे, मुझे भय है ।

ड्यूक : नहीं तरुण ! विश्वास करो ! कोई नहीं कह सकता कि तुम्हारे यौवन के दिन निकल गये । देवी डायना (चन्द्रमा) की भाँति ही तुम्हारे अधर सुंदर और गुलाबी हैं । अभी तक तुम्हारी

आवाज़ संगीतात्मक है जैसे किसी लड़की की हो। तुम्हारा सारा रूप इतना कोमल और सुंदर है जैसे किसी स्त्री का हो। मुझे तो यकीन होता जा रहा है कि तुम्हारा जन्म किसी ऐसी दशा में हुआ है जो ऐसे सँदेसे ले जाने की बेला ही थी। (मुड़ कर) सिज़ैरियो के साथ अनेक नौकर जायें। सिज़ैरियो ! तुम चाहे सबको ले जाओ। मैं तो एकांत में बहुत सुख पाता हूँ। यदि तुमने यह कार्य सफलता से संपादित कर दिया तो मैं तुम्हारी जीवन भर ऐसी ही सेवा करूँगा जैसे अपनी करता हूँ। तब-तक, जबतक मैं जीवित रहूँगा।

वायोला : मैं आपकी प्रिया को जीतने में कोर-कसर नहीं रखूँ, यही मेरी साधना होगी। (स्वगत) कितना कठिन संघर्ष है। पराई से कहूँगी कि इससे विवाह कर, जब कि मुझे अवसर मिले तो सौ बार वारी जाऊँ।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[ओलोविया के घर का कमरा]

[मेरिया और विदूषक का प्रवेश]

मेरिया : नहीं। या तो मुझे बता कि तू कहाँ गया था, या सोच ले कि तेरी तरफ़दारी में मेरा मुँह इतना भी न खुलेगा कि हवा भी उसमें घुस जाये। तेरी गैरहाज़िरी से मालकिन इतनी नाराज़ हैं कि तुझे कड़ी सज़ा देने पर तुली हुई हैं।

विदू० : अरे फाँसी पर चढ़ा लेंगी मुझे ! जो लटक ही गया इस दुनिया में, उसे किसी रंग का डर ही क्या ?

मेरिया : यह क्या ? मतलब !

विद्व० : ऐसे को डर ही किसका ? मर गया सो आज़ाद हो गया ।

मेरिया : खूब ! क्या लचर बात कहता है ! अरे मुहाविरा भी मालूम है ? रंग का डर क्या है, पता है ?

विद्व० : बताओ मेरी ! बताओ ! तुम बड़ी अच्छी हो ।

मेरिया : युद्ध में चलता है यह ! दुश्मन का भंडा होता है न ? उसे ही रंग कहते हैं । यह तो तब कहा जाता है जब कोई डर ही न हो । मूर्ख, वैसे ही बक रहा है ।

विद्व० : बस ! मैं तो यही कहूँगा कि जिनमें अक्ल है वे तो अक्लमंद रहेंगे ही, पर जिनमें नहीं है, उन्हें बातों की चतुराई लगानी पड़ेगी ।

मेरिया : लेकिन तुम्हें गैरहाज़िर रहने के लिये लटकाया ज़रूर जायेगा । या निकाल दिया जायेगा, वह तो फाँसी से भी बढ़कर होगा ।

विद्व० : कई अच्छी फाँसियाँ बुरी शादियों को रोक देती हैं । और निकाले जाने की बात तो गर्मी की ऋतु में ठीक जँचती है ।

मेरिया : तो यह तूने निश्चय कर लिया है ?

विद्व० : बिल्कुल नहीं । पर दो बातों का मैंने बिल्कुल निश्चय कर लिया है ।

मेरिया : एक टूटे तो दूसरी बना दे और दोनों गई तो पतलून खिसक जायेगी नीचे ।

विद्व० : वाह-वाह ! क्या कहना है । जब सर टोबी शराब पीना छोड़ देंगे तो सारी इलिरिया में तुम सबसे अक्लमंद औरत हो जाओगी ।

मेरिया : बके मत बदमाश ! खबरदार जो फिर कहा । ले मालकिन आ रही हैं । अब अपनी बात को खूब सँवार कर कह ले । अब भी सँभल !

[प्रस्थान]

विद्व० : ओ अक्ल ! जाग उठ ! ऐसी सुभा कि कमाल की बेवकूफी

उछाल दूँ। अपने को चतुर समझने वाले अक्सर उल्टे ही साबित होते हैं। मैं मानता हूँ मैं चतुर नहीं हूँ, तो फिर कोई चतुराई खेलूँ। कहावत भी है, मौके की बोल जाने वाला मूर्ख उस चतुर व्यक्ति से अच्छा है जिसे मौके पर नहीं सूझती।

[ओलीविया और मालबोलियो का प्रवेश]

विदू० : ईश्वर आपको सुखी रखे मालकिन।

ओलीविया : इस बेवकूफ को यहाँ से निकालो।

विदू० : अरे सुनते नहीं हो तुम लोग ! मालकिन को यहाँ से निकालो।

ओलीविया : अरे जा ! खुश्क बेवकूफ। तेरा तो भेजा सूख गया है।

अब तेरा यहाँ काम नहीं। और फिर, अब तू बेईमान भी हो गया है।

विदू० : दो कुसूर ! मालकिन ! पर यह तो अच्छी सलाह और शराब पीने से दूर हो सकते हैं। अगर किसी खुश्के को शराब पिलाई जाये तो फिर वह रूखा नहीं रहता। अगर बेईमान को अच्छी सलाह दे दी जाये तो वह भी अच्छा हो जाता है। और फिर भी काम न चले तो चमार से टाँके लगवा दो, क्योंकि मरम्मत की चीज़ तो ऐसी ही होती है। जो भलमनसाहत गुनाह करती है, वह गुनाह से और गुनाह जो ठीक होता है वह भलमनसाहत से। यदि यह सहज तर्क काम न दे तो चारा ही क्या है ? विदूषक की गलती जानबूझ कर की गई है, और वही मुसीबत है। जैसे रूप क्या है, एक फूल। मालकिन ने कहा मूर्ख को निकालो, लिहाज़ा मैं फिर कहता हूँ कि इन्हें ले जाओ।

ओलीविया : मैं फिर कहती हूँ कि मैंने इनसे कहा था कि यह तुम्हें निकाल दें।

विदू० : ऐसी गलती ! और मालकिन करें ! क्यों भला ! टोपे से साधू

नहीं बनता, कहते हैं न ? बस यही मेरा हाल है । मैं अपना रंगीन चोगा^१ दिमाग में नहीं पहनता । अच्छी मालकिन ! मुझे आज्ञा दें कि मैं अपने को मूर्ख प्रमाणित कर सकूँ ।^२

ओलीविया : अच्छा तो ऐसा भी कर सकते हो ?

विद्व० : बहुत चतुराई से श्रीमती !

ओलीविया : अच्छा देखें ।

विद्व० : तो मैं आपसे सवाल करूँगा मालकिन ! आपको हाज़िरजवाब देने होंगे ।

ओलीविया : अच्छी बात है । फुर्सत है तो यही सही ।

विद्व० : अच्छा मालकिन ! आप क्यों मातम मनाती है ?

ओलीविया : ओ मूर्ख ! अपने भाई की मौत पर !

विद्व० : तो मालकिन ! उनकी आत्मा नरक में होगी ।

ओलीविया : मूर्ख ! वह स्वर्ग में है ।

विद्व० : तब तो श्रीमती ! आप ही बड़ी मूर्ख है क्योंकि आप भाई की आत्मा के स्वर्ग में होने पर मातम मना रही है । भाइयो ! बेवकूफ को बाहर निकालो ।

ओलीविया : मालबोलियो ! तुम्हारा इस बेवकूफ के बारे में क्या खयाल है ? इसने कुछ तरक्की की है ?

मालबोलियो : क्यों नहीं ? की है और मौत तक करता जायेगा । मगर बुढ़ापा आता है तो अक्लमंद सठिया जाते हैं, मूर्ख और मूर्ख हो जाता है, बस यही इसकी तरक्की है ।

१. विद्वेषक चोगा पहनते थे, भड़कीला, रंगीन ।

२. अंगरेज़ी में विद्वेषक को मूर्ख (Fool) भी कहते थे । यहाँ दो अर्थ हैं । उसके कहने का तात्पर्य है कि विद्वेषक का चोगा मैं बेह पर धारण करता हूँ, विश्वास पर नहीं, यानी मैं बरअसल मूर्ख नहीं हूँ ।

उछाल दूँ। अपने को चतुर समझने वाले अक्सर उल्टे ही साबित होते हैं। मैं मानता हूँ मैं चतुर नहीं हूँ, तो फिर कोई चतुराई खेलूँ। कहावत भी है, मौके की बोल जाने वाला मूर्ख उस चतुर व्यक्ति से अच्छा है जिसे मौके पर नहीं सूझती।

[ओलीविया और मालकीनो का प्रवेश]

विद्व० : ईश्वर आपको सुखी रखे मालकिन।

ओलीविया : इस बेवकूफ को यहाँ से निकालो।

विद्व० : अरे सुनते नहीं हो तुम लोग ! मालकिन को यहाँ से निकालो।

ओलीविया : अरे जा ! खुशक बेवकूफ। तेरा तो भेजा सूख गया है।

अब तेरा यहाँ काम नहीं। और फिर, अब तू बेईमान भी हो गया है।

विद्व० : दो कुसूर ! मालकिन ! पर यह तो अच्छी सलाह और शराब पीने से दूर हो सकते हैं। अगर किसी खुशके को शराब पिलाई जाये तो फिर वह रूखा नहीं रहता। अगर बेईमान को अच्छी सलाह दे दी जाये तो वह भी अच्छा हो जाता है। और फिर भी काम न चले तो चमार से टाँके लगवा दो, क्योंकि मरम्मत की चीज तो ऐसी ही होती है। जो भलमनसाहत गुनाह करती है, वह गुनाह से और गुनाह जो ठीक होता है वह भलमनसाहत से। यदि यह सहज तर्क काम न दे तो चारा ही क्या है ? विद्वषक की गलती जानबूझ कर की गई है, और वही मुसीबत है। जैसे रूप क्या है, एक फूल। मालकिन ने कहा मूर्ख को निकालो, लिहाजा मैं फिर कहता हूँ कि इन्हें ले जाओ।

ओलीविया : मैं फिर कहती हूँ कि मैंने इनसे कहा था कि यह तुम्हें निकाल दें।

विद्व० : ऐसी गलती ! और मालकिन करें ! क्यों भला ! टोपे से साधू

नहीं बनता, कहते हैं न ? बस यही मेरा हाल है । मैं अपना रंगीन चोगा^१ दिमाग में नहीं पहनता । अच्छी मालकिन ! मुझे आज्ञा

दें कि मैं अपने को मूर्ख प्रमाणित कर सकूँ ।^२

ओलीविया : अच्छा तो ऐसा भी कर सकते हो ?

विद्व० : बहुत चतुराई से श्रीमती !

ओलीविया : अच्छा देखें ।

विद्व० : तो मैं आपसे सवाल करूँगा मालकिन ! आपको हाज़िरजवाब देने होंगे ।

ओलीविया : अच्छी बात है । फुर्सत है तो यही सही ।

विद्व० : अच्छा मालकिन ! आप क्यों मातम मनाती है ?

ओलीविया : ओ मूर्ख ! अपने भाई की मौत पर !

विद्व० : तो मालकिन ! उनकी आत्मा नरक में होगी ।

ओलीविया : मूर्ख ! वह स्वर्ग में है ।

विद्व० : तब तो श्रीमती ! आप ही बड़ी मूर्ख हैं क्योंकि आप भाई की आत्मा के स्वर्ग में होने पर मातम मना रही है । भाइयो ! बेवकूफ को बाहर निकालो ।

ओलीविया : मालबोलियो ! तुम्हारा इस बेवकूफ के बारे में क्या खयाल है ? इसने कुछ तरक्की की है ?

मालबोलियो : क्यों नहीं ? की है और मौत तक करता जायेगा । मगर बुढ़ापा आता है तो अक्लमंद सठिया जाते हैं, मूर्ख और मूर्ख हो जाता है, बस यही इसकी तरक्की है ।

१. विद्वेषक चोगा पहनते थे, भड़कीला, रंगीन ।

२. अंगरेज़ी में विद्वेषक को मूर्ख (Fool) भी कहते थे । यहाँ दो अर्थ हैं । उसके कहने का तात्पर्य्य है कि विद्वेषक का चोगा में बेह पर धारण करता हूँ, बिबाध पर नहीं, यानी मैं दरअसल मूर्ख नहीं हूँ ।

विद्व० : तो बुढ़ापा तुम पर शीघ्र आये ताकि तुम्हारी जल्दी तरक्की हो । सर टोबी कसम खाकर कहेंगे कि मुझमें अक्ल नहीं है, मैं चालाक नहीं हूँ । पर वे दमड़ी भी शर्त पर लगाने को इसलिये तैयार नहीं होंगे कि भूल से भी यह कह दें कि तुम अक्लमंद हो ।

ओलीविया : इस बारे में तुम्हारी क्या राय है मालबोलियो ?

मालबोलियो : सच ! मुझे ताज्जुब होता है मालकिन ! कि आप ऐसे बेवकूफ लुच्चे की बातें सुनकर ऊब नहीं जातीं । अभी कुछ ही दिन हुए मैंने इसको एक निहायत बेवकूफ से भी बातचीतों में हार जाते देखा था । अब आप देखिये, मैं ही इसकी बोलती बंद करा दूंगा । असल में इसके पास कहने को कुछ है थोड़े ही । आप कोई शुरू न करें तो यह तो बोल भी नहीं सकता । मैं, मेरी राय तो यह है, साफ़ कहता हूँ जो इन पेशेवर विदूषकों को इतने ऊँचे दर्जे पर रखते हैं, वे खुद इन विदूषकों के भी नकलची होते हैं ।

ओलीविया : मालबोलियो ! लगता है तुम अपने को ही सब कुछ समझते हो, तभी बाकी सब तुम्हें ऐसा विकृत दिखाई देता है । विशाल हृदय व्यक्ति साधारण बातों को साधारण ही समझते हैं । विदूषकों को तो विशेष अधिकार होते हैं । वे तो कुछ भी कह सकते हैं । उनकी बात का क्या कोई बुरा मानता है ? ऐसे ही जैसे बुद्धिमान् की नसीहत और डाँट का कोई बुरा नहीं मानता ।

विद्व० : देवता मर्करी' तुम्हारे मुख में शब्द भरें मालकिन ! क्योंकि तुम विदूषकों की प्रशंसा कर रहे हो ।

१. मर्करी—देवता हैं जो बहुत चपल माना जाता हैं । मतलब है कि जल्दी-जल्दी और ज्यादा-ज्यादा बोलो ।

[मेरिया का प्रवेश]

मेरिया : मालकिन ! द्वार पर एक तरुण उपस्थित है जो आपसे बात करना चाहता है ।

ओलीविया : काउण्ट औरसिनो का आदमी है ?

मेरिया : पता नहीं मालकिन ! अच्छा सुन्दर जवान है, संग में कई नौकर हैं ।

ओलीविया : तो मेरा कौन-सा नौकर जाकर उसे रोके है ?

मेरिया : सर टोबी, आपके चाचा हैं मालकिन !

ओलीविया : अरे उन्हें ले आओ ! जाओ । जल्दी करो ! वे तो पागलों-सी बातें करते हैं । धिक्कार है उन्हें ।

[मेरिया का प्रस्थान]

मालबोलियो ! तुम जाओ ! अगर काउण्ट के पास से आया हो तो कहना बीमार हैं, या घर पर नहीं हैं जो चाहे कह कर टाल देना ।

[मालबोलियो का प्रस्थान]

(फिर विदूषक से) हाँ जी । देखते हो ! तुम्हारे मजाक कैसे पुराने पड़ गये हैं और लोग उनसे ऊबने लगे हैं ।

विदू० : मालकिन ! अभी तो आप हमारी ऐसी तारीफ़ कर रही थीं जैसे अपने ही कुंदजेहन लड़के की ! मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपके पुत्र चतुर सुजान हों, क्योंकि आखिर तो एक मैं हूँ आप ही के परिवार का सदस्य, जिसका दिमाग़ निहायत लचर है ।

[सर टोबी का प्रवेश]

ओलीविया : मुझे यकीन है इन्हें आधा नशा चढ़ा ही होगा । सर टोबी ! बाहर कौन आया है ?

सर टो० : एक शरीफ़ आदमी ।

ओलीविया : एक शरीफ़ आदमी ! कैसा शरीफ़ आदमी ?

सर टो० : एक जवान । लानत हो इन बेवकूफों पर । ऐं ! बेवकूफ !
विदूषक !

विदू० : कहिये सर टोबी ! मिजाज ?

ओलीविया : सर टोबी ! आप दिन के वक्त इतने थके-ढीले-से क्यों हैं ?

सर टो० : थकान की कहती हो ! मारो भी ! कोई द्वार पर खड़ा है ।

ओलीविया : हाँ, वह कौन है ?

सर टो० : शैतान ही होगा, मुझे मतलब ? हमें परमात्मा में भरोसा रखना चाहिये । बस ! फिर कुछ भी हो !

ओलीविया : विदूषक ! बोलो तुम नशे में पड़े आदमी की किससे तुलना करोगे ?

विदू० : एक पागल से, एक ऐसे आदमी से जिसकी अक्ल गुम हो चुकी हो, एक डूबे हुए आदमी से । पी-पी कर मूर्ख हुए, नशे ने अक्ल गुम कर दी और तीसरी घूंट ने डुबो दिया ।

ओलीविया : तो जाओ लाश लेजाने वाला ले आओ । चाचा पर वह उसका हक हो । क्योंकि वे शराब में डूबे हुए हैं । वे तीसरी सीढ़ी पर पहुँचे हुए हैं । चलो इन्हें पहुँचाओ ।

विदू० : अभी तो वे पागल हुए हैं । और मैं मूर्ख इस गुम अक्ल की देख-रेख कर लूंगा ।

[प्रस्थान]

[मालबोलियो का प्रवेश]

मालबोलियो : मालकिन ! वो नौजवान तो कसम खाता है कि बिना आपसे बातें किये लौटेगा ही नहीं । मैंने कहा कि आप बीमार हैं, वह बोला कि मैं जानता था और इसीलिये तो देखने आया हूँ । मैंने कहा कि आप सो रही हैं । तो बोला कि मैं जानता था तभी तो मिलने आया हूँ । अब मैं उससे क्या कहूँ ? वह तो किसी

भी बात का विरोध करने को तुला है। उस पर तो बूंद नहीं टिकती।

ओलीविया : बस कह दो मैं बात नहीं करना चाहती।

मालबोलियो : यह तो मैं उससे कह भी चुका। पर वह कहता है वह उससे मस न होगा, जैसे मैजिस्ट्रेट के द्वार पर खंभे गड़े रहते हैं न? या जैसे ढाल पर तस्वीरें अंकित होती हैं? कहता है बस ऐसे ही अड़ा रहूँगा।

ओलीविया : है कैसा वह ?

मालबोलियो : आदमी है।

ओलीविया : पर कैसा ?

मालबोलियो : बड़ा उद्दण्ड-सा है, पर देखिये न आपकी मर्जी के खिलाफ़ आपसे मिलना चाहता है !

ओलीविया : कैसा लगता है ? बुढ़ा है या जवान ?

मालबोलियो : न बूढ़ा, न जवान, अधपका है। जैसे कोई सेव हो ! देहलीज़ पर खड़ा है। न लड़का, न आदमी ! है बड़ा सुंदर और बोलता बड़ी तीखी आवाज़ में है, जैसे कोई औरत हो। देखकर लगता है अभी-अभी तो माँ के दूध की गंध आती होगी इसके मुँह से।

ओलीविया : आने दो ! मेरी अनुचरी को बुला दो।

मालबोलियो : मेरिया ! मालकिन बुलाती हैं।

[प्रस्थान]

[मेरिया का पुनः प्रवेश]

ओलीविया : मेरा घूँघट दे। मेरे चेहरे को ढँक दे।' आ फिर ! ऑर-

१. यह भारतीय घूँघट नहीं। झीना-सा कपड़ा होता था, जिसे चेहरा ढँकने को लगाया जाता था। अमूमन यह शिरोवस्त्र होता था, जिसे बालों में फँसा लिया जाता था।

सिनो के दूत की बातें सुनें ।

[बायोला और सेबकों का प्रवेश]

बायोला : इस घर की मालकिन कौन हैं ?

ओलीविया : मुझसे बात करो । मैं ही उनकी प्रतिनिधि हूँ । तुम क्या चाहते हो ?

बायोला : ओ सुंदरी ! ओ रूपश्री ! किंतु पहले बताओ, मेरी प्रार्थना है, कि मैं असली मालकिन से बोलने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूँ । मैंने उन्हें कभी नहीं देखा । इस बहुत धीरज से तैयार की हुई स्तुति को मैं किसी और के सामने नष्ट नहीं करना चाहता । यह बहुत सुंदर बनी है, बल्कि इसे रटने में मुझे काफी समय लगा है । ओ सुंदरियो ! मेरे दूतत्व का उपहास न करो । मैं तनिक से भी अपमान से आहत हो जाता हूँ ।

ओलीविया : तुम कहाँ से आये हो ?

बायोला : मैं वही कह सकता हूँ, जो मुझे रटाया गया है । और इस प्रश्न का मेरे पास उत्तर नहीं है । यह मेरा अभिनेय नहीं है । मुझे कुछ विश्वास दिलायें कि आप ही मालकिन हैं ताकि मैं अपना संवाद प्रारंभ करूँ ।

ओलीविया : तो क्या तुम अभिनेता हो ?

बायोला : नहीं, प्रिय देवी ! वह तो नहीं हूँ जो दीखता हूँ । आप ही घर की मालकिन हैं ?

ओलीविया : हाँ, मैं ही मालकिन हूँ । शायद मैं गलत नहीं कहती ।

बायोला : यदि तुम मालकिन हो तो निश्चय ही तुमने वह जगह हड़प ली है, जो तुम्हारी नहीं है । तुम एक ऐसे गुण को छिपाये हो, जिसे प्रगट कर सकती थीं । किंतु मैं इस पर अधिक नहीं कहूँगा

क्योंकि यह मेरे सँदेसे में नहीं है। पहले मैं तुम्हारी स्तुति सुना दूँ। फिर मतलब की बात कहूँगा।

ओलीविया : स्तुति छोड़ो ! मतलब की बात पर सीधे ही उतर आओ।

वायोला : ओह ! मैंने बड़ी मेहनत से याद की है, बड़ी कवित्व भरी है।

ओलीविया : तभी तो वह भूँठी होगी। उसे रखो। रहने दो। मुझे बताया जा चुका है कि तुम मेरे द्वार पर बहुत उद्दण्डता से व्यवहार कर रहे थे, और मैंने तुम्हें जो भीतर आने दिया वह तुम्हें देखने को कि कौन है, न कि स्तुति या संदेश सुनने को। अब, अगर अक्ल है तो चले जाओ। कायदे की बात करनी हो तो करो, वर्ना मैं बेकार की बातें नहीं सुनना चाहती।

मेरिया : इधर रास्ता है, पाल खोलिये और तैर जाइये।

वायोला : अभी नहीं, प्रिय देवी ! तुम जहाज भाड़ती हो न ? ज़रा और ठहरो ! पहले, मालकिन ! तुम्हारी इस दैत्य सेविका को तो संतुष्ट कर दूँ !

ओलीविया : तुम्हारे यहाँ आने का मकसद क्या है ?

वायोला : संदेश लाना।

ओलीविया : तुम्हारा संदेश भी भयानक होगा, क्योंकि तुम्हारे बोलने का ढंग ही अजीब है। अच्छी बात है, कहो।

वायोला : वह केवल आपके लिये है और किसी के लिये नहीं। मैं किसी लड़ाई की बात नहीं लाया हूँ, न आपसे समर्पण चाहता हूँ। मेरा सँदेसा बड़ा शांतिपूर्ण है और मेरे शब्दों में बड़ा महत्त्व और बड़ी गंभीरता है।

ओलीविया : पर तुम्हारे शब्दों में बड़ा गर्व था पहले। तुम क्या हो ? और यहाँ क्या चाहते हो ?

वायोला : हो सकता है श्रीमती, पहले मैं उद्वण्ड लगा होऊँ, पर मेरा जैसा स्वागत हुआ था, मैंने उसी से शिक्षा ली थी। मेरा संवाद केवल आपके लिये है। आपके लिये वह पवित्र है, अन्यो के सामने उसे कहना अपवित्रता होगी।

ओलीविया : एकांत दो हमें, हम इसकी पवित्र बात सुनें।

[मेरिया का प्रस्थान]

हाँ जी, कहो !

वायोला : ओ परम सुंदरी.....

ओलीविया : आत्मा को बड़ा संतोष देने वाली बात है, और इस पर तो बहुत कुछ कहा जा सकता है। अपनी बात कहो। वह कहाँ से शुरू होती है ?

वायोला : आँसुओं के हृदय से।

ओलीविया : उसके हृदय से ? उसके किस भाग से ?

वायोला : सबसे पहले हिस्से से श्रीमती !

ओलीविया : ओह ! वह तो मैं सुन चुकी हूँ। वह बहुत अपवित्र है। बस यही तुम्हारा संदेश है ?

वायोला : सुंदरी ! मुझे अपना चेहरा तो देखने दो !

ओलीविया : क्या तुम्हारे मालिक ने मेरे चेहरे को कोई संदेश भेजा है ? अपनी बात से भटको मत ! जो हो, मैं चेहरे को दिखा दूंगा ? यह तस्वीर देख लो ! देखते हो मुझे ; कैसी तस्वीर है ?

[घूँघट हटाती है।]

वायोला : बहुत सुंदर ! यदि यह सब प्राकृतिक ही है।

ओलीविया : निश्चय ही, यह रंग कृत्रिम नहीं, प्राकृतिक ही है। यह प्रत्येक ऋतु भेल कर ऐसा ही रहेगा।

वायोला : माता प्रकृति ने ही श्वेत और लालिमा का यह चतुर सम्मिश्रण

किया है कि अपूर्व और पूर्ण लावण्य उतर आया है। देवी ! आप संसार की सबसे कठोर हृदय स्त्री होंगी, जो इस पृथ्वी पर आप ऐसे ही सुंदर चित्र की एक अनुकृति छोड़े बिना चली जायेंगी।

ओलीविया : अरे नहीं ! मैं इतनी निष्ठुर क्यों बनूंगी ? मैं तो इन सबकी एक सूची बनाऊँगी ; जैसे, दो होंठ—अच्छे और गुलाबी ; दो आँखें भूरी, दो पलकें, एक गर्दन, एक ठोड़ी और बस यों ही, तफ़सील से हर चीज का व्यौरा छोड़ जाऊँगी। पर क्या तुम्हारा संदेश मेरे रूप की प्रशंसा करना ही था।

वायोला : अब मैं आपका असली स्वभाव देख रहा हूँ, आपमें एक ही दोष है, वह है घोर अहंकार ! आप स्वयं शैतान ही क्यों न हों, परंतु हैं अत्यंत सुंदर ! मेरे मालिक ड्यूक को आपसे इतना प्रेम है कि यद्यपि आप सर्वमान्य रूप से सर्वश्रेष्ठ सुंदरी मान ली गई हैं, फिर भी उस गंभीर प्रेम पर अपने को समर्पित कर देने में आप कुछ बहुत अधिक नहीं दे देंगी।

ओलीविया : अच्छा बताओ। वे मुझसे कितना प्रेम करते हैं ?

वायोला : वे आपकी पूजा करते हैं देवी ! वे आपके लिये रोते हैं और आपकी उपेक्षा उनको काट-काट जाती है कि कराह उठते हैं, लंबी साँसें भरा करते हैं !

ओलीविया : तुम्हारे स्वामी मेरा निश्चय जानते हैं कि मैं उन्हें प्रेम नहीं कर सकती। मैं जानती हूँ वे एक कुलीन सज्जन हैं, उच्च पदस्थ हैं और उनके पास विशाल संपत्ति है, वे अभी तक सुंदर और युवक हैं। सब उनकी प्रशंसा करते हैं। वे दयालु, वीर, बड़े विद्वान और सुंदर पुरुष है, देख कर ही भव्य और सीधे लगते हैं। किंतु यह सब मेरा हृदय नहीं जीत सकते। मैं उन्हें प्रेम नहीं कर सकती। वे जानते हैं। और शायद उन्हें इसका विश्वास

भी हो चुका होगा ।

वायोला : यदि मैं तुम्हारे इतनी ही आसक्ति से प्रेम करता होता, जितना स्वामी करते हैं, यदि मेरी प्रेम वेदना उनकी ही-सी तीव्र होती, तो मैं तो तुम्हारी अस्वीकृति की चिंता न करता, मेरे लिये उसका कोई अर्थ ही न होता और मुझ पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

ओलीविया : तुम ऐसे में क्या कर लेते ?

वायोला : मैं तो तुम्हारे घर के पास एक फूलों का कुञ्ज बना कर रहता; तुमसे, अपनी प्रिया से प्रार्थना किया करता; तुम्हारी दीवारों के पास रहता । तुम्हारी तारीफ में गाने लिखता, अपना प्रेम प्रगट करता, जिससे तुम्हें घृणा होती और हर समय प्रत्येक ऋतु में तुम्हें वे गाने गाकर सुनाया करता । वायु में पुकार कर तुम्हारा प्यारा नाम गुंजाया करता, यहाँ तक कि हर पहाड़ी से वही प्यारी आवाज़ गुंजने लगती और फिर हर गुंज उसे दुहराती चली जाती । तुम्हें चैन न लेने देता ओलीविया ! पृथ्वी और आकाश में भी ! मुझ पर दया करो ।

ओलीविया : तुम होते तो कर भी डालते ! तुम किस कुल में जन्मे हो ?

वायोला : जिस जगह आज हूँ उससे ऊँचे कुल में । वैसे यह भी क्या बुरी जगह है । मैं कुलीन हूँ ।

ओलीविया : अपने स्वामी से जाकर कहो कि मैं उन्हें कभी प्रेम नहीं कर सकती । कहना अब मुझे और सँदेसे भेजने की जरूरत नहीं । भले ही तुम आकर खुद बता जाना कि मेरी बात से उन पर क्या असर होता है ! बिदा ! तुमने जो कष्ट किया है, उसके लिये यह मैं तुम्हारा आभार मानती हूँ । और यह उपहार भी स्वीकार करो !

वायोला : मैं किराये का दूत नहीं । उपहार अपने पास रखें । ड्यूक

को उपहार दें देवी ! मुझे नहीं । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपका प्रेम किसी ऐसे पत्थर दिल से हो जो आपकी चिंता न करे, न आपके प्रेम को स्वीकार करे । आपका प्रेम ठुकराया जाये जैसे आपने मेरे स्वामी का प्रेम ठुकराया है । बिदा, हृदय-हीन सुंदरी !

[प्रस्थान]

श्रोलीबिया : 'तुम किस कुल में जन्मे हो ?' 'जिस जगह आज हूँ, उससे ऊँचे कुल में । वैसे यह भी क्या बुरी जगह है ? मैं कुलीन हूँ ।' निश्चय ही तुम कुलीन हो । तुम्हारी बोली, चेहरा, शरीर, हिम्मत, काम, सब यही घोषणा कर रहे हैं । धीरज धर हृदय, शीघ्रता मत कर ! धीरे ! धीरे ! काश तुम ही स्वामी की जगह होते ! अरे यह क्या हुआ मुझे ! क्या मेरे हृदय को भी वही आग लग गई ? आह ! इस युवक के गुण मुझ पर कैसा प्रभाव डालते चले जा रहे हैं ? आंखों का ही अपराध है । जाने दो । मालबोलियो ! सुनो !

[मालबोलियो का पुनः प्रवेश]

मालबोलियो : जी, मालकिन, हुक्म ?

श्रोलीबिया : वह मस्त बेफिक्र नौजवान जो अभी आया है, ड्यूक का दूत । उसके पीछे जाओ ! वह जबर्दस्ती अपनी यह अँगूठी मुझे दे गया है । मेरी मर्जी की परवाह न करके ! उससे कहना, यह मैं नहीं रखूंगी और कहना कि वह अपने स्वामी को भूँटे दिलासे देकर न बहकाये रखे । मैं कभी उनकी नहीं होऊँगी । अगर वह नौजवान कल इधर आये तो मैं उसे कारण बता दूँगी । जल्दी जाओ मालबोलियो !

मालबोलियो : बस अभी गया ।

[प्रस्थान]

ओलीविया : मैं क्या कर रही हूँ ! मैं नहीं जानती इसका नतीजा क्या होगा ? उसके रूप की बावली आँखें तो मन को हर बैठीं । मेरा तर्क कहाँ गया ? अरे ! भाग्य ! खेल ! अपना खेल तू खेल ! हम कुछ भी नहीं हैं ! हमें तो पूर्वनिर्णित के आगे केवल सिर झुकाना है । तो क्या यही मेरे लिये होने को था ?

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[समुद्र तीर]

[एन्टोनियो और सैबैस्टियन का प्रवेश]

एन्टो० : क्या तुम और नहीं रुकोगे ? क्या मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूँ ?

सैबै० : क्षमा करो । रहने दो ! इस समय मेरी ग्रहदशा ठीक नहीं है । अगर तुम मेरे साथ चलोगे तो हो सकता है मेरी खोटी किस्मत का तुम पर भी असर पड़े । इसी से विनती करता हूँ कि मुझे मेरे दुर्भाग्य को अकेले भोगने दो । यदि मैं तुम्हें भी मुसीबत में डालूँ तो इससे बढ़कर तुम्हारी अच्छाई का बुरा बदला चुकाना और क्या होगा ?

एन्टो० : तो मुझे यह तो बता दो कि तुम जाना कहाँ चाहते हो ?

सैबै० : नहीं बताऊँगा, सच कहता हूँ । मैं स्वयं अपनी यात्रा की मंजिल नहीं जानता । बस भटकना है । पर तुम कितने करुण हृदय हो कि ऐसे प्रश्न भी पूछते हो जिनका मैं उत्तर तक नहीं देना चाहता । इसीलिये मुझे विवश होकर सब कुछ बताना पड़ेगा । एन्टोनियो ! मेरा नाम सैबैस्टियन है, जो मैंने तुम्हें रोडरिगो बताया था । मेरे पिता मैसेलिनी के सैबैस्टियन कुल में से थे, जिनका तुमने शायद नाम सुना होगा । वे मुझे और मेरी एक बहिन को छोड़कर स्वर्गवासी हुए । मृत्यु के समय ही वह बालिका जन्मी थी । सच भगवान की भी कैसी इच्छा थी, हम

भाई-बहन एक साथ ही मरने को थे । लेकिन तुमने सारी योजना ही बदल दी क्योंकि जब तुमने मुझे लहरों से बचाया तब मेरी बहिन एक घंटे पहले ही जलमग्न हो चुकी थी ।

एन्टो० : कैसा अभागा दिन था !

सैबै० : मेरी बहिन यद्यपि मुझसे बहुत मिलती-जुलती थी, फिर भी स्त्रियों में वह सुंदरी थी । मैं तो इस अतिप्रशंसा से सहमत नहीं, परंतु तुम्हें यह बता दूँ जिसका कोई विरोध नहीं कर सकता कि स्वभाव और प्रकृति में वह इतनी मधुर, इतनी अच्छी थी कि ईर्ष्यालु लोग भी इसे स्वीकार करते थे । वह इसी समुद्र के खारी जल में खो चुकी है, और मैं इस जल को अपने खारी आँसुओं से बढ़ाने के अलावा और करता क्या रहा हूँ ?

एन्टो० : क्षमा करो मुझे, मैं कितना क्रूर हूँ ! जो सब पूछ रहा हूँ !

सैबै० : नहीं । मेरे मित्र एन्टोनियो ! जो कष्ट मैंने तुम्हें दिया है उसके लिये मुझे क्षमा करो ।

एन्टो० : यदि तुम मेरे प्रेम के लिये मेरी हत्या नहीं करना चाहते, तो मुझे अपने साथ चलने दो ।

सैबै० : ऐसी आशा मुझसे न करो ! क्या, पहले जैसी दया तुम मुझ पर अब नहीं करना चाहते ? बिदा ! बिदा दो अब ! मेरा हृदय कृतज्ञता से भर आया है । मैंने माता का स्वभाव पाया है, तनिक भी वेदना मेरी आँखों में आँसू भर लाती है । मैं ड्यूक ऑरसिनो के दरबार में जा रहा हूँ । बिदा ।

[प्रस्थान]

एन्टो० : देवताओं की समस्त दया तुम्हारे साथ रहे ! मैं भी शीघ्र ऑरसिनो के महल को जाता, काश मेरे वहाँ इतने शत्रु न होते । लेकिन जो कुछ भी हो, मेरा प्रेम मुझे वहीं जाने को विवश

करेगा और यह खतरे मुझे एक खेल-से ही लगेंगे। मैं जाऊँगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[पथ]

[बायोला का प्रवेश। मालबोलियो पीछे हैं।]

मालबोलियो : क्या आप ही अभी काउण्टेस ओलीविया के यहाँ से नहीं लौटे हैं ?

बायोला : हाँ क्यों ? मैं धीरे-धीरे यहीं तो आया हूँ, सीधा वहीं से !

मालबोलियो : श्रीमान् ! मेरी मालकिन ने यह अँगूठी वापिस कर दी है।

अगर आप इसे जैसा वे चाहती थीं, वैसे अपने साथ ही ले आते, तो मुझे दौड़-धूप नहीं करनी पड़ती। उन्होंने कहा है कि आप अपने स्वामी से कह दें कि उनका प्रेम प्राप्त करने की व्यर्थ चेष्टा छोड़ दें। और कहा है कि आप भी फिर आने की हिम्मत न करें, अगर केवल यही कहना हो कि आपके स्वामी ने मेरी मालकिन की अस्वीकृति को स्वीकार कर लिया है, तो आ सकते हैं। यह लीजिये अँगूठी।

बायोला : उन्होंने मुझसे यह अँगूठी स्वीकार कर ली थी, मैं इसे वापिस नहीं लूँगा।

मालबोलियो : जी नहीं ! इसे आपने उन्हें जबर्दस्ती दे दिया था और वे चाहती हैं कि यह आपको उसी दुर्व्यवहार के साथ लौटा दी जाये। यह पड़ी है। देख लीजिये। झुककर उठा लीजिये। चाहें तो ! वरना जिसे मिलेगी वह ले जायेगा।

[प्रस्थान]

बायोला : मैंने तो इस स्त्री के पास कोई अँगूठी नहीं छोड़ी ! उसका मत-

लब क्या है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह मेरे रूप पर रीझ गई है ? वह मुझे बड़े गौर से देख रही थी । ऐसे डूबकर देख रही थी कि कभी-कभी बोलना भी भूल जाती थी, और बोलती भी थी तो उसके शब्द टूटे-फूटे-से निकलते थे । सचमुच वह मेरे प्रेम में पड़ गई है और प्रेम की चाल के बतौर ही उसने इस मूर्ख दूत को भेजा है । वह कहती है कि वह मेरे मालिक की अँगूठी नहीं रखेगी । पर मेरे मालिक ने उसे भेजी कौन-सी थी ? वह मुझे चाहती है और यदि यह सच है, जो है तो सच ही, तो फिर वह किसी स्वप्न पर ही क्यों नहीं रीझ जाती ? यदि मैं छद्मवेश में न होती तो यह भूल क्यों होती ? मनुष्य की कुटिलता तनिक भी अवसर प्राप्त होते ही प्रगट हो जाती है । आह ! सुन्दर और धोखेबाज लोगों के लिये स्त्रियों के कोमल हृदय को बहकाना कितना सहज है । हाय ! यह हमारी निर्बलता का दोष है, हमारा नहीं । हम बनी ही ऐसी नरम धातु की हैं कि जो है उसे छिपा भी नहीं सकतीं । अब इस मामले का होगा क्या ? ड्यूक ऑरसिनो इस स्त्री से अत्यंत प्रेम करते हैं । काउण्टेस मुझे नहीं जानती और मैं ड्यूक को कितना चाहती हूँ । इस सबका होगा क्या ? मैं तो कुलीन सेवक वेश में हूँ, पुरुष हूँ, ड्यूक मुझसे कैसे प्रेम करेंगे ? और हूँ जो मैं सचमुच स्त्री, तो बेचारी ओलीविया कैसी लंबी-लंबी साँसें भरेगी मेरे लिये ! मैं तो इसका कोई हल नहीं निकाल सकती । समय ही निकालेगा !

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[ओलीविया के घर का कमरा]

[सर टोबी बेलच और सर ऐन्ड्रू ऐग्यूचीक का प्रवेश]

सर टो० : आइये सर ऐन्ड्रू ! आधी रात बाद जागना तो सुबह जल्दी उठ जाने के बराबर है । और जल्दी उठना—आप जानते हैं

सर ऐ० : नहीं, सच ! मैं नहीं जानता ! इतना जानता हूँ कि अगर हम देर तक जागें तो देर में ही जागते हैं ।

सर टो० : गलत । इस तरह के सारांश से मैं वैसी घृणा करता हूँ जैसे शराब के खाली पात्र से ! आधी रात बाद नया दिन होता है और सुबह होती है । यानी अगर हम आधी रात तक रुकें और तब सोने जायें, तो हम जल्दी सोने चले गये । क्या आप नहीं मानते कि पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल, इन चार तत्वों से हमारे शरीर का निर्माण हुआ है ?

सर ऐ० : निश्चय लोग ऐसा कहते हैं । पर मैं समझता हूँ खाने और पीने से निर्माण हुआ है ।

सर टो० : आप बड़े विद्वान हैं । लिहाजा हमें खाना-पीना चाहिये । मेरिया ! सुनो ! शराब लाओ ।

[विदूषक का प्रवेश]

सर ऐ० : विदूषक आ गया ।

विदू० : कहिये मित्रो ! क्या हाल हैं । 'हम तीन' का चित्र तो देखा है न ?

सर टो० : स्वागत गधे ! आओ एक गीत हो जाये ।

सर ऐ० : सच ! विदूषक की आवाज कितनी अच्छी है ! इसकी-सी

सुंदर टांग और आवाज़ मुझे मिल जाये तो मैं तो चालीस शिलिंग तक दे दूँ। सच ! मूर्ख ! रात तुमने जब वेपियनों की कहानी में पिग्रोग्रोमिटस की बात सुनाई तब मज़ा आ गया था। मैंने तुम्हारी प्रियतमा को भिजवाने को तुम्हें ६ पेन्स^१ का एक उपहार भेजा था। मिल गया ?

विदू० : हाँ, मुझे आपकी भेंट मिल गई। और नौकर की नाक कोड़े का हत्था नहीं, प्रिया का हाथ सफ़ेद है और ट्रॉययुद्ध में ऐचिलोस के नेतृत्व में जाने वाले कठोर मरमिडॉन शराब की दूकान भी नहीं।^२

सर ऐ० : वाह ! यह सर्वश्रेष्ठ विदूषक है। अच्छा अब गीत हो जाये !

सर टो० : अच्छी बात है। यह लो ६ पेन्स ! गीत हो जाये।

सर ऐ० : यह ६ पेन्स मेरी तरफ़ से। अगर एक सामंत देता है। तो.....फिर मैं भी !

विदू० : प्रेम गीत ? या सुन्दर जीवन का गीत !

सर टो० : प्रेम गीत ! एक प्रेम गीत !

सर ऐ० : नहीं, नहीं, सुन्दर जीवन-वीवन नहीं।

विदूषक : [गीत]

मेरी प्रिये तुम कहाँ कर रही हो विचरण ?

अरी यहाँ आओ बैठो तो, आता है देखो साजन !

वह आरोहन अवरोहन सब गाता है,

भटको और न सुंदरि आओ सम्मोहन !

है यात्रा का अंत वहीं है जहाँ मिलन,

हर सुजान का पूत जानता यह हर क्षण !

सर ऐ० : वाह ! वाह ! क्या बात है !

सर टो० : अच्छे रहे ! अच्छे रहे !

विदूषक : [गीत]

अरे प्रेम क्या है, जो है सो वर्तमान है,

फिर की जाने कौन, अरे अब, अब का सुख है,

अने वाला है अनजाना, जाने क्या है ?

रे विलंब में क्या समृद्धि है, आओ सुंदरि !

बीस वर्ष की युवती मेरा लो चुंबन त्वर !

यौवन क्या यह सदा रहेगा ? जाने क्या है ?

सर ऐ० : अपने सामंतीय गौरव की कसम, गजब की मिठास है
आवाज में !

सर टो० : अजी मन को छू जाये ऐसी आवाज है ।

सर ऐ० : क्या छूत है आवाज में । मिठास तो है ही !

सर टो० : अगर नाक से सुना जाये तो खुशबू आती है । पर क्या अब
इतना गायें कि आकाश गूंज उठे ? क्या हम ऐसा गायें कि रात
का पहरेदार उल्लू जाग उठे और हमारे गीत से देवस्तुतियाँ गाने
वाले बुनकर की तीनों आत्माएँ एक हो जायें ? बोलो करें
ऐसा ?

सर ऐ० : अगर आप मुझे खुश करना चाहते हैं तो जरूर ! मैं तो
तान पकड़ने में कुत्ता हूँ, फौरन पकड़ता हूँ ।

१. तीन आत्माएँ : शेक्सपियर के समय में अरस्तू के दर्शन का प्रचार था, जो हर व्यक्ति में तीन आत्माएँ मानता था—बनस्पति, पशु और बौद्धिक । बुनकर भी उस काल में समरस माने जाते थे । उनमें से कई तो फ्लेबिश कॉलबिनिस्ट थे जो अल्पा के ड्यूक के अत्याचारों के कारण भाग गये थे और देवस्तुतियाँ गाया करते थे ।

विदू० : पर श्रीमान्, होते हैं, कुछ कुत्ते पकड़े भी जाते हैं।

सर ऐ० : बस ! ठीक है। हमारा गाना हो—लुच्चा !

विदू० : श्रीमान् ! क्या आपका मतलब उससे है जो शुरू होता है—“चुप रह चुप रह लुच्चे दबके !” मुझे मजबूर होकर उसमें आपको लुच्चा कहना पड़ेगा।

सर ऐ० : तो यह कोई मेरे लिये ऐसा सुनने का पहला मौका नहीं है। हाँ विदूषक ! शुरू करो। (शुरू होता है।) चुप रह, चुप रह।

विदू० : अगर मैं चुप रह गया तो शुरू कैसे होगा ?

सर ऐ० : भई बाह ! यह तो जोर की रही। हाँ, चलो शुरू करो।
[गते हैं।]

मेरिया : (प्रवेश कर) यह क्या धमाचौकड़ी मचा रखी है ! मैं कहती हूँ काउण्टेस ने मालबोलियो को तुम सबको यहाँ से निकाल भगाने को भेजा है।

सर टो० : मेरी श्रीमती चीनी चोर, उसका नौकर गीत पुराना। हम हैं राजकाज के दूरदेश समझने वाले। और तीन की मिल बैठी है तिकड़म ! मैं क्या हूँ कोई परदेसी ! वही खून है मेरे भीतर ! बकबक मत कर !

[गता है।]

प्रिये ! प्रिये !

रहता था बेबीलोन में कोई एक !

विदू० : सच कहता हूँ, आज सर टोबी में कमाल की चतुराई आ गई है।

सर ऐ० : ज़रा जी लगे न, तो हम दोनों की बस पूछो मत। इनकी तो अक्ल पैनी हो जाती है, पर मैं तो ज़रा तड़क-भड़क में नहीं जाता।

सर टो० :

[गाता है ।]

ओ हो हो.....

दिसम्बर का बारहवाँ दिन.....

मेरिया : भगवान के लिये चुप रहिये ।

[मालबोलियो का प्रवेश]

मालबोलियो : श्रीमान् ! क्या आप लोग होश में नहीं हैं ? आपको हो क्या गया है ? क्या कायदे उठ गये और भले आदमियों का रहन-सहन जाता रहा ? यह आधी रात इस क्रूर शोरगुल मचाने के लिये है ? क्या आपकी राय में श्रीमती ओलीविया का मकान कोई सराय है, जहाँ आप गला फाड़ कर फ़ोश गाने गा सकते हैं ? क्या जगह, वक्त और मौके का आपको कोई ध्यान नहीं रह गया है ?

सर टो० : आप क्या समझते हैं गाने में हमें वक्त पर उतार-चढ़ाव का खयाल नहीं ? भाग जाओ !

मालबोलियो : सर टोबी ! अब मैं साफ़ खोलकर कहता हूँ । मालकिन ने कहा है कि आप उनके रिश्तेदार हैं इसलिये वे आप को यहाँ रखे हैं । मगर वे आपकी बुरी आदतों को नहीं सह सकतीं । अगर आप इन्हें छोड़ दें तो मजे से रहिये, वरना, उन्हें मजबूर होकर आपसे पीछा छुड़ाना ही होगा ।

सर टो० :

बिदा, प्यारे मीत, अब तो

जाना ही होगा !

मेरिया : नहीं, सर टोबी ! नहीं ।

बिदू० : इनकी आँखें बताती हैं कि अब दिन आ गये पास !

मालबोलियो : ऐसी बात है ?

सर टो० : पर मैं कभी भी मरूँगा, नहीं !

विदू० : सर टोबी ! यह झूठ है ।

मालबोलियो : वाह क्या तमीज़ है !

सर टो० : क्या मैं इसे जाने को कहूँ ?

विदू० : उसका नतीजा ही क्या ?

सर टो० : तो इसे बिना रहम के भेज दूँ ?

विदू० : नहीं, नहीं, ऐसा न करें ।

सर टो० : तो फिर सोचकर कैसे कहा कि हम बेसुरे हैं ! तुम ज़रूर यह सोचते हो कि तुम कोई ज़रूरी आदमी हो । और तुम यह समझते हो कि यह खुशी और मस्ती तुम्हारी सख्ती से ख़त्म हो जायेगी ।

विदू० : नहीं ! सच ! हम अब भी चाहें तो मसालेदार शराब पी सकते हैं ।

सर टो० : बिलकुल ठीक ! चले जाइये जनाब ! अपनी नौकरी की जंजीर को चमकाने में वक्त निकालिये । मेरिया ! ज़रा शराब लाना ।

मालबोलियो : अगर मालकिन के बारे में ज़रा भी सोचती हो मेरिया ! तो तुम इनके शर्मनाक कामों में मदद मत करना । मैं श्रीमती ओलीविया को सूचना दे दूँगा ।

[प्रस्थान]

मेरिया : जा-जा ! गधा !

सर ऐ० : इसे द्वन्द्व के लिये ललकारा जाये तो क्या बात रहे ! और फिर लड़ा न जाये । कैसा उल्लू बन जायेगा ।

सर टो० : यह ठीक रहेगा सर ऐन्ड्रू ! मैं तुम्हारे लिये इंतज़ाम करूँगा । लिख कर दे दूँ या ज़बानी ही कह दूँगा ।

मेरिया : अच्छे सर टोबी ! आज रात अपने ऊपर काबू रखिये ! इयूक का भेजा नौजवान आया था न ? तब से मालकिन आज कुछ परेशान नज़र आती हैं । श्रीमान् मालवोलियो को तो मैं अकेली समझा लूंगी । मैं तो उसे ऐसा बेवकूफ बनाऊँगी कि सारा ज़माना उस पर न हँस पड़े तो देखना । यह मत समझो कि बस बिस्तर पर चारों खाने चित्त हो जाने भर की अक्ल है मुझमें । देखना क्या करती हूँ ।

सर टो० : बताओ, हमें बताओ ! हमें समझाओ !

मेरिया : श्रीमान् ! यह बड़ा पवित्र बनता है, बिल्कुल ब्रह्मचारी ।

सर ऐ० : अगर यह सच है तो मैं इसे इतना मारूँ जितना कुत्ते को ।

सर टो० : किसलिये ? पवित्र होने के कारण ? कोई खास वजह भी तो होगी ?

सर ऐ० : कोई खास तो नहीं, वैसे वजह तो है ही ।

मेरिया : वह वैसे पवित्रतावादी नहीं, वह तो कुछ भी नहीं है, मौका-परस्त है, बस चाहता यह है कि लोगों में उसे ऊँचे दर्जे का समझा जाये । वह तो दरअसल बेवकूफ है, पर बनता जाने क्या है अपने को, जैसे जो है सो वही है । अपने को जाने समझता क्या है, और यह तो उसके दिल में जमी बैठी है कि जिसने भी उस पर नज़र क्या डाली, उसकी शराफ़त, मिलनसारी, मिठास पर कुर्बान होके रहेगा । मैं इसकी इसी कमज़ोरी का फ़ायदा उठाऊँगी और देखना कैसा बदला लेती हूँ ।

सर टो० : कैसे ? क्या करोगी ?

मेरिया : मैं कुछ उड़ती-उड़ती बातों के प्रेम पत्र लिख कर इधर-उधर छोड़ दूँगी, जिन्हें वह पा जाये । उसमें लिखा ऐसा जायेगा कि जिस रंग-रूप-हुलिया का बयान होगा, वह खुद उसी के-से होंगे ।

और मैं तो मालकिन की लिखावट जैसा ही लिखती हूँ। कभी-कभी तो हम दोनों बाद में यह भी नहीं बता पातीं कि यह हम दोनों में से किसकी लिखावट है।

सर टो० : शाबाश ! बहुत अच्छे ! सब साफ़ हो रहा है।

सर ऐ० : समझ रहा हूँ।

सर टो० : पत्रों को पढ़कर उसे लगेगा मेरी भतीजी उसके प्रेम में पड़ गई है, उसी ने लिखे हैं……

मेरिया : बस ! बस ! मेरा मतलब यही था।

सर ऐ० : और तुम उसे बेवकूफ़ बनाना चाहती हो।

मेरिया : बेवकूफ़ बनने में क्या शक है। बन के रहेगा।

सर ऐ० : क्या दिल्लगी रहेगी !

मेरिया : अजी बड़े ठाठ की दिल्लगी रहेगी, मैं कहती हूँ। मैं जानती हूँ यह नुस्खा उस पर काम कर जायेगा। जब सब हो जायेगा तो आप दोनों और विदूषक को ऐसी जगह ले जाऊँगी जहाँ से आप उसे पत्र उठाते हुए देख सकें। देखना क्या रंगत बदलेगी। अब सोने जाइये और अपनी योजना के शुभ परिणाम के स्वप्न देखिये। नमस्कार।

[प्रस्थान]

सर टो० : नमस्ते ! अजूबों की रानी !

सर ऐ० : सच कहता हूँ, बड़ी अच्छी औरत है।

सर टो० : अच्छे घर की है, और मुझे बहुत मानती है। लेकिन इससे होता भी क्या है ?

सर ऐ० : कोई थी जो मेरे बारे में भी बड़ा ऊँचा खयाल रखती थी !

सर टो० : सोने चलिये श्रीमान् ! आपने और धन मँगाया है न ?

सर ऐ० : अगर आपकी भतीजी मेरी नहीं होती तो बेकार मेरा इतना धन नष्ट हो जायेगा ।

सर टो० : नहीं, आपको और धन मँगाना चाहिये । आप अंत में उसे प्राप्त न करें तो मुझे बेवकूफ कहियेगा ।

सर ऐ० : और अगर वह न मिली तो फिर मुझ पर कभी भरोसा न कीजिये, जो कुछ भी हो जाये ।

सर टो० : बस, बस ! मैं ज़रा शराब गर्म करूँ । अब इतनी रात गये क्या सोना ? चलिये, चलिये ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[ड्यूक के महल का कमरा]

[ड्यूक, वायोला, क्यूरियो तथा अन्यो का प्रवेश]

ड्यूक : सुन्दर प्रभात है । आओ मित्रो ! मुझे कुछ संगीत सुनने दो । अच्छे सिज़ैरियो ! वही पुराना और प्यारा रात वाला गीत ! उसने कल कितनी सांत्वना दी थी ! जीवन के वर्तमान हलचलों से भरे संघर्षों से कितने परे ! एक ही कड़ी सही ! सुनवा दो वही हृदयहारी गीत !

क्यूरियो : रात वाला गायक उपस्थित नहीं है श्रीमान् ।

ड्यूक : वह कौन था ?

क्यूरियो : विदूषक फेस्टे श्रीमान् ! वह श्रीमती ओलीविया के पिता के समय में उनके पास उनका बड़ा मनोरंजन करता था । यहीं कहीं होगा ।

ड्यूक : उसे ढूँढो और वही गत बजने दो कुछ देर ।

[क्यूरियो का प्रस्थान]

[संगीत]

यहाँ आओ सजैरियो । सुंदर युवक ! यदि तुम कभी किसी स्त्री के प्रेम में पड़ जाओ तो प्रेम की सुखद यातना सहते समय अपने स्वामी के बारे में भी सोचना । सच्चे प्रेमी में जो वेदना होती है, उसे मुझमें देखो । प्रेमी बेचैन, चंचल, क्षण-क्षण में परिवर्तितमनस होता है, किंतु उसका प्रियाचितन कभी नहीं डोलता, वह स्थायी रहता है । यह संगीत कैसा लगता है तुम्हें ?

वायोला : प्रेम के सिंहासन हृदय को जाकर भंकार उठता है ।

ड्यूक : तुम तो खूब बोलते हो । मुझे विश्वास है कि यद्यपि तुम इतने तरुण दिखते हो, फिर भी तुम्हारी आँख किसी ऐसे मुख पर अटक चुकी हैं, जो तुम्हें अत्यंत प्रिय लगता है । ठीक बात है ? बताओ ?

वायोला : कुछ सीमा तक श्रीमान् ।

ड्यूक : जिससे तुम प्रेम करते हो वह कुमारी कैसी है ?

वायोला : श्रीमान् ! वह कुछ आपसे मिलती-जुलती है ।

ड्यूक : तब उसकी तुलना में तुम कही ज्यादा अच्छे हो । क्या उम्र है उसकी ?

वायोला : श्रीमान् की उम्र ही होगी ।

ड्यूक : तब तुम्हारे लिये तो वह बहुत बड़ी है । स्त्री का विवाह सदा उससे बड़े पुरुष से होना चाहिये । 'यदि पुरुष बड़ा हो, तो तरुणी तो उसके अनुकूल गुरुता धारण कर लेती है, इस प्रकार स्त्री को पतिप्रेम से वंचित नहीं होना पड़ता । कितना भी शक्ति और स्थिरता का गर्व क्यों न किया जाये, फिर भी यह सत्य है कि पुरुष की प्रकृति स्त्री की तुलना में इस विषय में अधिक चंचल और परिवर्तनशील होती है ।

१. स्वयं शेक्सपियर की पत्नी उससे उम्र में बड़ी थी ।

वायोला : हाँ श्रीमान् ! मेरा भी यही विचार है ।

ड्यूक : तो अपने से छोटी स्त्री ढूँढो ! वर्ना तुम देखोगे कि तुम्हारा प्रेम घट कर दूसरी दिशाओं में बह निकलेगा, क्योंकि स्त्री का रूप तो फूल का-सा रूप है, जो देखने वालों को अपने माधुर्य से क्षण भर मोह लेता है और फिर मुरझा जाता है ।

वायोला : हाय ! कितना सत्य है ! यह कितनी दुख की बात है कि वह अपनी पूर्ण सौंदर्य बेला में भी कभी-कभी मार जाती है ।

[क्यूरियो और विदूषक का प्रवेश]

ड्यूक : अरे आ गये ! रात वाला गाना फिर गाओ । सिज़ैरियो ! सुनना ! पुराना है, सरल है, अक्सर गिरजे की ब्रह्मचारिणियाँ और बुनकर इसे द्वारों पर बुनते बैठे हुए गाते हैं । कसीदा काढ़ती कोमल लड़कियों में भी चलता है । कितना सहज सत्य है इसमें ! प्राचीन काल के मनुष्यों में जैसा चलता था, वैसा ही कोमल प्रेम ! कितना छू जाता है मन को ।

विदू० : श्रीमान् आज्ञा है ?

ड्यूक : हाँ प्रारंभ करो ।

[संगीत]

विदूषक :

[गीत]

आ री मृत्यु निकट आ मेरे,
आ री मेरे पास !

वन की लकड़ी का सुंदर ताबूत वने रे
उसमें मेरा तन यह लेटे शांत वने रे,
व्यर्थ विलय में लय हो जाओ

ओ मेरे उच्छ्वास !

निष्ठुर रूपसि प्रेयसि का मारा है ये मन,

श्वेत वस्त्र फूलों पत्तों से रच दो निर्मम
मेरे जीवन की अंतिमतम

शय्या का सुखवास !

मृत्यु सत्य है मेरे मन को जितनी प्रियतम
उतनी नहीं किसी को देगी पीड़ा अनुपम
मेरे इस ताबूत स्याह के

कुसुम न धरना पास ।

कोई मत रोना हे मितवा ! मेरे शव पर,
मुझे कब्र में शांति चाहिये अप्रतिहतवर,
कोई मत बिखेरना मुझ पर

अपने व्याकुल श्वास !

विरह वेदना में कोई भी हृदय हार कर
सच्चा प्रेमी वहाँ न रोये धैर्य ढूँढ कर,
मैं इस प्रेम व्यथा का मारा

पीड़ा का अधिवास !

ड्यूक : अपने परिश्रम का यह उपहार लो ।

विद्व० : कोई कष्ट नहीं किया मैंने श्रीमान् ! मुझे तो गाने में आनंद
आता है ।

ड्यूक : तो उस आनंद की ही भेंट समझो ।

विद्व० : सच कहते हैं श्रीमान् ! सारे आनंदों का देर-अबेर करके
पुरस्कार अवश्य मिलता है ।

ड्यूक : अच्छा, अब तुम मुझे छुट्टी दो ।

विद्व० : वेदनामय देवता आपकी रक्षा करे। आपके वस्त्र ऐसे धूपछाँही
रेशम के हों जो आपके अंतस्थ भावों की परिवर्तनशीलता को
व्यक्त करते रहें। आप जैसी मनस्थिति के व्यक्ति को समुद्र-यात्रा

पर जाना चाहिये, जो वांछित दिशा में न बह सकें तो कहीं और सही, एक लक्ष्य न मिले, तो दूसरा ही प्राप्त कर लें।

[प्रस्थान]

ड्यूक : एकांत !

[क्यूरियो और सेवकों का प्रस्थान]

सिज़ैरियो ! मैं तुमसे फिर प्रार्थना करता हूँ कि एक बार फिर उस निष्ठुरता की रानी के पास जाओ। उससे कहना कि मैं उससे उसकी संपत्ति और धन के लिये प्यार नहीं करता। उससे कहना कि उसका वैभव मेरे लिये कोई मूल्य नहीं रखता। वह तो उसका रूप है जिसने मेरी आत्मा पर अपना सम्मोहन डाल दिया है।

वायोला : और यदि आपसे प्रेम न करे श्रीमान् ?

ड्यूक : मैं यह विश्वास नहीं कर सकता।

वायोला : किन्तु सत्य यही है श्रीमान् ! आपको इसे स्वीकार करना ही होगा। मान लीजिये एक स्त्री आपसे प्रेम करती है, शायद एक ऐसी है भी, और जैसे आप काउण्टेस के लिये व्याकुल हैं, वैसे ही वह आपके लिये है, और मान लीजिये आप इसे जान जाते हैं और उससे कह देते हैं कि आप उससे प्रेम नहीं करते, तो वह क्या करेगी ? क्या आपका उत्तर स्वीकार नहीं कर लेगी ?

ड्यूक : मेरे हृदय में ओलीविया के प्रति प्रेम की दारुण पीड़ा की शक्ति, जो मेरे अंतस् को इस प्रकार भकभोर रही है, कोई स्त्री इस संसार में नहीं भेल सकती। इतने विशाल और गंभीर प्रेम को कोई स्त्री अपने हृदय में समेट कर धैर्य धारण कर ले, इतना बड़ा हृदय वह कहाँ से लायेगी ? स्त्री का प्रेम प्रेम का आस्वादन प्राप्त करना मात्र है, उसमें व्यक्ति की संपूर्ण उत्कट लालसा नहीं होती, वह

एक बुभुक्षा है जो शीघ्र ही तृप्त हो जाती है, मन भर आता है, उचट जाता है, और अंत में विद्रोह कर उठता है। और दूसरी ओर, मेरा प्रेम, एक समुद्र है जो तृप्त नहीं हो सकता, चाहे वह कितना भी क्यों न भर दिया जाये। ओलीविया के प्रति मेरे प्रेम की किसी स्त्री के प्रेम से तुलना नहीं की जा सकती।

वायोला : हाँ, किन्तु मुझे निश्चय है.....मैं जानता हूँ.....

ड्यूक : क्या जानते हो ?

वायोला : स्त्री का प्रेम पुरुष के प्रेम से कम उत्कट नहीं होता। वे वास्तव में पुरुषों की भाँति ही सच्ची होती हैं। मेरे पिता की एक लड़की थी, जिसे एक पुरुष से बहुत प्यार था, और शायद ऐसा जैसा मुझे आपसे होता, यदि मैं स्त्री होता।

ड्यूक : और उस प्रेम का इतिहास क्या है ?

वायोला : कुछ नहीं श्रीमान् ! उसने कभी अपना प्रेम व्यक्त नहीं किया, भीतर ही भीतर मुरझाती रही, उसका सुलगता प्रेम भीतर ही भीतर उसके रूप को सुलगा कर नष्ट करता रहा, जैसे गुलाब को कीड़ा लग गया हो, यहाँ तक कि उसकी माधुरी विलीन हो गई। उसने धैर्य और सहिष्णुता से सारी वेदना का सहन किया, और संसार ने केवल उसका मुस्कराता हुआ चेहरा देखा। क्या आप उसे सच्चा प्रेम नहीं कहेंगे ? हम पुरुष अपने प्रेम व्यवहार में बड़े गर्वीले होते हैं, किन्तु हमारी अभिव्यक्ति केवल शब्दों का आडम्बर होता है, शायद ही हमारे कर्तव्य उनकी ऊँचाइयों को छू पाते हैं।

ड्यूक : तो क्या तुम्हारी बहिन की प्रेम में मृत्यु हो गई ?

वायोला : मेरे घर में मेरे सिवाय कोई लड़की नहीं, न कोई भाई। मैं नहीं कह सकता। शायद यह सब गलत है। श्रीमान् ! क्या मैं

काउण्टेस के पास आपका संदेश ले जाऊँ ?

ड्यूक : हाँ। वही मैं कहना चाहता था। शीघ्र जाओ उसके पास। यह अमूल्य भेंट लेते जाओ। उससे कहना कि उसके प्रति मेरा प्रेम कभी भी नहीं हटेगा, न भुकेगा, न वह अस्वीकृति को ही सह सकेगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[ओलीविया का उपवन]

[सर टोबी, सर ऐन्ड्रू और फेबियन का प्रवेश]

सर टो० : फेबियन ! हमारे साथ आओ।

फेबि० : आ रहा हूँ श्रीमान् ! मैं तो मर जाऊँगा जो इस दिल्लगी में से कुछ भी मेरे देखने से छूट गया।

सर टो० : क्या इस घृणित लुच्चे और नीच को अपमानित होते देख कर तुम्हें हार्दिक प्रसन्नता नहीं होगी ?

फेबि० : क्या कहते हैं ! खुशी दिल में न समायेगी। भालू को भड़काने के तमाशे के वक्त इस नीच ने मुझे काउण्टेस के सामने बड़ा नीचा दिखाया था।

सर टो० : तो उसे चिढ़ाने को हम फिर भालू को ले आयें। और फिर उसका तबतक गहरा मजाक उड़ायें। क्या राय है सर ऐन्ड्रू ?

सर ऐ० : अगर हम ऐसा नहीं करते, तो हमारे लिये इससे बड़े दुख की क्या बात हो सकती है !

सर टो० : ये आ गई शैतान ?

[मेरिया का प्रवेश]

कहो क्या हाल है हिन्दुस्तान की धातु !'

मेरिया : आप तीनों भाड़ी के पीछे छिप जाइये । मालबोलियो इधर ही आ रहा है । पूरे आध घंटे उसने धूप में खड़े होकर अपनी छाया में अपने बड़े-बड़े पहलू बदल कर अपना अध्ययन किया है । उसे देखने में तो मज्जाक की इंतहा है । मुझे यकीन है जो खत मैंने उसके लिये डाला है, उसे पढ़ कर तो वह बिल्कुल उल्लू हो जायेगा । छिप जाइये, वरना मज्जा किरकिरा हो जायेगा । (पत्र फेंक कर) यहाँ गिरा ! मछली इधर ही लासे पर आ रही है । काँटा अब लग जाना चाहिये ।

[मालबोलियो का प्रवेश]

मालबोलियो : मौके की बात है, महज मौके की । मेरिया ने मुझसे एक बार कहा था कि काउण्टेस का रुझान मेरी तरफ है । वह तो यह भी कहती थी कि अगर मालकिन किसी को पसन्द करेंगी, तो ऐसे को जो मुझ जैसा लगता होगा । और फिर, यह तो सच है कि उसकी जो ऊँची राय मेरे बारे में है वह और किसी नौकर के बारे में नहीं । तो मैं इस सबका मतलब क्या निकालूँ ?

सर टो० : इस बदमाश का हौसला तो देखो ।

फेबि० : श ! श ! चुप ! उसका घमंड कैसा उसे फुला रहा है, क्या मुर्गे की-सी अकड़ी हुई चाल चल रहा है ?

सर ऐ० : कसम से इस लुच्चे की तो ऐसी पिटाई करूँ !

सर टो० : शांत रहिये !

मालबोलियो : और मैं काउण्ट मालबोलियो बन गया तो ?

सर टो० : अरे बदमाश !

सर ऐ० : गोली मार दो, इसमें गोली !

१. हिन्दुस्तान उन दिनों बहुत धनी देश माना जाता था ।

सर टो० : चुप ! चुप !

मालबोलियो : यह नहीं कि ऐसे पहले कभी नहीं हुआ। स्टार्ची की मालकिन ने वस्त्रागार के अफसर से विवाह किया था।

सर ऐ० : मारो इस नीच को ! शैतान !

फेबि० : शांति ! कैसा गौर से सोच रहा है वह। देखो तो कैसे हवा में उड़ रहा है।

मालबोलियो : शादी के तीन महीने बाद जब मैं ठाठ से बैठूँगा.....

सर टो० : गुलेल होती तो आँख फोड़ देता इसकी।

मालबोलियो : मखमल का ठाठ का चोगा पहनकर, अपने अफसरों को बुलाता हुआ मैं, शयनागार से निकल कर, जहाँ मैं ओलीविया को छोड़कर आया होऊँगा.....

सर टो० : बिजली गिरे, ओले पड़ें !

फेबि० : ज़रा चुप रहिये।

मालबोलियो : और तब अधिकार का सुख पाऊँ। और तब गंभीरता से हर एक को देखकर, मैं उनके सामने ऐसा बनूँगा कि अब हमारे संबंध बदल गये, और उन्हें अपनी औकात समझनी चाहिये। तब मैं अपने चचिया समुर टोबी को बुलाऊँगा।

सर टो० : तवियत करती है इसे जेल में डाल दूँ।

फेबि० : चुप रहिये न ? चुप रहिये।

मालबोलियो : और तब, मेरे अनेकों नौकर उसे लेने दौड़ेंगे, तबतक मैं गंभीर बन जाऊँगा, या अपनी घड़ी या अपने किसी कीमती हीरे को उँगलियों में घुमाता रहूँगा। तब सर टोबी पास आयेगा और मुझे सलाम करेगा।

सर टो० : इसका तो क़त्ल कर देना चाहिये।

फेबि० : खामोश ! हम पकड़ में नहीं आने चाहियें, चाहे कितनी ही

भड़काने वाली बात क्यों न हो ।

मालबोलियो : तब मैं अपना हाथ उसके सामने बढ़ाऊँगा और अपनी सहज मुस्कान छोड़ कर कठोर बन जाऊँगा ।

सर टो० : और टोबी तेरे मुँह पर फ़ौरन तमाचा न जड़ देगा ?

मालबोलियो : कहूँगा, मेरे अच्छे संबंधी ! भाग्य ने जो मुझे तुम्हारी भतीजी के पति के स्थान पर होने का अवसर दिया है, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ ।

सर टो० : अच्छा !

मालबोलियो : तुम्हें अपनी शराबखोरी की हरकतें ठीक करनी चाहियें ।

सर टो० : ओ गुण्डे !

फेबि० : जरा ठहरिये न ? वरना हमारा खेल चौपट हो जायेगा ।

मालबोलियो : और तुम अपना कीमती वक्त उस बेवकूफ़ सर के साथ गँवाते हो !

सर ऐ० : मुझसे मतलब है इसका ?

मालबोलियो : हाँ सर ऐन्ड्रू ही !

सर ऐ० : मैं जानता था वह मेरा नाम लेगा । मुझे बहुत-से लोग बेवकूफ़ कहते हैं ।

मालबोलियो : (पत्र देख कर) यह क्या मामला है ?

फेबि० : अब मुर्गा जाल के पास आ गया ।

सर टो० : चुप रहो ! काश वह जोर से पढ़े तो लुत्फ़ आ जाये !

मालबोलियो : (पत्र ले कर) कसम से ! यह तो श्रीमती की लिखावट है । यह तो अक्षर-अक्षर उनका ही है । वह ऐसे ही तो लिखती हैं । इसमें कोई शक नहीं ।

सर ऐ० : क्या मतलब ?

मालबोलियो : (पढ़ता है) "अनजाने प्रिय ! मेरी शुभकामनाएँ लो ।"

ठीक उनकी ही बात है। मैं मुहर तोड़ता हूँ। हाँ! उन्हीं की मुहर है इस पर। यह तो काउण्टेस का ही पत्र है। पता नहीं, किसको लिखा गया है!

फेबि० : यह पत्र तो इसका दिल फड़का देगा।

मालबोलियो : (पढ़ता है।) “प्रेम का देवता जानता है मैं उससे प्रेम करती हूँ, पर उसका नाम न लूंगी। मेरे होंठो, भूल न कर बैठना!” नाम न लूंगी? आगे क्या है? छंद बदल गया अब। होंठो, भूल न कर बैठना! तो क्या मालबोलियो! यह तेरे लिये ही लिखा गया है?

सर टो० : अरे बदमाश को फाँसी लगनी चाहिये!

मालबोलियो : (पढ़ता है।)

मेरा कैसा भाग्य है कि जहाँ मुझे
पूजा करनी चाहिये,
वहाँ मैं आज्ञा देती हूँ।
मेरी मजबूर खामोशी मेरे दिल को
काट-काट जाती है।
मेरा शरीर, आत्मा, सब पर
एम. ओ. ए. आई.' का
संपूर्ण अधिकार है।

फेबि० : क्या सिडीपन की पहेली है।

सर टो० : कमाल की औरत है मेरिया, मैं कहता हूँ।

मालबोलियो : एम. ओ. ए. आई. ने तो मुझ पर अधिकार कर लिया।
सोचें तो सही।

फेबि० : उसने इसे पचाने को कैसा जहरीला खाना दिया है।

१. M. O. A. I. अंग्रेजी के अक्षर।

सर टो० : अब देखो शिकरा गंध पाके कैसा उड़ा जा रहा है !

मालबोलियो : “जहाँ मुझे पूजा करनी चाहिये, वहाँ मैं आज्ञा देती हूँ।”

क्यों ? वह मुझे आज्ञा क्यों नहीं दे सकती ? मेरी मालकिन है।

क्या मैं उसकी नौकरी में नहीं हूँ ? इसका मतलब तो ज़ाहिर है। कोई मामूली आदमी भी समझ सकता है। कोई उलझन नहीं है। इन सारे खतों का मकसद क्या है ? ठहरो ! एम. ओ.

ए. आई.

सर टो० : अब घबराया। देखें कैसे तोड़ता है इसे।

फेबि० : शिकारी कुत्ता तो भोंकेगा ही, जैसे असली शिकार सूँघ लिया हो !

मालबोलियो : एम—मालबोलियो ! एम—मेरे नाम का पहला अक्षर।

फेबि० : मैंने कहा था न यही कहेगा ? कैसी ग़लत गंध पाई है कुत्ते ने ?

मालबोलियो : एम...पर आगे क्या है ? यह तो ठीक नहीं। ए आना चाहिये था, ओ ए से पहले कहाँ से आगया ?

फेबि० : अरे आखीर में ओ नहीं ओह ही सुनाई पड़ेगा।

सर टो० : ज़रूर। वर्ना मैं इसे तब तक ठोकूंगा जब तक यह ओह न कर जाये !

मालबोलियो : और उसके बाद आई !

फेबि० : हाँ। और देख तो कितनी लगी है पीछे आँखें यहाँ आई। अभी जो बेइज़्जती होगी। वह तेरी खुशहाली के पीछे ही चली आ रही है।

मालबोलियो : एम. ओ. ए. आई. यह तो कुछ मामला जमा नहीं—पहले तो सीधा मामला था। लेकिन सोच कर देखूँ तो यह मुझ पर लागू तो होता है, क्योंकि मेरे नाम में यह सारे अक्षर हैं। अरे कविता के बाद गद्य भी लिखा है। (पढ़ता है।) “अगर यह

तुम्हारे हाथों में पड़े तो सोचो ! भाग्य ने मुझे ऊँची जगह दी है, परन्तु महानता से डरो मत । कुछ महानता में जन्म लेते हैं, कुछ उसे प्रयत्न करके प्राप्त करते हैं और किसी-किसी पर वह जबरन लाद दी जाती है । भाग्य तुम्हारी ओर है । संपूर्ण तन्मयता से उसका स्वागत करो । और नये जीवन के अनुकूल बनने के लिये अपना संकोच छोड़ दो । अपनी लघुता का त्याग करो । एक चाचा के प्रगट विरोधी बनो, नौकरों से कठोर बन जाओ, और भारी-भारी शब्दों और विचारों से अपनी भाषा को गम्भीर बनाओ । तुम्हें वही सलाह दे रही है जो तुम्हें चाहती है । मत भूलो किसने तुम्हारे पीले मोज़ों की तारीफ़ की थी और किसने कहा था कि उसके सामने जाओ तो सदा गेटिस को आड़ी करके पहनो । विश्वास करो, सौभाग्य निश्चित है, यदि तुम स्वीकार करो । अन्यथा सेवक बने रहो और स्वीकार करो कि तुम उन्नति करने में समर्थ नहीं हो । बिदा । वह, जो अपनी जगह तुम्हें देकर, तुम्हारी जगह लेना चाहती है । तुम्हारी भाग्यशीला —अभागिनी ।”

अरे कितना स्पष्ट है, दिन के उजाले में और क्या दिखेगा ? अब मैं गर्व करूँगा, बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ूँगा और सर टोबी का विरोध करूँगा, अपने नीच मित्रों को दबाऊँगा और वही करूँगा जो पत्र में लिखा है । यह कोई कल्पना नहीं, मैं बेवकूफ़ नहीं बन रहा हूँ । न मैं अपने को छल रहा हूँ । यह तो साफ़ है कि काउण्टेस मुझे चाहती है । उसने हाल में मेरे पीले मोज़ों की तारीफ़ भी की थी और आड़ी गेटिसों की भी । और अगर अब मैं यह आदतें जारी रखूँ तो वह खुश होगी ! ओ अच्छे ग्रहो ! इस सौभाग्यप्रदान के लिये मेरा धन्यवाद ग्रहण करो !

मैं गर्वीला, कठोर हो जाऊँगा, पीले मोजे, आड़ी गेटिस पह-
नूँगा, और शीघ्र ही। जूपीटर देवता और ग्रहो ! तुम सत्य
हो ! अरे अभी कुछ और भी लिखा है ! (पढ़ता है।) “तुम मुझे
न पहचान सको यह असंभव है। यदि तुम्हें मेरा प्रेम स्वीकार है
तो मुस्कानों से प्रगट करो। मुस्कान तुम्हें कितनी जँचती है।
हमेशा मुस्काया करो, मेरे प्रियतम, सदैव, जब भी मेरे सामने
आओ !” धन्य जूपीटर ! मैं सदा मुस्कराऊँगा। मैं तुम्हारी हर
बात मानूँगा।

[प्रस्थान]

फेबि० : फारस के शाह की दौलत कोई मुझे दे तब भी मैं इस दिल्लगी
को देखे बिना न रहूँगा !

सर टो० : मैं तो इस जबर्दस्त मज्जाक से कायल होकर इस मेरिया
से शादी करूँगा।

सर ऐ० : मैं भी यही कर सकता हूँ।

सर टो० : और बस ऐसी एक और दिल्लगी कर दिखाये, इससे ज़्यादा
मैं उससे कुछ चाहता भी नहीं।

सर ऐ० : यही मेरा हाल है।

फेबि० : देखो ! वह आई बेवकूफों के लिये जाल डालने वाली।

[मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : इधर आ जाओ मेरी तरफ़।

सर ऐ० : नहीं मेरी ओर।

सर टो० : मैं तुम्हारे लिये अपनी आज़ादी खो सकता हूँ। तुमने मुझे
क़ैद कर लिया है।

सर ऐ० : बस यही मेरा हाल है।

सर टो० : तुमने उस ग़रीब के सामने क्या सुपने फैला दिये हैं, जब

उसे लगेगा यह सब झूठ था तो वह पागल हो जायेगा ।

मेरिया : सच कहो ? चाल चल गई ? बैठी !

सर टो० : अरे शराब चढ़ जाये जैसे दाई पर !

मेरिया : अगर मज़ाक का नतीजा देखना है तो उसे तब देखो जब वह काउण्टेस के सामने जाये । वह पीले मोज़े पसंद नहीं करती और वह वही पहनेगा । और आड़ी गेटिसों से तो उसे सख्त नफरत है । और फिर वह मुस्करायेगा, मुस्कान तो काउण्टेस की परेशानी की हालत में उन्हें ताज्जुब और गुस्से, दोनों से भर देगी । देखना चाहते तो मेरे पीछे चले आओ !

सर टो० : अरी चल प्यारी शैतान, हम तो इसे देखने नरक में भी चलें ।

सर ऐ० : मैं भी चलता हूँ ।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[ओलीविया का उपवन]

[वायोला और बाजे के साथ विदूषक का प्रवेश]

वायोला : भगवान तुम्हारा भला करे दोस्त ! क्या तुम गा-बजाकर अपनी रोज़ी कमाते हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान् ! मुझे गिरजे से मिलती है ।

वायोला : तो क्या तुम पादरी हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान् ! मुझे गिरजे से रोज़ी इसलिये मिलती है कि मैं गिरजे के पास रहता हूँ ।

वायोला : इस तरीके की बात से मतलब निकला कि बादशाह भिखारों के पास सोता है, अगर भिखारी कहीं पास रहता हो तो ! है न ? या कहो गिरजा तुम्हारे ढोल के पास बसा है ?

विदू० : बिलकुल श्रीमान् ! आजकल तो दुनिया बड़ी चतुर हो गई है । लोग बातों की ऐसी खाल निकालते हैं कि मुलायम दस्तानों की तरह लफ़्ज़ों को चाहे जिधर मोड़ देते हैं ।

वायोला : बिलकुल ठीक ! जिन्हें लफ़्ज़ों से खेलने की आदत हो वे तो आसानी से चकमा दे जाते हैं ।

विदू० : अगर ऐसा है तो मेरी तो यह इच्छा है कि मेरी बहन का कोई नाम ही न हो ।

वायोला : ऐसी इच्छा क्यों करते हो ?

विदू० : क्योंकि उसका नाम भी एक शब्द होगा, और तुम कह ही चुके हो

उससे खेला जा सकता है। पर आजकल सब शब्द असल में लुच्चे हो गये हैं, उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

वायोला : साबित करो इसे।

विदू० : सच तो यह है श्रीमान् ! मैं साबित तब तक नहीं कर सकता जब तक शब्दों का प्रयोग न करूँ और शब्द है धोखेबाज, तो अपनी ठीक बात को प्रमाणित करने को मैं उनका प्रयोग नहीं कर सकता।

वायोला : सचमुच ! तुम तो बड़े मस्त और मजेदार आदमी हो, जो कुछ चिंता नहीं करता कि क्या होगा, क्या हो रहा है !

विदू० : नहीं श्रीमान् ! यह ग़लत है। कुछ चीज़ों की फिक्र मैं करता हूँ, पर कसम से आप उनमें से नहीं हैं। मैं तो यही चाहता हूँ कि जो मैं आपको कुछ नहीं समझता, वह आपको कुछ न समझने लायक ही बना दं, क्योंकि फिर आपको देखने की परेशानी से भी मैं बच जाऊँगा।

वायोला : क्या तुम श्रीमती ओलीविया के मूर्ख नहीं हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान्। कतई नहीं। श्रीमती ओलीविया में मूर्खता कहाँ। वे मूर्ख क्यों रखें ? जब तक उनकी शादी न हो जाये !! पतियों के लिये मूर्ख ऐसे ही हैं, जैसे बड़ी मछली के लिये छोटी, दोनों एक-सी। पति ठहरे बड़े ! मैं असल में उनका मूर्ख नहीं, मैं तो उनके पास शब्दों से खिलवाड़ करने वाला हूँ।

वायोला : मैंने तुम्हें हाल ही में ड्यूक ऑरसिनो के यहाँ देखा था।

विदू० : मूर्खता पृथ्वी पर कहाँ नहीं है ? मुझे तो यह सुन कर बड़ा दुख होगा जो मैं सोचूँ कि वह मेरी श्रीमती के पास अधिक और आपके मालिक के यहाँ कम रहती है। क्या मैंने आपको बुद्धिमान ड्यूक के समीप ही नहीं देखा था ?

वायोला : अरे, तुम तो मुभी पर हमला कर बैठे ! मुझे छोड़ो ! यह लो अपनी भेंट !

[एक सिक्का बेती है ।]

विदू० : हे भगवान ! अगली बार जब बाल बँटें तो इनको एक दाढ़ी दे देना ।

वायोला : सच ! मैं कहूँ, मुझे तो एक के बिना बड़ी बेचैनी रहती है ।

(स्वगत) हालाँकि मैं नहीं चाहती कि मेरी ठोड़ी पर बाल उग आयें ! (प्रगट) तुम्हारी मालकिन भीतर हैं ?

विदू० : क्या यह दो भेंटें कुछ नहीं कर दिखायेंगी ?

वायोला : बशर्ते तुम उनका इस्तेमाल करो ।

विदू० : जरूर करूँगा ! तुम्हारी खबर मालकिन को देता हूँ और प्रयत्न करूँगा कि मालकिन का मालिक से मेल हो जैसे फ्रिजिया के पैण्डोरस ने ट्रौइलस का क्रैसिडा से कराया था ।

वायोला : ओह ! अब समझा ! किस सफाई से माँग पेश की गई !

[सिक्का बेती है ।]

विदू० : कोई मुश्किल काम नहीं श्रीमान् ! मैंने माँगा ही क्या है ? ट्रौइलस से मिलाप कराने को क्रैसिडा' को माँगना, एक भिखारी से भीख माँगना ही तो है, क्योंकि क्रैसिडा भिखारिन ही तो थी । पहला सिक्का ट्रौइलस का, दूसरा अब मँगैत का क्रैसिडा का । मालकिन के पास जाऊँगा, घर ही हैं वे, उनसे कहूँगा आप कहाँ से आये हैं, आपका नाम क्या है, क्या काम है, अजी मैं अपने रास्ते के बाहर जाकर बोलूँगा ।

[प्रस्थान]

१. प्रेमी ट्रौइलस—क्रैसिडा प्रेमिका—शेक्सपियर ने इन पर अलग से नाटक लिखा है । यह ग्रीक थे । प्राचीन ।

वायोला : यह भी खासा विदूषक है । इस काम को निबाहने के लिये एक सीमा तक चतुरता की आवश्यकता तो है । विदूषक जिस दर्जे के लोगों से मिलता है, उसे उन्हीं के दर्जे के लफ्जों का इस्तमाल करना पड़ता है । मौका देखकर मजाक करना पड़ता है । उनका मिजाज, तबियत, सब देखना पड़ता है । शिकरे की तरह हर मौके पर झपटना भी तो पड़ता है उसे । इस साधना में क्या किसी अन्य कला की विशेषता जानने के परिश्रम से किसी तरह की कमी है ! बुद्धिमान विदूषक की मौके की चोट नायाब होती है, किंतु वे बुद्धिमान, जो मूर्खता में डोल गये हैं, उनकी मूर्खता का प्रदर्शन कर दिया जाये तो बहुत आहत हो उठते हैं ।

[सर टोबी और सर ऐन्ड्रू का प्रवेश]

सर टो० : भगवान तुम्हारी रक्षा करें ।

वायोला : और आप की भी ।

सर ऐ० : ईश्वर आपको बचाये ।

वायोला : और आपको भी । मैं आपका विनीत सेवक हूँ ।

सर ऐ० : ठीक है आप ऐसे ही रहें । और मैं आपका हूँ ।

सर टो० : आप घर में जायेंगे भीतर ? श्रीमती ओलीविया ने आपको भीतर जाने की आज्ञा दी है, यदि आपको कुछ काम हो ।

वायोला : मैं उधर ही जा रहा हूँ श्रीमान् ! आपकी भतीजी ही मेरी यात्रा की मंजिल है ।

सर टो० तो फिर पाँवों का प्रयोग करो युवक ! चलाओ ।

वायोला : मेरे पाँव मुझे अच्छे चलाते हैं, आपका अर्थ भेलने से अधिक ! उनका क्या प्रयोग करूँ ?

सर टो० : मेरा मतलब था आप प्रवेश करने में उनका प्रयोग करें ।

वायोला : तो लीजिये उत्तर है—गति और प्रवेश । पर वे तो यहीं आ गई ।

[ओलीविया और मेरिया का प्रवेश]

हे परम योग्या रमणी ! स्वर्ग तुम पर अपनी समृद्धि की वर्षा करता है ।

सर ऐ० : यह नौजवान दरबारों की चटकीली जबान जानता है । समृद्धि की वर्षा । सुना आपने !

वायोला : जो संवाद में लाया हूँ वह आपसे ही और एकांत में ही कहा जा सकता है ।

सर ऐ० : मैं इसकी हर बात पर गौर कर रहा हूँ । मौके पर उनका प्रयोग भी करूँगा अपने लिये ।

ओलीविया : मुझे एकान्त चाहिये । उपवन का द्वार बन्द कर दो ।

[सर टोबी, सर ऐन्ड्रू और मेरिया का प्रस्थान]

मैं आपका स्वागत करती हूँ ।

वायोला : मेरी विनीत और कर्तव्यपरायण सम्मान भावना को स्वीकार कीजिये ।

ओलीविया : आपका नाम क्या है ?

वायोला : श्रीमती ! सेवक का नाम सिज़ैरियो है ।

ओलीविया : नहीं श्रीमान् ! संसार को इस निम्न कोटि की चाटुकारिता ने कभी आनन्दित नहीं किया । आप मेरे सेवक नहीं । आप ड्यूक के सेवक हैं ।

वायोला : अतएव आपका सेवक हूँ श्रीमती, क्योंकि ड्यूक आपके विनम्र सेवक हैं । अतः मैं जो उनका सेवक हूँ, आपही का सेवक तो हुआ ।

ओलीविया : जहाँ तक ड्यूक का प्रश्न है, मैं उनकी नहीं सुनना चाहती,

और उनके बारे में तो मैं सोचती भी नहीं। कभी नहीं चाहती कि उनके दिमाग में मेरा खयाल भी टिके।

वायोला : प्रिय श्रीमती ! मेरे यहाँ आने का उद्देश्य यही है कि आप उनके बारे में कुछ मुलायमियत से सोचें, मैं आपको उसकी ओर प्रेरित करूँ।

ओलीविया : क्षमा करिये। मैं प्रार्थना करती हूँ। क्या मैंने पहले ही आपसे नहीं कह दिया कि ड्यूक के बारे में मैं आपसे कोई बात नहीं करूँगी ? यदि आपकी प्रार्थना का कोई दूसरा विषय हो, तो मैं स्वर्ग की मुमधुर ध्वनियों का तिरस्कार करके भी उसे सुनने को तत्पर हूँ।

वायोला : श्रीमती.....

ओलीविया : ठहरिये। मुझे कहने दीजिये। आपके यहाँ से जाने पर, जब आपने मुझ पर जादू कर दिया, मैंने अपने मुख्य सेवक को आपके पीछे अंगूठी देकर भेजा, उमे धोखा दिया और आपसे मैंने ऐसा व्यवहार किया जो शोभनीय शायद नहीं है। आप मेरे बारे में कैसी भी कठोर धारणा क्यों न बना ले मैं आपकी दया पर हूँ। मैंने जो चालाकी से अंगूठी भेजी थी, वह आपकी न थी, पर आपने ले ली, मैंने विवश किया था न ? आप मेरे बारे में क्या सोचते होंगे ? कहीं आपने मेरे चरित्र को दूषित तो नहीं समझा ? कहीं उसी पर आप कड़ा प्रहार तो नहीं करना चाहते ? मैंने बहुत कह लिया ! आपके सामने सब खोल दिया। आपकी आँखों के सामने मेरा हृदय है, देखिये आरपार ! भीने रुमाल-सा ! मैंने स्वीकार किया है, आप अपनी कह दें।

वायोला : मुझे आपके लिये घोर शोक है।

ओलीविया : यह तो मेरे प्रति प्रेम का एक पग और है न ?

वायोला : नहीं, एक भी नहीं। यह तो साधारण-सी बात है कि हम शत्रु के लिये भी दुख मनाते हैं।

ओलीविया : तब मैं आपसे दया की भीख नहीं माँगूंगी ! मैं संसार को प्रसन्नमुख दिखाऊँगी। अहंकार और अभाव संसार में बहुधा साथ-साथ दिखाई देते हैं। किंतु यदि हमें पराजित ही होना है, तो वही धन्य भाग्य कि शत्रु भी समर्थ और श्रेष्ठ हो जिसका हम सम्मान कर सकें। (घंटा बजता है।) गुजरता वक्त डाँटता है कि क्यों मैं आपके साथ उसे नष्ट कर रही हूँ। नौजवान ! डरो मत ! मैं तुम्हें नहीं चाहती। फिर भी जब तुम तनिक और बड़े हो जाओगे, और तुम्हारी बुद्धि का भी विकास हो जायेगा, जिस युवती से भी तुम विवाह करोगे, संभवतः उसे एक बहुत सुंदर पति प्राप्त होगा। अब आप जा सकते हैं। पश्चिम की ओर आपका रास्ता है।

वायोला : तो पश्चिम को चलूँ। श्रीमती ! तुम समृद्ध हो। तो क्या ड्यूक ऑरसिनो को कोई संवाद नहीं भिजवाओगी ?

ओलीविया : तनिक ठहरो। मुझे सच बताना, मैं प्रार्थना करती हूँ, तुम्हारी मेरे बारे में राय क्या है ?

वायोला : यही कि तुम्हें अपने बारे में मुग़ालता है और तुम अपने को जो समझती हो, वास्तव में उससे बिलकुल अलग हो।

ओलीविया : ठीक यही मैं तुम्हारे बारे में सोचती थी।

वायोला : तुम बिलकुल ठीक हो। मैं जो दिखता हूँ, वह मैं सचमुच नहीं हूँ।

ओलीविया : काश ! तुम वह होते जो मैं चाहती हूँ।

वायोला : तो क्या जो अब हूँ उससे वह अच्छा होता ? हो सकता है, क्योंकि इस समय तो मैं आपके लिये एक विदूषक ही हूँ।

ओलीविया : आह ! गुस्से में कितनी खूबसूरती आ गई है ! नफ़रत

की यह निगाह कितनी दिलफरेब है ! चाहे प्रेम को कोई कितना ही छिपा ले, लेकिन हत्या की तरह वह तो प्रगट होकर रहता है । दिन की धूप की तरह निकलता है, चाहे उसे अँधेरे में ही क्यों न छिपाने का यत्न किया जाये ! मैं कहती हूँ युवक ! स्त्री को जो भी प्रिय हो सकता है, फूलों की सुंदरता, कौमार्य की पवित्रता, समस्त गुण और विशुद्धता, जो भी तुम सोच सकते हो, मैं उससे अधिक, तुम्हें प्यार करती हूँ, कि न तो मेरा विवेक, न मेरी नारीत्व की चतुरता ही उसे छिपा सकती है । चाहे तुम कितनी भी घृणा क्यों न करो ! पर यह न कहना कि क्योंकि मैंने प्रेम प्रगट किया है इसलिये तुम मुझे प्यार नहीं करोगे ! अपनी घृणा को समेट लो युवक ! प्रेम का सदैव मूल्य देना चाहिये ! अयाचित का भी प्रत्युत्तर है, परन्तु जब वह स्वयं समर्पण बन कर आया हो, तब तो उसका महत्त्व कहीं अधिक बढ़ जाता है ।

बायोला : श्रीमती ! अपनी ओर से यही कहूँगा कि मेरे समस्त अस्तित्व में एक विचार है, एक स्नेह है, और उसका लक्ष्य कोई स्त्री नहीं है, कोई रमणी कभी मेरे मन को विचलित नहीं कर सकेगी, मैं ही अपने को विचलित करने में समर्थ हूँ । बिदा, श्रीमती ! अब कभी अपने स्वामी पर दया दिखाने की प्रार्थना मैं आपसे नहीं करूँगा ।

ओलीविया : पर फिर आना । कहीं ऐसा ही हो कि शायद तुम मुझे उसी ओर प्रेरित कर सको, जिसे अब मेरा हृदय घृणा करता है ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[ओलीविया के घर का कमरा]

[सर टोबी, सर ऐन्ड्रू और फेबियन का प्रवेश]

सर ऐ० : कसम से, अब यहाँ ज़रा भी नहीं रुक सकता ।

सर टो० : वाह क्या ज़हर है ! कोई वजह भी है ?

फेबि० : सर ऐन्ड्रू ! आखिर बात तो बताइये ?

सर ऐ० : अजी मैंने तुम्हारी भतीजी को काउण्ट के भेजे आदमी पर उस इश्क की बौछार करते देखा जो मुझे पर होनी चाहिए थी । वहीं उपवन के कुंज में ।

सर टो० : तो उसने तुम्हें वहाँ देखा ? यह बताओ ।

सर ऐ० : ऐसे देखा, जैसे मैं तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ ।

फेबि० : तब तो तुम्हारे प्रति उनका प्रेम है, यह इसका सबूत है ।

सर ऐ० : कैसा सबूत ? मुझे गधा बनाना चाहते हो ?

फेबि० : देखिये मैं इसे तर्क देकर समझाता हूँ । ऐसा उचित समझ लेंगे न, तब कहियेगा ।

सर टो० : और देखिये, तर्क और न्याय, यह दो चीज़ें तब से पृथ्वी पर हैं जब नूह ने प्रलय में वजड़ा बनाया था ।^१

फेबि० : श्रीमती ने उस तरुण से आपकी मौजूदगी में प्रेम प्रगट किया, केवल आपके क्रोध को उभाड़ने, आपके सोते पौरुष को जगाने, और आपको एक उत्कट प्रेमी बनाने के लिये । वह आपके लिये सुयोग था कि आप साहस करके बढ़ते, उनसे बातें करते, और चतुर

१. ईसाइयों में प्रलय में एकमात्र बच जाने वाला नूह था, जैसे हिंदुओं में मनु को माना जाता है । अर्थात् मनुष्यों के आदिकाल की ओर यहाँ इंगित है ।

बातों से अपने प्रतिद्वंद्वी को, नये मजाकों से, चुप कर देते और श्रीमती को प्राप्त करने की योग्यता प्रमाणित करते। उन्हें आपसे इतनी आशाएँ थीं और आपने उन्हें निराश कर दिया। आपने उचित और योग्य अवसर खो दिया और वे शब्द भी जो मौके पर फबते। आपने काउण्टेस की कृपा का अवसर खो दिया और अब उसका फिर से मिलना कठिन ही है। शायद आप अब बाहर ही छूट जायें, बशर्ते कि आप उनकी, उनकी चाहना में फिर न उतर जायें, कोई ऐमा कमाल न कर दिखायें जो उनको मोह ले।

सर ऐ० : पर यह यदि मैं करूँ भी तो कोई वीरता का काम करना पड़ेगा। योजना बनाना, चालें सोचना, मुझे इस सबसे घृणा है। मुझे विशुद्धतावादी ब्राउनवादी बनना मंजूर है, षडयंत्रकारी नहीं।

सर टो० : तो कोई बात नहीं। वीरता से ही काम लो ! उस नौजवान को चुनौती भेज दो और द्वंद्व में उसकी डट कर ठुकाई उड़ाओ ! काउण्टेस को पता चलेगा ही। यह याद रखो, कोई स्त्री प्रेमी की याचना से आधी भी विचलित नहीं होती, जितनी इससे होती है कि उसका पुरुष वीरता के लिये प्रसिद्ध है।

फेबि० : जी हाँ। सर ऐण्ड्रू ! आपका तो बस एक ही मौका रह गया है।

सर ऐ० : तो सर टोवी, या तुम फेबियन ! मेरी चुनौती उस तक

१. विशुद्धतावादी (Puritans) थे, जो कठोर ब्रह्मचर्य्य आदि का पालन करने के पक्ष में थे। एलिजाबेथ के समय में राबर्ट ब्राउन के अनुयायी—विशुद्धतावादी—गिरिजों में नहीं जाते थे, क्योंकि राष्ट्रीय गिरजे की सत्ता को वे परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध आचरण मानते थे।

पहुँचा दोगे ?

सर टो० : अरे मर्दानगी से जाकर लिखो। बस संक्षिप्त मगर साफ़। कैसी भी चतुराई न ही सही ! हो दबदबे की, जोशीली चीज़ ! कलम-स्याही से अपनी घृणा दर्शाओ ! अच्छा हो तीन-चार जगह 'तू' लिखो, बस काम बन जायेगा। जितने भूँठे अभियोग सोच सको लगा दो, चाहे क्यों न इतने ही बड़े कागज़ की जरूरत पड़ जाये जितना लंदन के पास वेयर की सराय का वह मशहूर बिस्तर है, जिस पर बारह आदमी सो सकते हैं।' लिख डालो ! बतख के पंख की कलम होगी, पर कहीं शब्द भी बतख के दिमाग के न हों। ऐसे चुभीले लिखना चुन-चुन कर कि हाँ ! बस पहले यही करो !

सर ऐ० : अच्छा, तो पत्र मैं लिखता हूँ, पर फिर मुलाकात किस जगह होगी ?

सर टो० : हम आपके कमरे में आयेंगे। आप जाइये।

[सर ऐन्ड्रू का प्रस्थान]

फेबि० : सर टोबी यह भी आपके अमूल्य आदमी है।

सर टो० : अरे मैं इसको अमूल्य हूँ ! जब से यह यहाँ है, तब से इसके करीब दो हजार पाउण्ड खर्च हो गये हैं।

फेबि० : क्या लाजवाब चुनौती लिखेगा ये ? आप यह तो नहीं चाहते कि पत्र अपने पते पर पहुँच ही जाये।

सर टो० : अरे वाह क्यों नहीं। मैं चाहता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि

१. ऐसा एक बिस्तर उन दिनों था।

२. डियर माने प्यारा भी है, मँहगा भी। बह प्यारा कहता है। यह मँहगे बनते हैं। हिंदी में अमूल्य का प्रयोग मैंने किया है। अमूल्य भी प्रिय होता है, और मँहगा भी। वही भाव भी आ जाता है, यद्यपि मूल की चुभन नहीं आती।

किसी तरह से भड़क कर वह नौजवान इसे मंजूर कर ले। बैल भी बर्तों से बांध कर इन्हें आमने-सामने नहीं कर सकते। मैं शर्त बदता हूँ जो इस ऐन्ड्रू में हिम्मत की एक बूंद भी हो ! तुम उसके मरने के बाद उसकी चीड़ा-फाड़ी करा लो। जो एक भी बूंद मिल जाये तो मैं सारी लाश खाने को तैयार हूँ।

फेबि० : और उसका प्रतिद्वन्द्वी नरुण ! उसमें भी कठोरता का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता !

[मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : यह हमारी छोटी-सी चिड़िया आ गई ।'

मेरिया : अगर आप चाहें कि हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायें, आँखों में पानी आ जाये तो मेरे साथ आयें और अपने उल्लू मालबोलियों को देखें, जो इस समय बड़ा अधार्मिक बन गया है, क्योंकि सहज बुद्धि का साधारण ईसाई भी अच्छे-बुरे की इतनी तमीज रखता है कि कभी ऐसी अनहोनी ऊटपटाँग बात पर भरोसा नहीं कर बैठता। उसने सचमुच पीले मोजे पहन लिये हैं।

सर टो० : तो आड़ी गेटिसें भी लगा ली होंगी ?

मेरिया : निहायत बेहयाई से ! ऐसा लगता है जैसे गिरजे के स्कूल का मास्टर हो ! मैंने तो उस पर ऐसी लगातार आँख रखी है जैसे मैं उसकी हत्या करने का मौका देख रही होऊँ। वह जो मैंने उसे छलने को पत्र डाला था न, उसकी हर बात पर अमल कर रहा है। बड़ी देर तक मुस्कराता है; वह जो हिन्दुस्तान की खोज की यात्राओं का नया नक्शा बना है, उससे भी ज्यादा लकीरें पड़ती हैं उसके चेहरे पर ! ऐसा तो आप लोगों ने क्या कभी कुछ देखा

१. इंगलैंड में छोटी-सी रैन चिड़िया ६ अंडे देती है। नवाँ सबसे कम-जोर होता है। उससे जन्मी चिड़िया बहुत प्यारी और छोटी-सी होती है।

होगा! बमुश्किल रोकती हूँ अपने को, उस पर कुछ फेंक कर मारने से। मुझे मालूम है, मालकिन ही मारेंगी उसे। वह नाराज होंगी, वह मुस्करायेगा, और समझेगा उस पर बड़ी कृपा हो रही है।
सर टो० : चलो, जल्दी ले चलो हमें वहीं। दिल्लगी देखेंगे।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[पथ]

[संबंस्टियन और एन्टोनियो का प्रवेश]

सैबै० : मैं कभी पसंद नहीं करता कि तुम मेरे साथ मुसीबतें उठाते रहो, पर तुम तुले बैठे हो। अब तुम्हें डाँट कर, तुम्हारा बोझ हल्का करने की बजाय क्यों बढ़ाऊँ और ?

एन्टो० : तुम जब चले आये तो मुझसे रहा न गया। तुम्हारे साथ रहने की मेरी इच्छा किसी तलवार की धार से पैनी हो गई। प्रेम ही सब कुछ न था। उसमें कुछ भय और शंका भी थी। प्रेम अकेला ही ऐसी लंबी यात्रा के लिये काफी था। मैंने सोचा, तुम परदेसी, अकेले बेआसरा, कहाँ क्या करोगे ? मुझे शंका हुई कहीं यहाँ के निवासी, जैसे अक्सर होता है, तुमसे क्रूरता से व्यवहार न कर बैठें। प्रेम को इन चिन्ताओं ने उकसाया और मैं तुम्हारे पीछे चल पड़ा।

सैबै० : मेरे प्रिय मित्र एन्टोनियो! मैं तुम्हें बार-बार धन्यवाद दिये जाऊँ, इसके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता हूँ ? मैं जानता हूँ ऐसी दया का उत्तर केवल आभार स्वीकृति के शब्दों द्वारा ही दिया जाता है, और इस प्रकार बिना मोल की वस्तु देकर ही इस अमूल्य देन को चुकाने का प्रयत्न लोग करते हैं, पर मैं ऐसा नहीं

कर सकूंगा। किंतु मेरे दृढ़ हृदय की भाँति यदि मेरी समृद्धि भी कभी दृढ़ हो गई, तो मैं बदला दूँगा। अब हम लोगों को करना क्या चाहिये ? क्या हम लोग इस जगह की दिलचस्प और पुरानी चीजें देखने चलें ?

एन्टो० : बेहतर होगा कि पहले कोई टिकने की जगह तलाश कर ली जाये, नगर कल देखा जायेगा।

सैंबे० : पर रात होने में घंटों है। मैं जरा भी नहीं थका हूँ। मेरे साथ आओ, मानो तो ! अच्छी-अच्छी जगहों को देख कर मज़ा लूटें। और यह शहर तो पुराने स्मारकों के लिये प्रसिद्ध ही है।

एन्टो० : मुझे तो माफ़ ही करो, क्योंकि मैं यहाँ सड़कों पर ज्यादा दिखा और खतरा मुझ पर भूला। कुछ दिन पहले ऐसा हुआ कि मैंने सकलता से ड्यूक ऑरसिनो का जहाज़ युद्ध में हराया था। और उसमें मैं जाहिर हो गया और ऐसा कि चाहे कुछ भी दण्ड भरूँ, लेकिन अगर पकड़ा गया तो छोड़ा नहीं जाऊँगा।

सैंबे० : लगता है तुमने उसके कई आदमी मार डाले !

एन्टो० : नहीं। ऐसा नहीं हुआ। वैसे मौके पर खून ख़राबा तो हुआ ही था। लूट का बहुत कुछ माल लौटाने से काम बन सकता था, और व्यापार के नज़रिये से नगर के करीब-करीब सारे व्यापारी ऐसा करने को तैयार भी हो गये थे। मैं ही इन्कार करके अड़ा रहा और अगर अब मैं पकड़ा गया तो कभी भी माफ़ नहीं किया जाऊँगा।

सैंबे० : तब तो यही सबसे उचित होगा कि तुम प्रगट होने से अधिकाधिक दूर रहो।

एन्टो० : हाँ मुझे ऐसा जाहिरा निकल जाना ठीक न होगा। पर मुझसे अलग होने के पहले ठहरो। तुम मेरे रुपये ले जाओ। तब तक मैं

होगा! बमुश्किल रोकती हूँ अपने को, उस पर कुछ फेंक कर मारने से। मुझे मालूम है, मालकिन ही मारेंगी उसे। वह नाराज होंगी, वह मुस्करायेगा, और समझेगा उस पर बड़ी कृपा हो रही है।
सर टो० : चलो, जल्दी ले चलो हमें वहीं। दिल्लगी देखेंगे।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[पथ]

[संबंस्टियन और एन्टोनियो का प्रवेश]

सैबै० : मैं कभी पसंद नहीं करता कि तुम मेरे साथ मुसीबतें उठाते रहो, पर तुम तुले बैठे हो। अब तुम्हें डाँट कर, तुम्हारा बोझ हल्का करने की बजाय क्यों बढ़ाऊँ और ?

एन्टो० : तुम जब चले आये तो मुझसे रहा न गया। तुम्हारे साथ रहने की मेरी इच्छा किसी तलवार की धार से पैनी हो गई। प्रेम ही सब कुछ न था। उसमें कुछ भय और शंका भी थी। प्रेम अकेला ही ऐसी लंबी यात्रा के लिये काफी था। मैंने सोचा, तुम परदेसी, अकेले बेआसरा, कहाँ क्या करोगे ? मुझे शंका हुई कहीं यहाँ के निवासी, जैसे अक्सर होता है, तुमसे क्रूरता से व्यवहार न कर बैठें। प्रेम को इन चिन्ताओं ने उकसाया और मैं तुम्हारे पीछे चल पड़ा।

सैबै० : मेरे प्रिय मित्र एन्टोनियो! मैं तुम्हें बार-बार धन्यवाद दिये जाऊँ, इसके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता हूँ ? मैं जानता हूँ ऐसी दया का उत्तर केवल आभार स्वीकृति के शब्दों द्वारा ही दिया जाता है, और इस प्रकार बिना मोल की वस्तु देकर ही इस अमूल्य देन को चुकाने का प्रयत्न लोग करते हैं, पर मैं ऐसा नहीं

कर सकूंगा। किंतु मेरे दृढ़ हृदय की भाँति यदि मेरी समृद्धि भी कभी दृढ़ हो गई, तो मैं बदला दूँगा। अब हम लोगों को करना क्या चाहिये ? क्या हम लोग इस जगह की दिलचस्प और पुरानी चीजें देखने चलें ?

एन्टो० : बेहतर होगा कि पहले कोई टिकने की जगह तलाश कर ली जाये, नगर कल देखा जायेगा।

संबे० : पर रात होने में घंटों है। मैं जरा भी नहीं थका हूँ। मेरे साथ आओ, मानो तो ! अच्छी-अच्छी जगहों को देख कर मज़ा लूटें। और यह शहर तो पुराने स्मारकों के लिये प्रसिद्ध ही है।

एन्टो० : मुझे तो माफ़ ही करो, क्योंकि मैं यहाँ सड़कों पर ज्यादा दिखा और खतरा मुझ पर भूला। कुछ दिन पहले ऐसा हुआ कि मैंने सफलता से ड्यूक ऑरसिनो का जहाज़ युद्ध में हराया था। और उसमें मैं जाहिर हो गया और ऐसा कि चाहे कुछ भी दण्ड भरूँ, लेकिन अगर पकड़ा गया तो छोड़ा नहीं जाऊँगा।

संबे० : लगता है तुमने उसके कई आदमी मार डाले !

एन्टो० : नहीं। ऐसा नहीं हुआ। वैसे मौके पर खून खराबा तो हुआ ही था। लूट का बहुत कुछ माल लौटाने से काम बन सकता था, और व्यापार के नज़रिये से नगर के करीब-करीब सारे व्यापारी ऐसा करने को तैयार भी हो गये थे। मैं ही इन्कार करके अड़ा रहा और अगर अब मैं पकड़ा गया तो कभी भी माफ़ नहीं किया जाऊँगा।

संबे० : तब तो यही सबसे उचित होगा कि तुम प्रगट होने से अधिकाधिक दूर रहो।

एन्टो० : हाँ मुझे ऐसा जाहिरा निकल जाना ठीक न होगा। पर मुझसे अलग होने के पहले ठहरो। तुम मेरे रुपये ले जाओ। तब तक मैं

जाता हूँ और हाथी नाम की सराय में भोजन भेजने को कह आता हूँ। सराय नगर की हद पर ही है, ठहरने के लिये अच्छी जगह। तुम शहर देखने में वक्त निकालना, अपना ज्ञान तरह-तरह की देखने योग्य वस्तुओं के निरीक्षण से बढ़ाना। जब तुम लौटोगे तो मुझे सराय में ही पाओगे।

सैबे० : पर मैं तुम्हारा धन क्यों लूँ ?

एन्टो० : हो सकता है, कुछ खरीदने की तबियत आ जाये ! और तुम्हारे पास इतना धन नहीं कि उसमें से बेज़रूरत की चीज़ें ले सको !

सैबे० : अच्छी बात, है मंजूर ! मैं तुम्हारा धन ले लूंगा। और ज़रा घूम आऊंगा।

एन्टो० : याद रखना, सराय नाम है—हाथी।

सैबे० : नहीं भूलूंगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[ओलीविया का उपवन]

[ओलीविया का प्रवेश]

ओलीविया : मैंने उसे बुलवाया है और उसने मेरा निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अब मैं यह सोच रही हूँ कि जब वह आये तो मैं उसका स्वागत कैसे करूँ ? क्या उपहार दूँ मैं उसे ? तू जानती है, यौवन उधार और भीख से नहीं मिलता, खरीदा जाता है। अरे मैं कहीं बहुत जोर से तो नहीं बोल रही ! मेरिया ! तूने मालबोलियों को देखा ? उसका गांभीर्य और धैर्य मेरी जैसी परिस्थिति के व्यक्ति के लिये नितांत उपयुक्त है। वह है यहाँ ?
मेरिया : श्रीमती ! वह आता ही होगा। मगर उसमें तो कुछ अजीब-

सी बात हो गई। मुझे लगता है उसका दिमाग खराब है।

ओली० : क्यों ? क्या बात है ? क्या वह बकवास करता है ?

मेरि० : नहीं मालकिन ! लेकिन यह तो सिर्फ़ और बराबर मुस्कराया करता है। कुछ उसके दिमाग पर असर जरूर पड़ा है। आप उसे यहाँ बुलायें तो अच्छा हो, अपनी हिफाजत करने को अपने पास जरूर रखे।

ओली० : अरे ! खैर ! बुला तो सही।

[मेरिया का प्रस्थान]

मेरे दिमाग पर असर है, उसी के क्या ! क्या बुद्धि पर दुःख और आनन्द का एक-सा प्रभाव भी पड़ सकता है ?

[मेरिया का मालबोलियों के साथ प्रवेश]

मालवोवियो !

माल० : हा-हा ! श्रीमती !

ओली० : अरे तुम बड़े खुश हो मालवोलियो ! मैं तुमसे एक गंभीर विषय पर बात करना चाहती थी।

माल० : हाँ श्रीमती ! मैं भी गंभीर हो जाता, लेकिन यह जो आड़ी गेटिसें घुटनों से होकर कमर के पीछे कस गई हैं, तो इससे मेरे खून के बहाव में कुछ रुकावट-सी पड़ती है, लेकिन जब तक इस-से उसे खुशी होती है, जो इसे देखना चाहता है, मैं इस परेशानी की ज़रा भी परवाह नहीं करता। किसी कवि ने कहा है कि, मेरी आँखों में जब तक, जिसे मैं प्रसन्न करना चाहता हूँ, वह खुश है, तो बस काफ़ी है। एक को खुश करके सबको खुश कर डाला।

ओली० : मालवोलियो ! मामला क्या है ? क्या बात है ?

माल० : मेरे पाँव पीले हैं, पर दिमाग में स्याही नहीं। हाँ ! वह मुझे

१. मोझे पीले हैं न !

मिला और हर आज्ञा का पालन तो करना ही होगा। वह इतालवी हाथ का लेख पहचाना, वह नाजुक लिखावट ! क्या मुश्किल था !

ओली० : तुम जाकर सो जाओ मालवोलियो !

माल० : सोने चलना है ! प्रिये !

ओली० : अरे ! भगवान इसकी रक्षा करे । यह मुस्कराना, यह हाथों का चूमना ! इसका मतलब क्या है ?

मेरिया : मालवोलियो ! बात क्या हो गई ?

माल० : सच ! क्या कह दूँ ? ठीक है। कभी तो कोयल को भी कौए को जवाब देना पड़ता है।

मेरिया : तुमने काउण्टेस के सामने इस तरह आने की हिम्मत कैसे की ?

माल० : उच्च पद के लिये आकांक्षा करते हुए डरो मत। ठीक, बिल्कुल ठीक।

ओली० : इस सबका मतलब क्या है जी ?

माल० : कुछ जन्म से महान् होते हैं।

ओली० : होते हैं ! हाँ तो !

माल० : कुछ को अपने प्रयत्नों से महानता प्राप्त होती है।

ओली० : तुम कह क्या रहे हो ?

माल० : और कुछ वे हैं जो परिस्थितियों के कारण महान् बना दिये जाते हैं।

ओलीबिया : और इसकी तो अक्ल बिगड़ गई।

माल० : मत भूलो किसने पीले मोज़ों की तारीफ़ की थी।

ओली० : तुम्हारे पीले मोज़ों की ?

माल० : और किसने आड़ी गेटिसें देखनी चाहीं !

ओली० : आड़ी गेटिसें !

माल० : यदि नहीं तो वहीं, इसी हालत में रहो, जिसमें हो.....

ओली० : मेरी किस्मत पर कहा ?

माल० : अन्यथा नौकर ही रहो !

ओली० : यह तो पागलपन की हद हो गई ।

[नौकर का प्रवेश]

नौकर : मालकिन ! काउण्ट आँरसिनो के दरबार के तरुण लौट आये हैं । हालाँकि उन्हें लौटा कर लाने में मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी । बड़ी मुश्किल से आये हैं । वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

ओली० : मैं जाती हूँ (नौकर का प्रस्थान) मेरिया ! इस आदमी की देख-भाल पर किसी को लगाओ ! सर टोबी कहाँ है । देखना कोई इसकी ठीक से देख-रेख करे । इसे कोई नुकसान न हो जाये, पैसों की फ़िक्र नहीं है ।

[ओलीविया और मेरिया का प्रस्थान]

माल० : ओह ! हो ! कितने पास आ रही है ! अपने निकटस्थ सर टोबी को मेरी सेवा में लगाया है कि मेरा कोई नुकसान न हो । यही तो पत्र में भी लिखा था ! अब मुझे उससे कठोरता और कड़ाई से पेश आना है, तभी तो वह मुझे ऐसा सुअवसर दे रही है । उसने लिखा था—“अपनी दीनता को छोड़ दो और मेरे एक रिश्तेदार के विरोध के लिये तैयार हो जाओ । अपने से नीचों पर कठोरता करो और तुम्हारे शब्दों में भारीपन, गांभीर्य और विचारशीलता भर जाये जो तुम्हारे गर्व को प्रगट करे ! ” और अब वह मुझे रास्ता बता रही है कि मैं ऐसा कैसे करूँ ? अब मुझे गंभीर होना है और बड़े आदमियों की तरह चलना है, धीरे और नपे-तुले लफ़्जों में बातें करनी हैं, और मुझे अपनी वेश-भूषा भी किसी बड़े आदमी की-सी बनानी है । वह तो मेरे जाल में फँस गई । लेकिन सब भगवान की मर्जी है और मैं……मैं, हे भगवान तेरे

प्रति कितना कृतज्ञ हूँ। और अब भी जब वह गई है उसने कहा है : “इस आदमी की देख-भाल पर किसी को लगाओ।” नौकर तो नहीं कहा। मेरी इज्जत रखी। आदमी, जैसे बराबर, वह है औरत। सारी बातें मुझे बढ़ावा दे रही हैं और इसमें अब क्या शक हो सकता है, कुछ रुकावट नहीं; क्या है जिस पर अविश्वास किया जाये ! और मुझे चाहिये भी क्या ? अब मेरे और उसके बीच में कोई बाधा नहीं। प्रेम का देवता ही इसका करने वाला है, मैं नहीं; और उसी का लाख-लाख धन्यवाद है।

[मेरिया का सर टोबी और फेबियन के साथ प्रवेश]

सर टो० : कहाँ है वह, बताओ, भगवान के लिये बताओ। यदि अंध-कार के सारे प्रेत इकट्ठे कर दिये जायें तो वह मालबोलियो है, मैं उससे बातें तो करूँ।

फेबि० : देखिये ! वह रहा। क्या हाल है जी ? अच्छे तो हो ?

माल० : चले जाओ ! मैं तुमसे कुछ भी नहीं कहना चाहता। मुझे एकांत चाहिये। चले जाओ !

मेरिया : अरे ! इसकी आवाज़ में शैतान का सुर बोल रहा है। मैंने कहा था न ? सर टोबी ! मालकिन ने कहा है आप इसकी देख-भाल करें।

माल० : आह ! हा ! कहा था उसने !

सर टो० : बस-बस ! धीरे-धीरे। हमें इससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिये। देखो मैं सब ठीक करता हूँ। कहिये जनाब ? क्या हाल है ? मिजाज़ तो ठीक है ? हिस्मत रखो दोस्त ! शैतान को धता बताओ, उससे दबो मत ! वरना वह तो तुम्हें नुकसान ही पहुँचायेगा।

माल० : क्या तुम समझते भी हो कि क्या कह रहे हो ?

मेरिया : यह लीजिये ! आपसे शैतान की सुनकर बोलता कैसा है ।

भगवान न करे आप पर भी जादू कर दे कोई । काउण्टेस को मैं छोड़ दूंगी तो क्या उनका दुख उनके शब्दों में समा सकेगा ?

माल० : आह ! श्रीमती !

मेरिया : हे भगवान !

सर टो० : शांत रहो । मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ । उससे व्यवहार ऐसे नहीं करना है । देखती नहीं हो, वह तुमसे गुस्सा हो रहा है । इससे तो मुझे बात करने को छोड़ दो ।

फेबि० : हाँ इससे नर्मी से बर्ताव करना चाहिये । धीरे । देखती हो न शैतान कितना भड़क रहा है, इससे तो जरा और ही ढंग से पेश आना है ।

सर टो० : कहो । क्या मामला है उस्ताद !

माल० : जी !

सर टो० : चलो दोस्त ! चलो ! अमाँ कहीं शैतान से याराना किया जाता है ? मारो गोली उसे ! काला चोर है वह !

मेरि० : सर टोबी, देखिये इससे प्रार्थना कराइये न किसी तरह !

माल० : क्या कहा री ! प्रार्थना और मैं !

मेरि० : मुझे तो यकीन था यह अच्छाई की बात तो सुन ही न सकेगा !

माल० : जा-जा ! लटक जा फंदा डाल कर ! चले जाओ काहिलो ! मैं तुम लोगों में से नहीं हूँ । अब कुछ ऐसा होने वाला है कि तुम दाँतों तले उँगली दबा लोगे ।

[प्रस्थान]

सर टो० : अरे क्या सचमुच यह सिड़ी हो गया ?

फेबि० : मैं कहता हूँ ऐसी घटना कहीं किसी नाटक में दिखाई जाती तो उसे अतिशयोक्ति में डाला जाता ।

सर टो० : यह तो दिल-दिमाग-जिस्म, सब गुम! क्या धोखा खाया है!

मेरि० : अरे अभी मत छोड़ो। कहीं जोश उतर न जावे वरना मज़ा न रहेगा !

फेबि० : तो सचमुच पागल कर दे इसे !

मेरि० : घर में तो अमन हो जायेगा।

सर टो० : मैं बताऊँ ऐसा करो ! उसे एक अँधेरे कमरे में बंद करके बाँध छोड़ें। मेरी भतीजी को तो यकीन है ही कि वह पागल है। मज़े में ऐसा कर सकते हैं, तब तक जब तक यह अपने पापों का दण्ड भोगता है। मज़ा रहेगा। बाद में, जब हम ऊब जायेंगे, हम रहमदिली दिखायेंगे और उसकी योजना का बाकी हिस्सा पूरा करने को छोड़ देंगे। इसका सेहरा तुम्हारे सिर बाँधेंगे कि तुमने पागल को पहचाना। लेकिन देखो, कौन आ रहा है ?

[सर ऐन्ड्रू एंग्लोच का प्रवेश]

फेबि० : यह और दिल्लगी का मसाला आ रहा है।

सर ऐ० : मैंने चुनौती लिख ली है। यह रही। पढ़ो ऐसी तीखी चटपटी है जैसे सिरका, नहीं, नहीं लाल मिर्च !

फेबि० : इस कदर झपाटा है इसमें ?

सर ऐ० : देखो तो सही, पढ़ते ही पता चल जायेगा।

सर टो० : देखूँ। (पढ़ता है।) नौजवान तू कोई हो, लेकिन तू है एक लुच्चा !

फेबि० : शाबाश ! शुरु में ही कितना दम है।

सर टो० : (पढ़ता है।) इस पर मत चौंक कि मैंने तुझे यह नाम दिया, न चकरा ! क्योंकि मैं तुझे यह नहीं बताऊँगा कि मैंने ऐसा क्यों किया ?

फेबि० : कमाल ! लाजवाब ! क्या अक्लमंदी है कि कानून की पकड़ से साफ़ किनारा कर दिया।

सर टो० : (पढ़ता है ।) तू बराबर काउण्टेस के पास आता है और वह मेरी मौजूदगी में तुझ पर अपनी मेहरबानी दिखाती है, लेकिन यह मत कह कि मैं तुझे इसलिये चुनौती देता हूँ ।

फेबि० : क्या मुस्तसिर है, बिल्कुल मतलब की बात ! वाह !

सर टो० : (पढ़ता है ।) जब तू लौटेगा मैं तुझे घेरूँगा और अगर मौका लग गया कि तू मार डाले मुझे, ...

फेबि० : क्या बात है !

सर टो० : (पढ़ता है ।) तो तू मुझे एक लुच्चे और बदमाश की तरह मार डालेगा ।

फेबि० : कमाल है कि कानून की पकड़ को अब भी दूर रखा गया है ।

सर टो० : (पढ़ता है ।) विदा ! हम दोनों में से एक पर भगवान दया करे । जहाँ तक मेरा खयाल है उसका रहम मुझ पर होगा, क्योंकि मेरे मौके तुझसे ज्यादा जमते हैं । लिहाजा अपना ध्यान रखना । तुम्हारा दोस्त, जैसा कि तू उसे बताता है, और तेरा पक्का दुश्मन—ऐण्ड्रू एग्यूचीक !

अच्छा ! अगर वह इसे पढ़कर भी नहीं लड़ता तो समझ लो उसकी टाँगों में जोर नहीं । अब मैं ऐसा करता हूँ कि उसे यह पर्चा मिल जाये ।

मेरिया : बस ! मौका अच्छा है, क्योंकि वह जवान इस वक्त किसी काम से काउण्टेस के पास आया हुआ है और अभी लौटता होगा ।

सर टो० : सर ऐण्ड्रू ! चलिये बाग के कोने से उसके आने पर नज़र रखिये । ज्योंही मौका मिले, और आप उसे देखें, तलवार खींच लीजिये और तलवार खींचते हुए उसे जोर से ललकारिये क्योंकि जोरदार क्रसम के तड़तड़ाते लफ़्ज़ जब धनुष की डोरी की तरह गूँजते हैं तो मर्द को ब्रह्मादुरी की वह आब देते हैं कि

बस ऐसी, कि ऐसी.....कि उसमें उतनी तो कभी होती ही नहीं। बस चलिये।

सर ऐ० : नहीं ! कसम तो मैं अकेला ही खाऊँगा।

[प्रस्थान]

सर टो० : इस खत को अब देने की जगह अपने पास रख लूँ, क्योंकि वह नौजवान देख कर ही पढ़ा-लिखा और ऊँचे घराने का लगता है। ड्यूक और श्रीमती ओलीविया ने जो उसे इतना विश्वास-पात्र बनाया है, साफ़ जाहिर करता है कि मेरी बात ठीक है। वह ज्योंही यह खत पढ़ेगा, वह समझ जायेगा कि किसी बेवकूफ़ ने लिखा है, जिसमें ज़रा भी अक्ल नहीं। उस पर तो इसका कुछ भी असर नहीं पड़ेगा। वह इससे क्या डर सकता है ? मैं ऐसा करूँ कि यह चुनौती मुँहजबानी पहुँचा दूँ और सर ऐण्ड्रू की बहादुरी बढ़ा-चढ़ा कर बयान करूँ। नौजवान इस पर भरोसा कर लेगा और उसे सर ऐण्ड्रू की बहादुरी, जोश, होशियारी और हुनर का यकीन हो जायेगा, वह डर जायेगा। और तब दोनों एक दूसरे से बहुत डरेंगे और यह हालत हो जायगी कि एक दूसरे की नज़र से ही उनकी जान निकलने लगेगी।

फ़ेबि० : वह तो मालकिन के साथ नौजवान आ रहा है। अब रास्ते से हटना चाहिये। फिर इसका पीछा करेंगे।

सर टो० : तब तक मैं ज़रा सोच लूँ कि भयानक से भयानक ढंग से यह सँदेसा उसको पहुँचाऊँ।

[सर टोबी, फ़ेबियन और मेरिया का प्रस्थान]

[ओलीविया और बायोला का प्रवेश]

ओलीविया : मैंने एक पत्थर दिल से कितना कुछ न कह दिया और बिना भिन्न के अपनी इज्जत को भी तुम्हारे रहम के कदमों

पर डाल दिया । मैं जानती हूँ यह मेरे लिये ठीक नहीं है । मेरा दिल कहता है, लेकिन यह भूल मुझे कितनी अच्छी लगती है और इसे दुहराने की इच्छा कितनी सशक्त है कि कोई भी तिरस्कार मेरा मन नहीं फेरता ।

वायोला : तो अपनी अनुभूतियों में मेरे स्वामी की व्यर्थ चाहना और वेदना की भलक देखो न ?

ओलीविया : मेरी यह भेंट तो स्वीकार कर लो ! यह रत्न पहन लो । देखो मेरा चित्र है । इसके तो जीभ भी नहीं कि बोल कर तुम्हारा गुस्सा बढ़ाये । कल आना जरूर !

जो चाहे मुझसे माँग लेना, मैं कुछ भी मना नहीं करूँगी ।

वायोला : एक ही प्रार्थना है कि तुम ड्यूक ऑरसिनो से प्रेम करो ।

ओली० : मैं अपने सम्मान सहित उन्हें क्या दूँ जो तुम्हें दे ही चुकी ।

वायोला : मैं क्या दावा करता हूँ ?

ओली० : कल आओगे न ? विदा । तुम जैसा शैतान मेरी आत्मा को नरक में भी ले जाये तो मुझे इंकार नहीं ।

[प्रस्थान]

[सर टोबी बेंलच और फेबियन का प्रवेश]

सर टोबी : श्रीमान् ! भगवान आप की रक्षा करें ।

वायोला : आपकी भी श्रीमान ।

सर टोबी : नौजवान ! जैसे भी कर सको अपनी हिफाजत करो !

मैं नहीं जानता तुम्हारा क्या नुकसान न हो जायेगा ! लेकिन एक सामंत है जो उपवन की सीमा पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, क्रोध और विकराल प्रतिहिंसा से भरा हुआ । अपनी तलवार म्यान से निकाल लो और उससे दो-दो हाथ करने को तैयार हो जाओ, क्योंकि तुम्हारा प्रतिद्वन्दी बड़ा चतुर और चुस्त है,

और तलवार तो उसके हाथ में गजब ढाती है ।

वायोला : मुझे विश्वास है आप भूल कर रहे हैं क्योंकि मुझसे भगड़ने का किसी को कारण ही क्या हो सकता है ? मैंने कभी किसी का बुरा किया हो, मुझे तो ऐसा याद ही नहीं आता !

सर टोबी : अजी यह बात नहीं है, मैं बताता हूँ । जीवन का मूल्य है तो सावधान हो जाओ । उसमें शक्ति है, यौवन का आवेश है और क्रोध ने तो उसे भड़का दिया है ।

वायोला : मैं प्रार्थना करता हूँ श्रीमान् ! बताइये न ? वह कौन आदमी है ?

सर टोबी : वह सर है, युद्धभूमि में नहीं, युद्धभूमि में चले किसी खड़ग के कारण नहीं । पर भगड़े में तो वह बड़ा ही बदमाश है । उसने द्वन्द्वयुद्ध में तीन आदमियों को मारा है और इस वक्त तो वह इतना क्रुद्ध है और ऐसा भयानक हो उठा है कि जो कुछ भी हो, अपने शत्रु की हत्या किये बिना उसे क्या चैन आ सकता है ?

वायोला : मैं श्रीमती ओलीविया के पास जाता हूँ और रक्षा का प्रबन्ध करने को कहूंगा । मुझे द्वन्द्वयुद्ध और भगड़े पसंद नहीं । यह सच है, मैं जानता हूँ, कुछ लोग अपनी बहादुरी दिखाने को दूसरे से जबरन लड़ जाते हैं । यह आदमी ऐसा ही लगता है ।

सर टो ० : नहीं नौजवान ! वह तो इस वजह से नाराज है कि तुमने उसका भारी नुकसान किया है । आगे बढ़ो और उससे मिलो । वह तो चाहता ही यह है । मैं तुम्हें लौटने नहीं दे सकता, अगर लौटते हो तो पहले मैं तुमसे लड़ूंगा और मुझे भी उससे कम खतरनाक न समझना । बढ़ो ! आओ, मुझसे लड़ो और आजमा लो ! हम दोनों

में से एक से तो लड़ना ही पड़ेगा तुम्हें ! सच मानो ! या फिर यह मान लो कि तुम तलवार लिये फिरने के क़ाबिल नहीं ।

वायोला : क्या अजीब और बेहूदा बात है । महरबानी करके उस सामंत से मेरी खातिर यह तो पूछिये कि वह मुझसे खफ़ा क्यों है ? कोई ऐसी बात जरूर होगी जिसे मैं नहीं जानता, मैंने तो इरादतन कुछ किया नहीं !

सर टो ० : अच्छी बात है । ऐसा तो मैं कर सकता हूँ । आप इनको देखते रहें फ़ेबियन साहब ! तब तक मैं आता हूँ ।

[प्रस्थान]

वायोला : भाई, यह क्या मामला है, जानते हो तो बताओ न ?

फ़ेबि ० : मैं तो इतना जानता हूँ कि सामंत आपसे बिगड़ बैठा है और जानी दुश्मन हो गया है, और कुछ मैं नहीं जानता ।

वायोला : वह है कैसा ?

फ़ेबि ० : देखने से तो आप सोच भी नहीं सकते कि लड़ाई में यह ऐसा हो जायेगा । श्रीमान् ! आपका वह प्रतिद्वन्द्वी बड़ा खूनी-खतरताक और चालाक है कि आपने तो ऐसा आदमी काहे को देखा होगा । उसकी तरफ़ चलें ? मैं तो कोशिश करूँगा कि आपकी उसकी सुलह हो जाये ! जहाँ तक भी होगा यही करूँगा ।

वायोला : अगर ऐसा करो तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊँगा । मैं इसकी चिंता नहीं करता कि मेरे ये विचार कोई सुनकर क्या कहेगा । मैं शांति चाहने वाला आदमी हूँ और सैनिकों में गिना जाने की बजाय पादरियों में मेरी गिनती हो, यही पसंद करता हूँ ।

[दोनों का प्रस्थान]

[सर टोबी और सर एन्ड्रू का प्रवेश]

सर टो ० : मैं आपसे कहता हूँ, यह नौजवान तो एक खौफ़नाक शैत

है। मैंने ऐसा गुस्सैल आज तक नहीं देखा। अभी म्यान में ही तलवारें थीं कि उसने ऐसा हाथ दिया मेरे कि बमुश्किल बचा। और पलट कर तो वह अचूक चोट करता है। सुना है वह फ़ारस के शाह को तलवार चलाना सिखाता था।

सर ऐ० : लाहौल ! मुझे उससे क्या ?

सर टो० : ऐं ! मगर वह कब शांत होगा अब ? फेबियन क्या उसे तुम पर झपटने से ज़्यादा देर रोक सकता है ?

सर ऐ० : उफ़ ! मरहबा ! मुझे अगर सपने में भी यह गुमान होता कि इस कदर खतरनाक और बहादुर दुश्मन है तो काहे को मैं उसे चुनौती देता ! ऐसा नहीं हो सकता कि वह तरह दे जाये। मैं उसे अपना घोड़ा भेंट में दे दूंगा।

सर टो० : मैं प्रस्ताव पहुँचा देता हूँ। आप यहीं ठहरें। हिम्मत रखिये, ऐसे लगिये जैसे गुस्से में हैं। बिना भगड़े के ही मामला रफ़ा-दफ़ा हो जायेगा। (स्वगत) अरे अब मैं तुम्हारे घोड़े पर चढ़ूंगा, जैसे अब तक तुम्हारे सर पर सवार रहा हूँ।

[फेबियन और बायोला का प्रवेश]

(फेबियन से) उसने मुझे भगड़ा रोकने को घोड़ा दिया है। मैंने उसे इस जवान के शैतान होने का यकीन दिला दिया है।

फेबि० : यह भी बुरी तरह डर गया है, सफ़ेद पड़ गया है, हाँफ रहा है, जैसे इसके पीछे जंगली जानवर दौड़ रहे हों !

सर टो० : (बायोला से) वह तो आपको छोड़ने को राज़ी नहीं होता। तुला बैठा है लड़ने पर। लेकिन भगड़ा देखते हुए वह इस नतीजे पर पहुँचा है कि मामला उतना बड़ा है, जितना पहली नज़र में लगा था। अब तो कहता है कि महज़ अपने लफ़्ज़ों को निभाने के लिये वह तुमसे लड़ेगा। निकाल लो

तलवार ! वह तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करेगा ।

वायोला : (स्वगत) हे भगवान् ! मुझे बचाओ ! अब कब तक छिपाऊँ कि मैं एक स्त्री हूँ ।

फेबि० : सर ऐन्ड्रू ! आइये ! आगे आइये ! ये नहीं मानते । कहते हैं बस एक ही हाथ होगा, इज्जत का सवाल ही जो ठहरा । द्वन्द्वयुद्ध के नियम ही जो हैं । लेकिन इन्होंने वचन दिया है कि यह आपकी कोई हानि नहीं करेंगे आइये शुरू करिये ।

सर ऐ० : हे भगवान् ! ऐसा कर कि यह अपने वचन से न पलट जाये । (तलवार निकालता है ।)

वायोला : मैं कहता हूँ, मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है । (तलवार खींचती है ।)

[एन्टोनियो का प्रवेश]

एन्टो० : तलवार म्यान में रख लो । अगर इस नौजवान ने तुम्हारा कुसूर किया है तो जुर्म को मैं अपने ऊपर लेता हूँ, अगर तुम्हीं इसके मुजरिम हो, तो इसकी बजाय मैं तुमको बदले की चुनौती देता हूँ ।

सर टो० : ओह हो ! जनाब की तारीफ़ !

एन्टो० : श्रीमान् ! मैं वह हूँ जिसके शब्दों को उसके कार्य्य प्रमाणित करेंगे, ऐसा मुझे इस युवक से स्नेह है । (तलवार खींचता है ।)

सर टो० : बहुत अच्छा ! तुम बीच में बोलोगे तो फिर मैं भी मौजूद हूँ ।

फेबि० : ठहरिये ! ठहरिये ! सर टोबी ! न्याय के रक्षक अफसर इधर आ रहे हैं ।

सर टो० : मैं तुम्हें अभी देखे लेता हूँ ।

वायोला : श्रीमान् ! तलवार, मेरी प्रार्थना है, म्यान में रखें ।

सर ऐ० : बहुत अच्छा श्रीमान् ! मैंने वचन दिया था अब यही करूँगा ।

और जो भेंट मैंने आपको दी है वह आपके खूब काम आने वाला है। बड़ा अच्छा है।

[अफ़सरों का प्रवेश]

पहला अफ़सर : यह रहा। अपनी ड्यूटी का अंजाम दो।

दूसरा अफ़सर : एन्टोनियो ! हम ड्यूक की आज्ञा से तुम्हें गिरफ़्तार करते हैं।

एन्टो० : तुम निहायत गलती कर रहे हो !

पहला अफ़सर : जी नहीं जनाब ! मैं आपकी सूरत खूब पहँचानता हूँ। हालाँकि आप अब जहाज़ी की वेश-भूषा में हैं। ले चलो जी इसे। यह जानता है कि मैं इसे पहँचान रहा हूँ।

एन्टो० : मैं आज्ञा मानने को विवश हूँ। (बायोला से) तुम्हें ढूँढते हुए यह नतीजा मिला। लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। मैं तो भुगत ही लूंगा। पर अब तुम क्या करोगे, क्योंकि न सिर्फ़ मैं तुम्हें छोड़ने को मजबूर हूँ, बल्कि तुमसे अपना धन माँगने को भी हो गया हूँ। अपनी गिरफ़्तारी से ज़्यादा चिंता मुझे तुम्हें इस हालत में छोड़ने से होती है। तुम तो इस तरह हक्के-बक्के खड़े हो ? हिम्मत रखो !

दूसरा अफ़सर : चलिये सा'ब। हो गया।

एन्टो० : मुझे कुछ धन तो लौटा दो !

बायोला : अरे कैसा धन भाई ! यह जो तुमने भगड़े में मेरी मदद की इसके लिये और फिर तुम मुसीबत में पड़ गये हो इस लिये भी मैं तुम्हें जरूर धन दूंगा पर मेरे पास बहुत थोड़ा है। जो है उसका आधा तुम्हें दे देता हूँ।

एन्टो० : यह कैसे हो सकता है कि तुम ऐसे वक्त मुझसे इंकार कर सको। क्या तुम्हारे प्रति जो मैंने किया है उससे तुम इतना ही कर



पाओगे ? मेरे दुःख को इतना न बढ़ाओ, अन्यथा
को याद दिलाने के कमीनेपन पर उतर आना पड़े।
वायोला : सच ! मुझे तो एक भी याद नहीं आता ! न मैं जानता
हूँ। तुम्हारी आवाज़ कभी सुनी, या तुम्हारा चेहरा कहीं देखा
हो, ऐसा भी याद नहीं आता। यह मेरी प्रकृति में नहीं कि अकृतज्ञ
बनूँ। मुझे कृतघ्नता से घृणा है। उसे मैं भूँठ, गर्व, वाचालता,
नशा करना, और मनुष्यों को संभवनीय सारे अपराधों से अधिक
नीच समझता हूँ।

एन्टो० : ओह भगवान् ! सुन ले !

दूसरा अफ़सर : चलो ! चलते हो या नहीं ?

एन्टो० : मुझे दो बातें कहने दो बस। मैंने इस नौजवान को, देखते हो
न तुम इसे, अधमरा था, तब मौत के जबड़ों से निकाला था।
पूरी मुहब्बत से मैंने इसे ठीक किया, पूजा की इसकी बिना किसी
हिचक के। इसकी खूबसूरत शक्ल जैसा ही इसका मन समझा था
मैंने।

पहला अफ़सर : पर हमें इस सबसे क्या ? वक्त निकला जा रहा है,
चलो।

एन्टो० : धिक्कार है। मेरा आराध्य एक व्यर्थ की मूर्ति ही प्रमाणित
हुआ। सैबैस्टियन ! तेरो नीचता ने तेरी रूप को भी शर्म से ढँक
दिया। बाहर का रूप कुछ नहीं होता, यदि मन पवित्र और अच्छा
हो, तो कुरूप भी सुंदर है, ग्राह्य है। जिसका मन निष्ठुर है,
वही वास्तव में कुरूप है। सद्गुण ही सौन्दर्य है, किन्तु रूपमय
कुटिल पाप क्या है, एक पोला पेड़, जिसे शैतान ने बाहर से इतना
अलंकृत कर दिया है।

पहला अफ़सर : इसकी अकल गुम होती जा रही है। ले चलो इसे। चलो जी।

एन्टो० : तो चलो फिर।

[अफ़सरों के साथ एन्टोनियो का प्रस्थान]

बायोला : उसकी बात में कितनी दिल की आवाज़ थी, ऐसा लगता है वह कुछ सच कह रहा था। उसने मेरी मदद की ज़रूर होगी, जिससे मैंने इंकार कर दिया। ओह ! कितना अच्छा हो जो यह सच हो कि उसने मुझे गलती से मेरा भाई समझ लिया है।

सर टो० : सर एन्ड्रू और फेबियन ! हम कुछ बुद्धिपूर्ण बातें कर लें।

बायोला : उसने नाम लिया था सैब्रैस्टियन ! दर्पण में देखने पर तो बिल्कुल अपने भाई की-सी ही तो मेरी शकल है। मेरा-उसका चेहरा, कितने मिलते हैं दोनों ! और मैंने तो कपड़े भी उस के-से ही पहन रखे हैं ! उसी के वस्त्रों का रंग और ढंग मैंने अपनाया था। ओह ! काश यह सचमुच ठीक हो, तो वह तूफ़ान, वह आंधी, वह समुद्र, सब ही मेरे लिये बहुत दयालु थे।

[प्रस्थान]

सर टो० : यह तो बड़ा धोखेबाज़ लड़का है। खरगोश से भी डरपोक !

अगर तुम्हें इसकी धोखेबाज़ी का सबूत चाहिये तो देखो न, यह अपने दोस्त को मुसीबत में देख पहुँचाने से मुकर गया, और अगर तुम्हें उसके डरपोक होने का सबूत चाहिये तो फेबियन से पूछो।

फेबि० : बिल्कुल ठीक कहा आपने। इसमें तो हिम्मत ही नहीं।

सर ऐ० : हे भगवान् ! मैं इसका पीछा करूँगा और इसकी कस कर-के पिटाई करूँगा।

सर टो : तुम इसे खूब ठोंकना पर तलवार का इस्तैमाल न करना ।

सर ऐ० : अगर न मारूँ तो.....

[प्रस्थान]

फेबि० : चलिये अब हम नतीजा देखने चलें ।

सर टो० : मैं शर्त बदता हूँ । नतीजा कुछ नहीं निकलेगा ।

[प्रस्थान]

और जो भेंट मैंने आपको दी है वह आपके खूब काम आने वाला है। बड़ा अच्छा है।

[अफ़सरों का प्रवेश]

पहला अफ़सर : यह रहा। अपनी ड्यूटी का अंजाम दो।

दूसरा अफ़सर : एन्टोनियो ! हम ड्यूक की आज्ञा से तुम्हें गिरफ़्तार करते हैं।

एन्टो० : तुम निहायत गलती कर रहे हो !

पहला अफ़सर : जी नहीं जनाब ! मैं आपकी सूरत खूब पहँचानता हूँ। हालाँकि आप अब जहाज़ी की वेश-भूषा में हैं। ले चलो जी इसे। यह जानता है कि मैं इसे पहँचान रहा हूँ।

एन्टो० : मैं आज्ञा मानने को विवश हूँ। (बायोला से) तुम्हें ढूँढते हुए यह नतीजा मिला। लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। मैं तो भुगत ही लूँगा। पर अब तुम क्या करोगे, क्योंकि न सिर्फ़ मैं तुम्हें छोड़ने को मजबूर हूँ, बल्कि तुमसे अपना धन माँगने को भी हो गया हूँ। अपनी गिरफ़्तारी से ज़्यादा चिंता मुझे तुम्हें इस हालत में छोड़ने से होती है। तुम तो इस तरह हक्के-बक्के खड़े हो ? हिम्मत रखो !

दूसरा अफ़सर : चलिये सा' ब। हो गया।

एन्टो० : मुझे कुछ धन तो लौटा दो !

बायोला : अरे कैसा धन भाई ! यह जो तुमने भगड़े में मेरी मदद की इसके लिये और फिर तुम मुसीबत में पड़ गये हो इस लिये भी मैं तुम्हें जरूर धन दूँगा पर मेरे पास बहुत थोड़ा है। जो है उसका आधा तुम्हें दे देता हूँ।

एन्टो० : यह कैसे हो सकता है कि तुम ऐसे वक्त मुझसे इंकार कर सको। क्या तुम्हारे प्रति जो मैंने किया है उससे तुम इतना ही कर

पाओगे ? मेरे दुःख को इतना न बढ़ाओ, अन्यथा मुझे अहसानों को याद दिलाने के कमीनेपन पर उतर आना पड़ेगा ।

वायोला : सच ! मुझे तो एक भी याद नहीं आता ! न मैं तुम्हें जानता हूँ । तुम्हारी आवाज़ कभी सुनी, या तुम्हारा चेहरा कहीं देखा हो, ऐसा भी याद नहीं आता । यह मेरी प्रकृति में नहीं कि अकृतज्ञ बनूँ । मुझे कृतघ्नता से घृणा है । उसे मैं भूँठ, गर्व, वाचालता, नशा करना, और मनुष्यों को संभवनीय सारे अपराधों से अधिक नीच समझता हूँ ।

एन्टो० : ओह भगवान् ! सुन ले !

दूसरा अफ़सर : चलो ! चलते हो या नहीं ?

एन्टो० : मुझे दो बातें कहने दो बस । मैंने इस नौजवान को, देखते हो न तुम इसे, अधमरा था , तब मौत के जबड़ों से निकाला था । पूरी मुहब्बत से मैंने इसे ठीक किया, पूजा की इसकी बिना किसी हिचक के । इसकी खूबसूरत शक्ल जैसा ही इसका मन समझा था मैंने ।

पहला अफ़सर : पर हमें इस सबसे क्या ? वक्त निकला जा रहा है, चलो ।

एन्टो० : धिक्कार है । मेरा आराध्य एक व्यर्थ की मूर्ति ही प्रमाणित हुआ । सैबैस्टियन ! तेरो नीचता ने तेरी रूप को भी शर्म से ढँक दिया । बाहर का रूप कुछ नहीं होता, यदि मन पवित्र और अच्छा हो, तो कुरूप भी सुंदर है, ग्राह्य है । जिसका मन निष्ठुर है, वही वास्तव में कुरूप है । सद्गुण ही सौन्दर्य्य है, किन्तु रूपमय कुटिल पाप क्या है, एक पोला पेड़, जिसे शैतान ने बाहर से इतना अलंकृत कर दिया है ।

पहला अफ़सर : इसकी अक्ल गुम होती जा रही है। ले चलो इसे। चलो जी।

एन्टो० : तो चलो फिर।

[अफ़सरों के साथ एन्टोनियो का प्रस्थान]

वायोला : उसकी बात में कितनी दिल की आवाज़ थी, ऐसा लगता है वह कुछ सच कह रहा था। उसने मेरी मदद की ज़रूर होगी, जिससे मैंने इंकार कर दिया। ओह ! कितना अच्छा हो जो यह सच हो कि उसने मुझे गलती से मेरा भाई समझ लिया है।

सर टो० : सर एन्ड्रू और फेबियन ! हम कुछ बुद्धिपूर्ण बातें कर लें।

वायोला : उसने नाम लिया था सैब्रेस्टियन ! दर्पण में देखने पर तो बिल्कुल अपने भाई की-सी ही तो मेरी शकल है। मेरा-उसका चेहरा, कितने मिलते हैं दोनों ! और मैंने तो कपड़े भी उस के-से ही पहन रखे हैं ! उसी के वस्त्रों का रंग और ढंग मैंने अपनाया था। ओह ! काश यह सचमुच ठीक हो, तो वह तूफ़ान, वह आंधी, वह समुद्र, सब ही मेरे लिये बहुत दयालु थे।

[प्रस्थान]

सर टो० : यह तो बड़ा धोखेबाज़ लड़का है। खरगोश से भी डरपोक ! अगर तुम्हें इसकी धोखेबाज़ी का सबूत चाहिये तो देखो न, यह अपने दोस्त को मुसीबत में देख पहुँचाने से मुकर गया, और अगर तुम्हें उसके डरपोक होने का सबूत चाहिये तो फेबियन से पूछो।

फेबि० : बिल्कुल ठीक कहा आपने। इसमें तो हिम्मत ही नहीं।

सर ऐ० : हे भगवान् ! मैं इसका पीछा करूँगा और इसकी कस कर-के पिटाई करूँगा।

सर टो : तुम इसे खूब ठोंकना पर तलवार का इस्तैमाल न करना ।

सर ऐ० : अगर न मारूँ तो.....

[प्रस्थान]

फेबि० : चलिये अब हम नतीजा देखने चलें ।

सर टो० : मैं शर्त बदता हूँ । नतीजा कुछ नहीं निकलेगा ।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[ओलीविया के घर के सामने की सड़क]

[संबैस्टियन और विदूषक का प्रवेश]

विदूषक : क्या आप मुझे यकीन दिलाना चाहते हैं कि मेरी मालकिन ने मुझे आपको बुलाने को नहीं भेजा है ?

संबैस्टियन : अरे चलो हटो ! तुम बेवकूफ़ आदमी हो । मेरा पीछा छोड़ो ।

विदू० : खूब ! आप तो जमे हुए खिलाड़ी निकले । मैं आपको नहीं जानता, मेरी मालकिन ने आपको नहीं बुलाया कि आप उनसे चल कर बातें करें ! आपका नाम भी श्रीमान सिज़ैरियो नहीं है । और देखते हैं, यह है न, यह मेरी नाक भी नहीं है । जो-जो कुछ है, वह अब वह नहीं है ।

संबै० : शांत ! अपनी बेवकूफी का जोश कहीं और जाकर निकाल लो । हम दोनों एक दूसरे को बिल्कुल नहीं जानते ।

विदू० : बेवकूफी का जोश ! जरूर किसी बड़े आदमी के मुँह से सुन कर रटी हुई बात है और अब एक विदूषक पर लागू की गई है ! ऐसा लगता है यह दुनिया अब एक मगरूर इंसान की शक्ल में बदल जायेगी । बस, चलो नौजवान, अब बनना छोड़ो और मुझे यह बताओ कि मैं काउण्टेस को क्या जवाब दूँ ! कह दूँ तुम आओगे ?

संबै० : अरे मैं कहता हूँ जाओ ! अच्छा यह पैसे ले लो उल्लूदास !

मुझे छोड़ो ! मगर अब रुके तो समझ लो मुझसे बुरा कोई न होगा ।

विदू० : कसम से, बड़े दरियादिल हैं आप तो ! अगर अकलमंद लोग इसी तरह हम लोगों को अरसे तक देते रहते हैं तो बड़ा अच्छा नाम कमा लेते हैं ।

[सर ऐन्ड्रू का प्रवेश]

सर ऐ० : अच्छा आप फिर मिल गये । लीजिये, यही आपके लिये ठीक है ।

[संबैस्टियन को मारता है ।]

संबै० : अच्छा, और तुम्हारे लिये यह है, लो, और लो, और लो..... क्या सबके सब पागल है ?

[ऐन्ड्रू को मारता है ।]

[सर टोबी और फेबियन का प्रवेश]

सर टोबी : ठहर जाओ, वर्ना मैं तुम्हारा शस्त्र छीन लूंगा ।

विदू० : मैं अभी मालकिन से सीधे जाकर सब कहता हूँ । वह सुन लेंगी तो मैं किसी कीमत पर भी आप लोगों के साथ नहीं रह सकूंगा ।

[प्रस्थान]

सर टोबी : रुकिये जनाब ! रुक जाइये ।

सर ऐ० : छोड़ दो उसे, सर टोबी, बीच में न आओ । मैं दूसरी तरह से इससे बदला निकाल लूंगा । इसने हमला किया है, मैं इसे कचहरी में खींचूंगा, अगर इलिरिया में कोई कानून भी है तो देख लूंगा । इससे क्या होता है कि मैंने इस पर पहले हमला किया था ।

संबै० : अरे हाथ छोड़ो ।

सर टो० : छोड़ना कैसा ! तलवार म्यान में करो । काफी चला ली ।

भीतर-भीतर !

सैबै० : अरे तो क्या मैं छुड़ा न पाऊँगा । (छूट जाता है ।) बोलो अब क्या करोगे ? और मत बोलना, कसम से वर्ना, तुम भी तलवार खींच लो ।

सर टो० : क्या कहा ! तब तो मुझे तुम्हारा तोला दो तोला गर्म-गर्म खून बहाना ही पड़ेगा ।

[तलवार खींचता है ।]

[ओलीविया का प्रवेश]

ओली० : रोक दो । टोबी ! मैं आज्ञा देती हूँ । अगर जान प्यारी है तो रुक जाओ !

सर टो० : श्रीमती ?

ओली० : तुम्हारी यह हालत ! ओ कृतघ्न अधम ! तुम तो जंगलों और पहाड़ों में रहने योग्य बर्बर हो जहाँ सब ही असभ्य होते हैं । निकल जाओ मेरी आँखों के सामने से ! प्रिय सिज़ै-रियो ! बुरा न मान जाना । चले जाओ, हुश ! तुम लोग !

[सर टोबी, सर ऐन्ड्रू और फेबियन का प्रस्थान]

ओली० : प्रिय मित्र, शांत हो जाओ । विवेक से ही क्षमा कर दो । अपना भावावेश त्याग दो, यह क्रूर और असभ्य व्यवहार भूल जाओ । मेरे साथ मेरे घर में चलो और तुम्हें मैं बताऊँगी कि यह लुच्चा किस तरह हरामखोरी करता हुआ रोज़ नई परेशानियाँ और भगड़े खड़े किया करता है ! तुम्हें तो सुनकर हँसी आ जायेगी । चलो न ? मना मत करो । लानत है उसकी रूह को ! मुझे क्या कम बुरा लगा है ? तुम पर हमला नहीं, मेरे दिल पर हुआ है ।

सैबै० : इसका मतलब ! क्या हो रहा है ये ! क्या मेरी अकल खराब

हो गई है, या मैं सुपना देख रहा हूँ ? या मेरी कल्पना का साम्राज्य छा गया है, मेरा तर्क कहाँ गया ? यदि यह स्वप्न है तो इसमें से कभी भी न जागूँ ।

ओली० : आओ न ? मैं विनती करती हूँ । काश तुम मेरी बात मान लेते ।

संबे० : मानूँगा श्रीमती ।

ओली० : आह ! फिर कहो, सच यही होगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[ओलीविया के घर का कमरा]

[मेरिया और विद्वषक का प्रवेश]

मेरिया : देखो, जल्दी से यह चोगा पहन कर यह दाढ़ी लगा लो । उसे यह विश्वास दिलाओ कि पादरी सर टोपाज़ हो । जल्दी करो । मैं सर टोबी को बुला लाती हूँ ।

विद्व० : मैं पहनता हूँ और इस दौरान मैं अपना पार्ट भी दुहरा लेता हूँ । मुझे यकीन है कि मुझसे पहले कितने ही लोग जिन्होंने चोगे पहने हैं, ऐसे ही दुरंगे लोग रहे हैं । काश मैं ज़रा और लम्बा होता तो इस पद के उपयुक्त होता और ज़रा और दुबला होता, तो एक अध्ययनशील पादरी मालूम देता । जो हो, अरे सच्चा और अतिथिसत्कार करने वाला व्यक्ति भी एक विद्वान जैसा ही समझा जाता है । लो सारे षड्यंत्रकारी आ पहुँचे ।

[सर टोबी और मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : श्रीमान् पादरी साहब ! ईश्वर आपकी रक्षा करे ।

विद्व० : नमस्कार सर टोबी ! आप ठीक कहते हैं, मैं अब श्रीमान

पादरी साहब ही हूँ, जैसे प्राहा नगर के साधू ने जिसने कभी कलम और दावात तक नहीं छुई थी, राजा गोरबोडुक की भतीजी से बड़ी चतुरता से कहा : “अब जो कुछ भी हो, जो है, सो है।” तो मैं भी हो गया पादरी साहब, जी हाँ पादरी साहब ! क्योंकि जो है न ? वह है, सो, वह जब है, तो है।

सर टो० : सर टोपाज ! चलिये उससे बातें तो करिये।

बिदू० : अरे ! कौन बंद है यहाँ। भगवान उसको शांति दे !

सर टो० : यह बदमाश तो खूब अभिनय करता है। कमाल का बदमाश है।

मालबोलियो : (भीतर से) कौन है ?

बिदू० : सर टोपाज, पादरी, जो पागल मालबोलियो से मिलने आया है।

माल० : सर टोपाज ! सर टोपाज ! हे श्रेष्ठ सर टोपाज ! मेरी श्रीमती को खबर दे दो !

बिदू० : ओ भयानक शैतान ! इस पर से निकल ! तू इसे कैसे सता रहा है। उतर रे भूत ! उतर ! तुझे स्त्रियों के सिवाय बात करने को कुछ सूझता ही नहीं ?

सर टो० : ठीक कहा पादरी साहब !

माल० : सर टोपाज ! कभी भी इंसान के साथ ऐसा जुल्म नहीं हुआ। हे श्रेष्ठ सर टोपाज ! मुझे पागल मत समझिये। इन्होंने मुझे इस जघन्य अंधकार में डाल दिया है।

बिदू० : निकल, निकल, बेईमान, शैतान ! उतर इसके सिर से। मैं दयालु व्यक्ति हूँ तभी तुझे दुर्वचन नहीं कहता। तू इस जगह को अंधेरे से स्याह कहता है ?

माल० : सर टोपाज ! यह तो नरक है नरक !

बिदू० : अरे इसकी ऊपरी खिड़कियाँ तो मुझे किसी किले की दीवार-

सी दीख रही हैं। चमकदार आबनूस की लकड़ी-सी उत्तर और दक्षिण की खिड़कियाँ उजालेदार हैं, और फिर भी तू कहता है कुछ नहीं दीखता।

माल० : मैं पागल नहीं हूँ सर टोपाज ! मैं कहता हूँ यहाँ बड़ा अँधेरा है।

बिदू० : पागल ! तू भूल करता है। अज्ञान के अतिरिक्त यहाँ कोई अंधकार नहीं। जैसे मिस्त्री लोग कुहरे में ढँके रहते थे, तू उस अंधकार में डूबा हुआ है।

माल० : यह घर अज्ञान की भाँति अंधकारमय है, और अज्ञान नरक का-सा काला है। मैं कहता हूँ कि शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसे इतना सताया गया हो और बेवजह ! जितने तुम ठीक हो, उतना ही मैं भी हूँ। मैं पागल नहीं हूँ मुझसे कोई भी सवाल पूछ कर मेरा इम्तहान ले लो।

बिदू० : बताओ जंगली फाल्ता के बारे में ग्रीक दार्शनिक पाइथागोरस का क्या मत था !

माल० : उसका यह मत था कि बहुत संभव हमारे पूर्वजों की आत्माएँ उनमें रहती थीं।

बिदू० : और तुम्हारी इस बारे में क्या राय है ?

माल० : मैं इस पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता, मैं तो आत्मा के विषय में ऊँची धारणा रखता हूँ।

बिदू० : तब तो तुम्हें नमस्कार ! मैं तुम्हें तब तक पागल ही मानूँगा जब तक तुम उस दार्शनिक से सहमत नहीं हो जाते, और जंगली फाल्ता आने में इस डर से नहीं रुक जाते कहीं तुम्हारी दादी न मर जाये। बिदा।

माल० : पादरी साहब ! पादरी साहब !

सर टो० : कमाल के पादरी हैं !

विदू० : ओह ! मैं तो चाहे कोई पार्ट कर सकता हूँ ।

मेरिया : इसके लिये तो तुम्हें वेश बनाने की भी जरूरत नहीं थी ।

वह तुम्हें देख थोड़े ही सकता है ।

सर टो० : अब अपनी असली आवाज़ में उससे बातें करो और इस मुलाकात का नतीजा मुझे बताओ । अब तो इस कारगुजारी का किसी तरह ठीक से अंत हो जाये तो ही भला, इसे किसी ढंग से निकालो यहाँ से, तभी बचत है, हाँ, पर हाथ-पाँव बचाकर ही । काउण्टेस वैसे ही मुझसे बहुत नाराज़ हो गई है और अब माल-वालियो को सताने का काम छोड़ो ! मेरे कमरे में आकर सब बताना !

[सर टोबी और मेरिया का प्रस्थान]

विदू० : (गान)

रोबिन ! मेरे रोबिन ! दिल खुश रोबिन !

तेरी प्रिया के हैं क्या हाल ?

माल० : विदूषक !

विदू० : (गान) ऐ हो, वह तो निष्ठुर बड़ी कठोर है.....

माल० : विदूषक !

विदू० : (गान) ऐसा क्यों है कहो मलाल ?

माल० : विदूषक ! अरे सुनते हो !

विदू० : (गान) किसी और से करती हैं वह प्यार अरे.....

हैं ! किसने बुलाया मुझे ?

माल० : अच्छे विदूषक ! मुझे कुछ लिखने का सामान ला दो, मैं तुम्हें इनाम दूंगा । इस काम को कर दो, मैं कसम खाता हूँ, तुम्हारे काम आऊँगा !

विदू० : कौन ? कारिन्दा साहब !

माल० : हाँ मेरे दयालु विदूषक !

विदू० : अरे ! आप पागल कैसे हो गये ?

माल० : विदूषक ! मुझ जैसी ज्यादाती तो कभी किसी पर नहीं हुई होगी । विदूषक ! जैसे तुम पागल नहीं हो, मैं भी नहीं हूँ ।

विदू० : सोच कर बोलो भाई ! अगर तुम विदूषक की-सी बुद्धि वाले हो तो मूर्ख हो, यानी कि पागल हो !

माल० : उन्होंने मुझे सामान को तरह बंद कर दिया है । यहाँ बड़ा अँधेरा है, वे पादरियों को भेजते हैं, गधे कहीं के ! और सारी ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि मैं पागल हो जाऊँ ।

विदू० : क्या कहते हो सोच कर बोलो ! लो पादरी साहब आ गये ।
(स्वर बदल कर) मालवोलियो ! मालवोलियो ! ईश्वर तुम्हारी बुद्धि को ठीक करे । सोने का प्रयत्न करो और यह बेकार की बकबक बंद करो ।

माल० : सर टोपाज़ !

विदू० : ऐ भले आदमी इससे बातें मत करो । (अपने स्वर में) कौन, श्रीमान मैं ? नहीं श्रीमान ! कभी नहीं । भगवान आपके साथ है पादरी साहब ! सर टोपाज़ आप धन्य हैं । (स्वर बदल कर) ऐसा ही हो ! आमीन ! (अपने स्वर में) हाँ श्रीमान् ! वही करूँगा । जैसी आज्ञा ! जैसी आज्ञा ।

माल० : ओ विदूषक ! विदूषक ! अरे विदूषक !

विदू० : ठहरिये सा'ब । ज़रा धीरज धरिये । अब कहिये ! मैं आपसे बोलता हूँ तो मुझे डाँट लगती है ।

माल० : प्यारे विदूषक ! मुझे ज़रा रोशनी और कागज़ तो ला दो ! मैं कहता हूँ, मैं उतना ही ठीक हूँ जितना इलिरिया का कोई भी आदमी ।

विदू० : मैं भी चाहता हूँ ऐसा ही जल्दी से हो जाये ।

माल० : कसम से मैं ठीक हूँ । मुझे स्याही, कागज़ और रोशनी ला दो अच्छे विदूषक ! जो मैं लिख कर दूँ वह श्रीमती को ले जा कर देना । ऐसा लाभ तुम्हें किसी पत्र को पहुँचा कर न हुआ होगा, जो इससे होगा ।

विदू० : अच्छी बात है, मैं मदद करूँगा । पर मुझे यह बता दो ठीक से कि तुम सचमुच पागल हो या बन रहे हो ?

माल० : मैं न हूँ, न बन रहा हूँ, कसम खाता हूँ, मेरा भरोसा करो ।

विदू० : पागल की बात का क्या भरोसा ! लेकिन मैं वह लाता हूँ जो तुम चाहते हो ।

माल० : तुम्हें इसका बड़ा इनाम मिलेगा । जल्दी करो ।

विदू० : [गीत]

चला चला सरकार, गया मैं गया गया,
अभी अभी मैं लौट यहीं पर आऊँगा,
जैसे नाटक' में आता था पाप सदा,
वैसे ही मैं लौट लौट कर आऊँगा ।
हिम्मत रखना, जैसे पाप खड्ग लेकर,
करता था हमला बढ़कर शैतान पर,
भर गुस्से से, भर द्वेषों से जोशीला—
लौटा करता था फिर कन्नी काटकर.....

[प्रस्थान]

१. शेक्सपियर के पहले मिरॅकिल प्ले होते थे । यह रूपक होते थे, जैसे हिन्दी में 'प्रबोध चंद्रोदय' हैं । इसमें पात्र होते थे, सज्जनता, पाप, शैतान, क्रोध आदि । यहाँ ऐसे ही एक तत्कालीन प्रसिद्ध रचना का हवाला दिया गया है ।

दृश्य ३

[ओलीविया का उपवन]

[सैबेस्टियन का प्रवेश]

सैबेस्टियन : यह है वायु, वह है उज्ज्वल सूर्य । यदि यह मेरी पहुँचान ठीक है, तो यह भी सत्य है कि उसने मुझे यह देदीप्यमान रत्न भेंट किया । यह मेरे हाथ में है, मैं इसे छू रहा हूँ । मैं इसे देख रहा हूँ । नहीं, मैं पागल नहीं हूँ । किन्तु आश्चर्य ने मुझे विह्वल कर दिया है । मैंने एन्टोनियो को सराय हाथी में देखा लेकिन वह मुझे नहीं मिला । वह वहाँ गया ज़रूर था और उन्होंने यह भी बताया कि वह मुझे ढूँढने शहर चला गया था । उसकी सलाह की मुझे इस वक्त कितनी ज़्यादा ज़रूरत थी ! क्या करूँ, किस पर भरोसा करूँ ! मेरा विवेक और जो कुछ मैं देख रहा हूँ इनमें कोई पटरी ही नहीं बैठ रही है । मेरी अकल कहती है कि इस सबमें कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है । मैंने तो अपनी बुद्धि नहीं खोई है, फिर भी सब कितनी अनहोनी है, और जो मैंने आज तक इस दुनिया में देखा-समझा है, सचमुच जो यहाँ देखा है, वह ऐसा असम्भव-सा लगता है, कि मुझे स्वयं ही उस पर विश्वास नहीं होता । अब तो मैं ऐसी परिस्थिति में पड़ गया हूँ कि जो कुछ हो चुका है, उसके लिये कहूँ कि यह हुआ ही नहीं । या तो मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है, या उस स्त्री का । लेकिन वह पागल होती, तो क्या ऐसे घर-बार चला लेती ! नौकरों पर हुकूमत कर लेती ! सूचनाएँ पाकर जवाब देती और सबको काम में लगाये रहती ! और वह भी किस धीरज, शांति, बुद्धिमानी और आत्मविश्वास से किया था सब उसने मेरी उपस्थिति में ? समझ में नहीं आता ? लो काउण्टेस ही आ रही है ।

[ओलीविया और एक पादरी का प्रवेश]

ओली० : मेरी जल्दबाजी का बुरा न मानना । यदि जो कुछ तुमने कहा है, वह सत्य है तो पास के गिरजे में मेरे और पादरी साहब के साथ चलो, और इनकी मौजूदगी में उस पवित्र स्थान में अपना वचन दो, मुझसे प्रतिज्ञा करो ताकि मेरे मन का शक और डर दूर हो जाय और शांति से वह तुम्हारी बात की सचाई को मानकर ढाँढस पाये । जब तक तुम चाहोगे, हमारी सगाई गुप्त रहेगी और जब तुम चाहो विवाह की घोषणा करके आनन्द मनाना, ऐसा जो मेरे सम्मान के अनुकूल हो । सहमत हो ?

सैबै० : मैं तैयार हूँ । मैं तुम्हारे और इनके साथ चलता हूँ । जो वचन मैंने दिया है, उसके प्रति मैं सदैव दृढप्रतिज्ञ रहूँगा ।

ओली० : आदरणीय पादरी साहब ! हमें रास्ता दिखायें, ईश्वर हमारे इस कार्य से प्रसन्न हो ।

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[ओलीविया के घर के सामने]

[विदूषक और फेबियन का प्रवेश]

फेबि० : अच्छा, अगर तुम्हें मुझसे प्रेम है, तो उसका पत्र दिखा दो।

विदू० : मेरे अच्छे दोस्त ! मेरी भी एक प्रार्थना मानोगे ?

फेबि० : मानता हूँ। जो कहो।

विदू० : तो इस पत्र को देखने की इच्छा न करो।

फेबि० : यह तो कुत्ता देकर, उसी को फिर माँग लेना हुआ।

[ड्यूक, बायोला, क्यूरियो और लार्ड लोगों का प्रवेश]

ड्यूक : क्या तुम श्रीमती ओलीविया के अनुचर हो !

विदू० : जी हाँ श्रीमन्त ! हमें उन्हीं की संपत्ति समझिए।

ड्यूक : तुम्हारा चेहरा मुझे पहँचाना-सा लगता है। क्या हाल है तुम्हारे !

विदू० : जी दुश्मनों को भले, दोस्तों को बुरे।

ड्यूक० : उल्टी बात कह गये शलती से। दोस्तों को भले कहो।

विदू० : जी नहीं मेरा मतलब वही है जो मैंने कहा।

ड्यूक० : समझाओ ?

विदू० : श्रीमन्त सुनिये ! मेरे दोस्त मेरी खुशामद करते हैं। और इस तरह मुझे बेवकूफी करने में बढावा देते हैं। अच्छा। मेरे दुश्मन मेरी प्रगट रूप से नुकताचीनी करते हैं और कहते हैं कि मैं बेवकूफ हूँ, मुझे उनसे अपना सुधार करने की प्रेरणा

मिलती है। दोस्तों से होता है नुकसान, दुश्मनों से फायदा। जैसे दो होते हैं तभी चुम्बन लिया जा सकता है, उसी तरह दो अभावात्मकों के मिलन से एक भावात्मक जो बनता है, यानी कि हुआ यह कि मुझे दोस्तों की बजाय दुश्मनों से ज्यादा फायदा होता है।

ड्यूक : शाबाश !

विदू० : नहीं श्रीमान् ! ऐसा कहना उचित नहीं, आप तो मेरी मित्रता में ऐसे कहते हैं।

ड्यूक : तुम मेरे लिये बुरे साबित न होगे। यह लो.....

[धन देता है।]

विदू० : अगर मैं आपको शलत सलाह नहीं देता तो आपको अपना काम दुहराना चाहिये।

ड्यूक : यह तो बात ठीक नहीं लगती।

विदू० : श्रीमान्, जब मैं बटुआ रख लीजिये और हाथ को उसका पीछा करने दीजिये।

ड्यूक : अच्छी बात है, फिर दुतरफ़ा चाल का कुसूर मैं किये लेता हूँ। यह लो...

[फिर धन देता है।]

विदू० : एक, दो, तीन तो बड़ा अच्छा खेल है। पुरानी कहावत है कि, तेली की तीन बार ! श्रीमान् संगीत में भी तीसरी टेक की गत ही क्या कमाल करती है। श्रीमान् ने गिरजे के घंटे सुने होंगे जो याद दिलाते हैं—एक-दो-तीन !

ड्यूक : नहीं ! एक खेल में तीन बार नहीं काट सकते। फिर और ज्यादा ही मिलेगा अगर तुम काउण्टेस से जाकर कहो कि मैं उनसे मिलने आया हूँ, और अगर उन्हें तुम ले आये कि वह मुझसे बात करें तब ही।

विदू० : श्रीमान् की दयावृत्ति मेरे लौटने तक सोई रहे। मैं आपका काम करूँगा, पर यह न समझें कि और इनाम पाने की खातिर मैंने ऐसा किया है। पर उसे सुलाये रखें, क्योंकि उसे मैं ही जगाऊँगा आ कर।

[प्रस्थान]

वायोला : लीजिये श्रीमान् ! वह आदमी आ रहा है जिसने मुझे बचाया था।

[अफ़सरों के साथ एन्टोनियो का प्रवेश]

ड्यूक : यह चेहरा तो मुझे पहुँचाना-सा लगता है। हाँ, मैंने इसे आखिरी बार जब देखा था तब यह लड़ाई के धुँए से ऐसा काला हो रहा था जैसे देवताओं के लुहार वल्कन का मुँह हो ! यह एक बहुत छोटे जहाज़ का कप्तान था, मगर उस ज़रा-सी चीज के बल पर ही इसने ऐसा जबर्दस्त हमला किया और हमारे बेड़े के सबसे अच्छे जहाज़ को तोड़ दिया, यहाँ तक कि उस चोट से नुकसान उठाने वाले भी 'वाह-वाह' कहे बिना न रह सके ! अब क्या बात हुई ?

पहला अफ़सर : ऑरसिनो ! यह वही एन्टोनियो है जिसने फीनिक्स जहाज़ और उसका माल कैन्डी ने छीना था। जब आपके तरुण भतीजे टाइटस का पाँव कट गया था तब टाइगर जहाज़ को इसी ने किनारे पर सफलता से पहुँचाया था। इसे हमने शहर में भगड़ा करते पकड़ा है। अब इसके पास कुछ नहीं है और बड़ी बुरी हालत में है।

वायोला : श्रीमान् ! इसने मुझ पर दया की थी, मेरी ओर से तलवार खींचकर खड़ा हुआ था, पर बाद में इसने मुझसे जाने क्या कहा कि मैं समझ न सका। मुझे लगा धक्का था परेशानी का,

दिमाग शायद चल गया था।

ड्यूक : सचमुच यह तो तुम्हारा बिल्कुल विवेकहीन कार्य ही कहा जायेगा कि तुम जो एक प्रसिद्ध समुद्री डाकू और नामी लुटेरे हो, हमारी पकड़ के भीतर आने की हिम्मत कर गये, जो तुम्हारे दुश्मन हो चुके हैं, क्योंकि तुमने हमें जान और माल का नुकसान पहुँचाया है ?

एन्टो० : श्रीमंत ऑरसिनो ! प्रसन्न होइये कि मैं आपके दिये नामों को स्वीकार नहीं करता, न एन्टोनिया कभी चोर था, न समुद्री-डाकू। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं आपका शत्रु था, परन्तु अकारण नहीं। मैं यहाँ क्यों हूँ ? क्योंकि मैं युवक से अलग नहीं रह सका जो आपके पास खड़ा है। हालाँकि इसके हृदय में मेरे प्रति तनिक भी कृतज्ञता नहीं है। मैंने इसे भीषण समुद्र में बचाया, जब यह मर रहा था, निराश होकर डूब रहा था। मैंने इसे फिर जीवन दिया और अपना प्रेम दिया, प्रेम कि जिसकी सीमा नहीं। इसी के स्नेह के कारण मैं इस शत्रु नगरी में भी आते नहीं डरा। मैं इससे फिर मिला जब इसे शत्रुओं ने घेर रखा था, इस पर हमला कर रहे थे। मैंने तलवार खींच ली और मुझे प्रसन्नता है कि मैंने इसकी रक्षा की। तभी मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और यह युवक कायर और धोखेबाज ! इसने मुझे पहँचानने से इन्कार कर दिया कि कहीं इसे भी मेरी मुसीबत का हिस्सेदार न बनना पड़ जाये ? डरपोक मेरे लिये अजनबी बन गया। ज़रा-सी मुसीबत ने इस पुरानी मुहब्बत को ऐसा तोड़ दिया ! पलक मारते पलट गया। अरे मेरा धन ले रखा था, उससे भी मुकर गया। और घंटा भर भी न हुआ जब मैंने इसे बटुआ दिया था।

चायोला : यह कैसे हो सकता है ?

ड्यूक : यह इस शहर में कब आया ?

एन्टो० : आज ही श्रीमंत ! पूरे तीन महीने निकल गये, क्षण भर भी मैं इससे दूर न हुआ, रात-दिन का साथ था ।

[ओलोविया और सेवकों का प्रवेश]

ड्यूक : काउण्टेस आ रही हैं । पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आया है । मगर तुम्हारी कहानी पागल की बकवास है । तीन महीने से यह जवान मेरे पास है, इसके बारे में फिर बातें करेंगे । अफ़सरो ! इस कैदी को इस वक्त किनारे खड़ा करो ।

ओली० : श्रीमंत की मैं क्या सेवा करूँ ? ओलोविया के पास सिवाय उसके कि जो वह पहले अस्वीकार कर चुकी है, बाकी कुछ भी आपकी सेवा में अर्पण नहीं है । सिज़ैरियो ! तुमने मुझसे अपना वचन नहीं निबाहा ?

वायोला : श्रीमती !

ड्यूक : सुंदरी.....

ओली० : हाँ सिज़ैरियो ! ड्यूक । हाँ श्रीमान्...

वायोला : ड्यूक बोल रहे हैं । जब तक वे कह न चुकें तब तक मेरे लिये चुप रहना ही उचित है ।

ओली० : यदि श्रीमान् उसी पुरानी कहानी को क्रमशः चलाना चाहते हैं तो वह मेरे कानों में ऐसे ही गूँजेगी जैसे मीठा संगीत सुन कर कोई जंगली जानवरों की दहाड़ सुने ।

ड्यूक : क्या तुम अभी भी इतनी कठोर हो ?

ओली० : नहीं श्रीमान् ! मैं पातिव्रत की बात कहती हूँ ।

ड्यूक : पातिव्रत ! ओ दाक्षिण्यहीन स्त्री ! तुम्हारी वेदी पर ही मैंने अपनी समस्त आराधना और प्रेम न्यौछावर किया था ! तुमने कभी मेरी बात नहीं मानी ! हाय ! अब मैं क्या करूँ ?

श्रीली० : श्रीमान् जो चाहें करें, पर वह हो आपके पद और स्थान के गौरव के अनुरूप ही ।

ड्यूक : क्या है जो मेरे प्रेम के केन्द्र को मेरे हाथों से नष्ट होने से बचा सकता है, ताकि कोई दूसरा उसे न पा सके, जैसा उस मित्र के डाकू ने मरते समय किया था । यह एक बर्बर, वहशी और ईर्ष्या भरा प्रेम है, नहीं, किन्तु इसमें एक उदात्त भाव भी है । जो हो । मैं कहता हूँ कि जब तुम मेरे प्रेम को ठुकराती हो, मेरे स्नेह को स्वीकार नहीं करतीं, तो पाषाणहृदया ही बनी रहो और क्योंकि मैं जान गया हूँ कि किसने तुम्हारा वह हृदय छीना है, जो मेरा होना चाहिये था, मैं अब इसका ध्यान रखूंगा कि वह अब तुम्हारे पास तुम्हें सुख देने नहीं आ सकेगा, जिसे तुम देखकर प्रफुल्लित होती हो ! वह अपने स्वामी के ही हित का घातक नहीं बनेगा । मैं स्वयं उसे बहुत चाहता हूँ, वह मेरे साथ जायेगा । आओ सिजैरिओ ! मैं इस निष्ठुर स्त्री से प्रतिशोध लेने पर तुल गया हूँ और मैं अपने ही प्यारे मेमने की बलि दूंगा, ताकि यह जो सुन्दर चिड़िया भीतर एक गिद्ध का दिल छिपाये हुए है, तड़प-तड़प उठे ।

[चलता है ।]

बायोला : और श्रीमान् ! आपके सुख के लिये मैं अत्यंत प्रसन्नता, तत्परता और स्वीकृति से, आपका हूँ, हजार बार मर सकता हूँ आप के लिये ।

[पीछे चलती है ।]

श्रीली० : सिजैरिओ ! कहाँ जाते हो ?

बायोला : उसके पीछे जिससे मुझे प्रेम है, जिसे मैं अपनी आँखों से भी ज्यादा चाहता हूँ । उसकी तुलना मैं मैं हजार पत्नियों को नहीं

चाह सकता। यदि मैंने झूठ कहा है, तो अरे स्वर्ग के साक्षी देव-
ताओ ! मुझे दण्ड दो, कष्ट दो कि मैंने अपने प्रेम के बारे में
झूठ कहा !

ओली० : हाय मुझे धोखा दिया गया ! मैं कितनी निरीह और घृणित
हो गई !

वायोला : तुम्हें किसने धोखा दिया ? किसने तुम्हें सताया !

ओली० : क्या तुम भूल गये ? क्या वह बहुत पुरानी बातें हैं ? क्या
पादरी साहब को बुलवाऊँ ?

ड्यूक : (वायोला से) चलो, चलो !

ओली० : कहाँ श्रीमान् ! सिज़ैरिओ ! मेरे पति ! ठहरो मत जाओ !

ड्यूक : पति !

ओली० : हाँ पति ! क्या यह अस्वीकार करेंगे ?

ड्यूक : पति ! ऐं ! क्यों जी ?

वायोला : नहीं श्रीमान् ! यह झूठ है। मैं नहीं हो सकता।

ओली० : हाय ! मालिक की अप्रसन्नता के भय से तुम अपना सत्य भी
गँवा बैठे ! पर डरो मत ! अपने भाग्य को साहस से पकड़ो
और अपनी वस्तुस्थिति को स्वीकार करो। तुम जिससे डर रहे
हो, अब तुम उसके बराबर के दर्जे के हो गये हो !

[पादरी का प्रवेश]

आह ! श्रेष्ठ पादरी ! आप भी कैसे मौके से आ पहुँचे ! बताइये
मैं प्रार्थना करती हूँ, जो अभी हाल में हुआ, यह तरुण और मैं,
क्या है, क्या उसे कुछ समय गुप्त रखने की बात तय नहीं हुई थी,
पर क्या करूँ घटनाओं ने ही इसे इतनी शीघ्र प्रगट करने को
विवश कर दिया।

पादरी : वह एक अखंड प्रेम की प्रतिज्ञा थी, जो मेरे सामने इन दोनों

ने की थी। मैंने आवश्यक संस्कार भी पूर्ण कर दिये थे और हाथ मिलवाये थे, इन्होंने पवित्र चुम्बन लिया था, अँगूठियाँ बदली थीं। यह मैंने अपने पवित्र पद से सब कराया था, मैं इसका साक्षी हूँ। और यह सब हुए अभी दो घंटे भी नहीं हुए हैं।

ड्यूक : ओ भूँटे, मक्कार, दगाबाज़ ! अगर तू इस कमसिनी में ऐसा है तो बड़ा होकर तो न जाने कितना बदमाश बनेगा ! वह तो तुझे ज़रूर बरबाद कर देगी ! ले अब अपनी दुल्हन को सँभाल, पर खबरदार आयंदा मेरे सामने कभी न आना।

वायोला : श्रीमान् ! मैं विरोध करता हूँ...

ओली० : नहीं। कसम मत खाओ। सच से डरो। इतना भी क्या डरना ?

[सर ऐन्ड्रू का प्रवेश]

सर ऐ० : भगवान के लिये ! डाक्टर ! सर टोबी के लिये एक डाक्टर भेजिये !

ओली० : क्यों क्या हुआ ?

सर ऐ० : मेरा सिर फट गया है, सर टोबी का भी। बचाइये। भगवान के लिये। काश मैं अपने घर पहुँच सकता, चाहे जो भी खर्च हो जाये...

ओली० : तुम्हारा सिर किसने तोड़ दिया ?

सर ऐ० : तरुण सिज़ैरिओ ने ! वह जो ड्यूक ऑरसिनो की सेवा में रहता है। हम समझे थे वह हमसे डरेगा, पर वह तो खतरनाक शैतान निकला।

ड्यूक : सिज़ैरिओ ? मेरा सेवक !

सर ऐ० : हे भगवान् ! वह खड़ा तो है। अच्छा। तुमने बिना मेरे कुछ कहे मुझे घायल किया, और जो मैंने किया, वह सर टोबी के ही कहने से तो किया था।

वायोला : यह सब मुझसे क्यों कहते हो ? मैंने कुछ नहीं किया । तुमने जरूर मुझ पर तलवार खींची थी । मैंने तो हल्का-सा जवाब दिया था, तुम्हें घायल मैंने कब किया था ?

सर ऐ० : नहीं, तुमने किया । अगर लहू निकालना घायल करना है, तो देखो । अरे तुम्हें तो यह बड़ी मामूली बात-सी लगती है । यह लो सर टोबी भी लँगड़ाते हुए आ रहे हैं । वह तो तुम्हें याद दिला देते, जो वे नशे में न होते, अभी तो फिर देखा जायेगा ।

[सर टोबी और विदूषक का प्रवेश]

ड्यूक : अरे भई ! यह क्या मामला है ! बात क्या है ?

सर टो० : कोई बात नहीं । इसने मुझे घायल किया और कोई बात नहीं । कहीं डाक्टर भी है रे विदूषक ?

विदू० : वह बेकार है सर टोबी ? वह तो सबेरे ही नशे में डूबा हुआ था ।

सर टो० : वह लुच्चा है । नशेबाज़, बेवकूफ़ ! हृद के बाहर ! मुझे नशे-बाज़ आदमी पसंद नहीं ।

ओली० : ले जाओ इन्हें । इनका यह हाल किसने किया ?

सर ऐ० : सर टोबी मैं आपकी मदद करूँ, तब हम दोनों के घावों का एक साथ इलाज हो जायेगा ।

सर टो० : तुम मेरी मदद करोगे ! बेवकूफ़ ! बदमाश ! बदशक्ल ! लुच्चे ! मगरूर ! चिड़चिड़े ! मूर्ख !

[विदूषक, फेबियन, सर टोबी और सर ऐन्ड्रू का प्रस्थान]

[संबंस्टियन का प्रवेश]

संबै० : श्रीमती ! मुझे इसका बड़ा दुःख है, कि मैंने ही आपके आदमियों को घायल किया, पर मैं और करता भी क्या ? मेरी इज्जत का सवाल था, और मेरा ही कोई घर का आदमी होता तो भी

मैं यही करता । तुम्हारे चेहरे को देख कर लगता है, तुम मुझसे नाराज हो, पर मुझे माफ़ कर दो, मेरी प्रिये, अभी हमने जो इतनी प्रेम भरी प्रतिज्ञाएँ की हैं, उनकी याद से ही मुझे माफ़ कर दो !

ड्यूक : वही चेहरा, वही रूप, वही कपड़े, वही वेश और वही आवाज़ और फिर भी दो आदमी ! एक के ही दो रूप ! है न यही बात ?

सैबै० : मेरा प्रिय एन्टोनियो भी यहीं है । अरे मेरे दोस्त ! जब से तुमसे बिछोह हुआ है, तब से मैं तुमसे मिलने को कितना बेचैन था !

एन्टो० : यह है सैबैस्टियन !

सैबै० : क्यों क्या तुम्हें शक है ?

एन्टो० : क्या तुमने बिल्कुल अपने जैसा एक और आदमी भी बना डाला है ? देखो ! दोनों जवान बिल्कुल एक-से हैं, ऐसा लगता है एक ही फल काटकर दो हिस्से कर दिये हों ! कौन-सा है सैबैस्टियन !

ओली० : अद्भुत ! नितांत अद्भुत !

सैबैस्टियन : हैं ! यह क्या मैं ही खड़ा हूँ ? यह भाई तो नहीं हो सकता, क्योंकि मेरे भाई हैं ही नहीं । न मुझमें दैवी शक्ति है कि मैं एक से अधिक रूप में एक ही जगह एक ही समय में प्रगट हो सकूँ ! पहले सौभाग्य से एक बहन थी, पर वह तूफ़ानी लहरों में खो गई । (बायोला से) दया करके बताओ, तुम मेरे कौन हो ? किस देश के वासी हो और तुम्हारा क्या नाम है । तुम्हारे पिता कौन हैं ?

बायोला : मैं मेसैलिनी परिवार का हूँ । मेरे पिता का नाम सैबैस्टियन था । मेरे भाई का भी यही नाम था, और ठीक तुम्हारा ही जैसा जवान था जब वह समुद्र की क़ब्र में समा गया । ऐसे ही कपड़े पहने था । यदि मृत व्यक्ति आत्मा बनकर हमारे पास आ सकते

हैं, ठीक जीवित व्यक्ति के रूप और वेश में, तो तुम हमें क्रब्र में से हमें डराने ही आये हो ।

सैबे० : मैं सचमुच आत्मा हूँ, पर इसी पृथ्वी का, यहीं का वासी, यहीं के वेश में, इसीने मुझे जन्म दिया है । किन्तु यदि तुम युवक की जगह युवती होते, तो बाकी सब साक्ष्य ठीक है कि मैं इस सबको ज्यों का त्यों मान लेता और हर्ष के आँसुओं में तुम्हारे गालों को भिगोकर अपनी बहन का स्वागत करता । कहता : “आ वायोला, स्वागत है, तेरा स्वागत है ।”

वायोला : मेरे पिता की भौंह पर एक तिल था ।

सैबे० : मेरे पिता के भी था ।

वायोला : और उनकी बेटी की १३वीं सालगिरह पर उनका स्वर्गवास हुआ था ।

सैबे० : ठीक याद है यह भी । उनकी मृत्यु ठीक मेरी बहन की १३ वीं सालगिरह को हुई थी ।

वायोला : यदि मेरा पुरुष वेश ही अब हमारे पूर्ण आनन्द के अधिकार में बाधा डाल रहा है, तो कुछ देर धैर्य रखो और देखो की सारी घटनाएँ और परिस्थितियाँ ठीक बैठ जाती हैं । इसका प्रमाण प्रस्तुत करने को मैं तुम्हें एक दयालु जहाजी के पास ले चलूँ जिसके यहाँ मैंने अपना स्त्री वेश रखा है । उसने मेरी जान बचाई थी और उसी की मदद से मुझे इस योग्य स्वामी की सेवा करके जीवन निर्वाह करने का अवसर मिला । बाकी जो हुआ है वह सब स्वामी और इन श्रीमती के संबंध की बात है ।

सैबे० : (ओलीबिया से) यह बात है श्रीमती ! तुमको धोखा हो गया । प्रकृति से तो यह सहज ही है कि स्त्री का आकर्षण स्त्री के प्रति हो । यदि यह प्रगट न होता तो तुम तो एक स्त्री से ही विवाह

करना चाहती थीं। तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं हुई। और बीच में मैंने आकर धोखा दे दिया। तुम्हारी तो एक स्त्री और एक पुरुष दोनों से ही सगाई हो गई ?

ड्यूक : चकित-विभ्रान्त न हों श्रीमती ! यह तरुण भी कुलीन है जन्म से। यदि यह जैसा है, सत्य है तो मेरे अरमानों की बरबादी में भी मुझे बड़ी तसल्ली मिली है। (बायोला से) सुंदर युवक ! तुमने मुझसे हजारों बार कहा कि तुममें जो मेरे प्रति प्रेम है वह कभी स्त्री के प्रति नहीं हो सकता।

बायोला : मैं तो हजार बार यही कहूँगी और पूरी सचाई से अपनी बात ऐसे ही निभाऊँगी जैसे यह जगमगाता सूरज दिन और रात का फर्क डाला करता है।

ड्यूक : मुझे अपना हाथ दो। अब स्त्री का वेश धारण करो, मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ।

बायोला : मेरा स्त्रीवेश उस कप्तान के घर है, जिसने मुझे बचाया था। वह किसी कारण से बंदी हो गया है। काउण्टेस के कारिन्दे मालवोलिया के कहने से। उसने उस पर कुछ अभियोग लगाया है।

ओली० : मालवोलियो को बुलाओ ताकि वह उसे छोड़ दे और मुझे याद आता है, मालवोलियो तो पागल हो गया है।

[विदूषक का एक पत्र लिये फेबियन के साथ प्रवेश]

मालवोलियो कैसा है विदूषक ?

विदूषक : श्रीमती ! इन हालतों में जहाँ तक हो सकता है वह शैतान को हाथ भर दूर रख रहा है। उसने आपको एक पत्र लिखा है। मैं इसे आपको सुबह ही दे देता, पर पागल की बात का क्या

विचार करना, इसलिये मैंने इसको पहुँचाना जरूरी नहीं समझा था !

ओली० : अच्छा खोल के पढ़ो ।

विदू० : तो श्रीमती एक मूर्ख के मुँह से एक पागल की बातचीत सुनने को तैयार हो जायें । (पढ़ता है ।) भगवान के लिए, श्रीमती...

ओली० : क्या तुम्हारी अकल बिगड़ गई है ?

विदू० : नहीं श्रीमती ! मैं तो पागलपन पढ़ रहा था, अगर आप जैसा यह है वैसे ही सुनना चाहें तो आपको थोड़ी-सी छूट देनी ही होगी ।

ओली० : कायदे से पढ़ो । ढंग से । होश में ।

विदू० : हाँ श्रीमती, मैं यही तो कह रहा हूँ । लेकिन उसके लिखे भाव को पढ़ने को मुझे वही करना होगा जो मैंने अभी किया, अतः श्रीमती ! ध्यान दें और ज़रा सोचें तो सही ।

ओली० : (फेबियन से) अरे तुम लेकर पढ़ो ।

फेबियन : (पढ़ता है ।) भगवान के लिये, श्रीमती ! आपने मुझसे दुर्व्यवहार किया है, मैं हर एक को सुना-सुना कर कहूँगा । मैं आपकी ही भाँति ठीक हूँ, यद्यपि मुझे नशेबाज़ सर टोबी की देख-रेख में एक अँधेरे कमरे में बंद कर दिया गया है । मेरे पास अब भी आपका वह कागज़ है, जिसमें मुझे वह सब करने को उकसाया, जो मैंने किया है और इसीलिये मैं आपके सामने इस रूप में आया । मैं उस पत्र से प्रमाणित करूँगा कि मैं ठीक हूँ या आप दोषी हूँ । आप मेरे बारे में जो चाहें सोचें, यह शब्द तो आपने जो मुझे सताया है, इसी भाव से प्रेरित हुए है, और मैं आपके प्रति सेवक का व्यवहार छोड़ कर ही इस समय ऐसा व्यवहार कर रहा हूँ । दुर्व्यवहार से पीड़ित—मालबोलियो !

ओली० : यह उसी ने लिखा है ?

विदू० : जी हाँ ।

ड्यूक : इसमें तो कोई पागलपन नहीं भलकता ।

ओली० : फेबियन उसे आज़ाद करो और यहाँ लाओ !

[फेबियन का प्रस्थान]

श्रीमान् ! जो संवाद मैंने अभी सुना है कि मैं अब सैबैस्टियन की पत्नी और वायोला की भाभी हो गई हूँ, और इस नाते आपकी सरहज हूँ, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि हम सब का विवाह एक ही दिन हो, सारी दावत मेरे खर्चे से मेरे इसी घर में हो ।

ड्यूक : मैं बिल्कुल स्वीकार करता हूँ । (वायोला से) अब तुम्हारा स्वामी तुम्हें मुक्त करता है और तुमने जो स्नेह भरे कष्ट उठाये हैं, इतना ध्यान देकर देख-भाल की है, और वह कार्य किया है जो स्त्री के कर्त्तव्य से इतना भिन्न है, और तुम्हारे पद और कोमल स्वभाव के इतना अधिक प्रतिकूल है, मैं कहता हूँ कि तुमने जो मुझे स्वामी मानकर इतने दिन सेवा की है, इसलिये मेरा हाथ पकड़ो अब मैं तुम्हारी मालिकन की तरह सेवा करूँगा ! तुम स्वामी की स्वामिनी होगी ।

ओली० : आखिर मुझे बहन ही-सी मिल गई ! वह भी वही जिसे मैं प्यार करती हूँ ।

[फेबियन तथा मालवोलियो का प्रवेश]

ड्यूक : यही वह पागल है ?

ओली० : हाँ श्रीमान् ! यही है ! क्या बात है मालवोलियो !

माल० श्रीमती ! आपने मुझसे दुर्व्यवहार किया है ! घोर दुर्व्यवहार किया है ।

ओली० : मैंने ? मालवोलियो ! नहीं !

माल० : आपने ही श्रीमती ! देखिये अपना पत्र पढ़िये, अब मत कहिये

कि यह आपका लिखा नहीं है। अगर आप इससे अलग तरह का लिख सकें तो लिखिये ! लिखकर दिखाइये ! कहिये यह आपकी मुहर नहीं है ? अपने सम्मान का ध्यान रख कर कहिये, आपने मुझे इतना क्यों उकसाया ! ऐसा स्नेह क्यों दिखाया ! आपने ही मुझे मुस्काने, आड़ी गेटिसें पहनने, पीले मोजे पहनने को बढ़ावा दिया, आपने ही सर टोबी और निचले तबके के लोगों पर कठोरता करने को कहा और मैंने आपका स्नेह पाने को यह सब किया, फिर आपने मुझे अँधेरे कमरे में क्यों बन्द करा दिया, वहाँ मेरे पास एक पादरी क्यों भेजा जाता था ? मुझे ऐसा बेव-कूफ़ बनाया गया जैसा शायद ही कोई बनाया गया हो ! बताइये क्यों ? मैंने क्या किया ऐसा ?

ओली० : उफ़ ! मालवोलियो ! यह मेरे हाथ की लिखावट नहीं है। हाँ मेरे लेख से मिलती-जुलती जरूर है। निश्चय ही यह मेरिया का लेख है। हाँ याद आया, उसी ने मुझसे पहले पहल कहा था कि तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया था। तब तुम मुस्काते हुए आये, ऐसे ही जैसे इस पत्र में करने को कहा गया है। शांत रहो, धीरज धरो। तुम पर एक चाल खेली गई है, जो बड़ी निर्दय है। इस मामले में पूरी जाँच की जायेगी, और जब पता चलेगा कि यह किसकी कारिस्तानी है, क्यों की गई है, तब मैं तुमसे वादा करती हूँ कि तुम्हारे दुःख को अपना समझ कर ही दोषी को दण्ड दूँगी।

फेबियन : श्रीमती इस आशा में कि भविष्य में हाने वाली अप्रिय घटना की संभावना ही दूर हो जाये, जो निश्चय ही इन सुखद घटनाओं के साथ अप्रासंगिक सिद्ध होगी, क्योंकि हम सब इस समय विस्मय से घिरे हुए हैं, मैं स्वीकार करता हूँ कि मालवो-

लियो पर खेली गई चाल सर टोबी ने और मैंने बनाई थी और यह सिर्फ इसके अभद्र और कटु व्यवहार से बदला लेने के लिये। सर टोबी ने मेरिया से प्रार्थना की, और उसने उन्हें प्रसन्न करने को पत्र लिखा। इसलिये सर टोबी ने उसे पुरस्कार दिया है कि उससे विवाह कर लिया है। और बाकी यह कैसे चली गई, उस कहानी को सुन कर आप लोगों को गुस्सा नहीं, हँसी ही आयेगी। आप भले ही दोनों तरफ़ की बातें सुन लें।

ओली० : उफ़ ! बेचारा ! कैसा बेवकूफ़ बनाया गया है। इन सबने कैसा घेरा है !

विदू० : क्यों ? 'कुछ जन्म से महान होते हैं, कुछ महानता प्राप्त करते हैं और कुछ पर जबरन लाद दी जाती है।' मैं भी इस नाटक के एक विष्कंभक में सर टोपाज़ बना था। पर अब जाने भी दो। 'भगवान् कसम मैं उतना ही ठीक हूँ जितने तुम हो ?' याद है न ? 'श्रीमती ! आप भी इस रूखे-सूखे दिमाग़ के बेवकूफ़ की बातों पर जाने कैसे हँस लेती हैं ! आप न हँसें तो इसमें है क्या ?' और बस समझ लो। समय का चक्र घूमता हुआ ऐसे ही प्रतिशोध लिया करता है।

माल० : मैं तुम सबको इसका बदला चुकाऊँगा।

[प्रस्थान]

ओली० : उसके साथ सचमुच बड़ी ज़्यादती हुई है।

ड्यूक : उसके पीछे जाओ और उसे मना लो। उसने अभी उस कप्तान के बारे में कुछ नहीं बताया ! जब वह भी हो जायेगा और अच्छा समय आयेगा, हमारे प्रेम भरे हृदय सदा के लिये एक हो जायेंगे ! तब तक ओलीविया बहन ! हम तुम्हारे ही घर रहेंगे। मेरे साथ चलो सिज़ैरियो ! तुम अभी अपना यही नाम रखो जब तक

तुम पुरुषवेश में हो । बाद में जब तुम स्त्रीवेश धारण कर लो
तब तुम मेरी प्रिय हो जाना, मेरी रानी ! मेरी कल्पना की
रानी !

[सबका प्रस्थान, केवल विदूषक रह जाता है ।]

विदूषक :

[गीत]

जब मैं प्रिय था रे छोटा शिशु,
छोटा शिशु रे छोटा बालक,
हेई हेई हेई, चला पवन तब,
बरसा रे बादल सुख दायक !
किंतु खिलौनों से मैं खेला,
दिया न दोष किसी ने मुझको !
नित्य बरसता था रे बादल,
नित्य पवन बहता सुख दायक !
किंतु हुआ जब तरुण पुरुष मैं,
बढ़ा काल में चल कर लायक !
हेई हेई हेई, चला पवन तब,
बरसा रे बादल सुख दायक !
गुण्डों चोरों से रक्षा हित,
सबने द्वार बंद कर डाले,
नित्य बरसता था रे बादल,
नित्य पवन बहता सुख दायक !
किंतु व्याह जब मैंने अपना
किया कि मैं भी हूँ, सुख पालक,
हेई हेई हेई, चला पवन तब

बरसा रे बादल सुख दायक,
 आत्म प्रशंसा से मैं तो कोई
 उन्नति अपनी कर न सका रे
 नित्य बरसता था रे बादल
 नित्य पवन बहता सुख दायक !

आई रे जब वृद्धावस्था,
 शैय्या मिली मुझे सुख दायक,
 हेई हेई हेई, चला पवन तब
 बरसा रे बादल सुख दायक,
 मैंने मदिरा ढाल नशे में
 बहलाया इस जी को कितना,
 नित्य बरसता था रे बादल
 नित्य पवन बहता सुख दायक !

बहुत दिनों के पहले सचमुच
 कभी बनी ये दुनिया लायक,
 हेई हेई हेई, चला पवन तब
 बरसा रे बादल सुख दायक,
 पर उससे क्या होता है अब,
 खेल खतम हो गया हमारा,
 हम तो तुम्हें सदा खुश रखना
 अपना काम समझते लायक !

[प्रस्थान]



